राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 गौतम गंभीर की परफेक्ट प्लेइंग 11 से रोहित और बुमराह बाहर ...

हरियाणा विधानसभा चुनाव : सुनीता केजरीवाल ने लोगों को दी पांच ... 12

वर्ष : 12 | अंक : 143 | पटना, मंगलवार,03 सितंबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 26.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना 71,105

चांदी 91,700

सेंसेक्स 78,886

निफ्टी 24,117

संक्षिप्त खबरें

मोदी ने रेड्डी से की बात, तेलंगाना में बाढ़ की स्थिति की ली जानकारी

हैदराबाद। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी से बात की और उनसे राज्य में बाढ़ की स्थिति के बारे में जानकारी ली है। श्री मोदी ने फोन पर हुयी बातचीत के दौरान श्री रेड्डी से राज्य के कई जिलों में भारी बारिश और बाढ़ से हुए नुकसान के बारे में जानकारी ली। श्री रेड्डी ने रविवार रात हुयी बातचीत के दौरान प्रधानमंत्री को राज्य में भारी बारिश और बाढ़ से हुए नुकसान के बारे में जानकारी दी और राज्य सरकार द्वारा व्यवधान को कम करने और जानमाल की क्षति को रोकने के लिए किये गये तत्काल राहत उपायों और बरती गयीं सावधानियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने श्री मोदी को बताया कि भारी बारिश और बाढ़ के कारण सबसे ज्यादा नुकसान खम्मम जिले में हुआ है। वहीं, प्रधानमंत्री ने जनहानि को रोकने के लिए राज्य सरकार के सक्रिय उपायों की सराहना की। एक आधिकारिक बयान में रविवार देर रात कहा गया कि उन्होंने (श्री मोदी) श्री रेड्डी को यह भी आश्वासन दिया कि केंद्र सरकार प्रतिकूल मौसम की स्थिति में राहत कार्यों में सहायता के लिए हेलिकॉप्टरों की तैनाती सहित अन्य आवश्यक सहायता प्रदान करेगी।

वंदे भारत को बम से उड़ाने की धमकी, सुरक्षा बढ़ाई गई

पटना। रेलवे सुरक्षा बल ने वंदे भारत एक्सप्रेस को बम से उड़ाने की धमकी मिलने के बाद बिहार में सुरक्षा बढ़ाते हुए कई राज्यों के पुलिस महानिदेशक को पत्र लिखकर आगाह किया है। वंदे भारत को बम से उड़ाने की धमकी का संदेश एक कर्मचारी के मोबाइल फोन पर आया है। रेलवे सुरक्षा बल ने इस धमकी को गंभीरता से लिया है। खासतौर पर वंदे भारत एक्सप्रेस की निगरानी के पुख्ता इंतजाम किए हैं। किसी ने नार्दर्न फ्रंटियर रेलवे (असम) क्षेत्र में वंदे भारत को बम से उड़ाने की धमकी का मैसेज व्हाट्स ऐप पर एक रेलकर्मी के पास भेजा है। इस कर्मचारी ने तत्काल यह सूचना वरिष्ठ अफसरों को दी। इसके बाद हाजीपुर जोन आरपीएफ के आईजी ने बिहार, झारखंड, भोपाल और उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक को पत्र भेजा है। इसमें धमकी के मद्देनजर सतर्कता बरतने का आदेश जारी किया गया है। रांची की विशेष शाखा ने भी झारखंड के सभी जिलों को पत्र भेजकर सतर्कता व सुरक्षा पर जोर दिया है।

मणिपुर में गोलीबारी में महिला समेत दो की मौत, नौ घायल

इंफाल। मणिपुर के घाटी इलाके में रविवार को संदिग्ध उग्रवादियों द्वारा की गई गोलीबारी में एक महिला समेत दो लोगों की मौत हो गई और एक पुलिस अधिकारी तथा मृतक महिला की नाबालिग बेटी समेत नौ अन्य घायल हो गए। सुरक्षाबलों ने आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। मणिपुर के पुलिस महानिदेशक राजीव सिंह ने बताया कि भारी हथियारों से लैस उग्रवादियों ने पहाड़ी की चोटी से अंधाधुंध गोलीबारी की और इंफाल पश्चिम जिले के अंतर्गत कोब्रुक और पड़ोसी कडांगबंद के निचले घाटी इलाकों में बम भी फेंके। इस गोलीबारी में 31 वर्षीय महिला और एक ग्रामीण की मौत हो गई, जबकि महिला की आठ वर्षीय बेटी और एक पुलिस अधिकारी समेत नौ अन्य लोग घायल हो गए। अधिकारी ने बताया कि संदिग्ध उग्रवादियों के अचानक हमले से तनाव और दहशत फैल गई। इसके कारण महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों समेत कई ग्रामीण सुरक्षित स्थानों पर शरण लेने के लिए भाग गए। मारी गई मैतेई समुदाय की महिला की पहचान नगांगबाम सुरबाला देवी के रूप में हुई।

मुख्यमंत्री ने रोहतास जिले में विभिन्न योजनाओं का किया उद्घाटन, शिलान्यास एवं कार्यारंभ

सभी काम समय पर ठीक ढंग से पूरा हो इसका विशेष रूप से ख्याल रखें : नीतीश

सीएम ने ग्राम पंचायत खेल का मैदान तथा खेल सुविधाओं से संबंधित शिलापट्ट का किया शिलान्यास

प्रात : किरण

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को रोहतास जिले के डेहरी ऑन सोन स्थित एनीकट में जल-जीवन-हरियाली अभियान अंतर्गत औरंगाबाद, डेहरी एवं सासाराम शहरों के लिए पेयजल आपूर्ति योजना के शिलापट्ट का अनावरण कर कार्यारंभ किया। जल संसाधन विभाग के अपर मुख्य सचिव चैतन्य प्रसाद ने नक्शा के माध्यम से मुख्यमंत्री को औरंगाबाद, डेहरी एवं सासाराम में पेयजल आपूर्ति योजना के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। मुख्यमंत्री ने सात निश्चय योजना-2 के तहत राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान डेहरी ऑन सोन में 307.73 लाख रुपये की लागत तथा 272.07 लाख रुपये की लागत से सासाराम में टेक लैब एवं वर्कशॉप के नवनिर्मित भवन के शिलापट्ट का अनावरण कर एवं फीता काटकर उद्घाटन किया। उद्घाटन के पश्चात मुख्यमंत्री ने टेक लैब एवं वर्कशॉप के नवनिर्मित भवन का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के क्रम में मुख्यमंत्री ने लेजर कटर, इलेक्ट्रिक व्हीकल सेक्शन, एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग लैब, रोबोटिक, पेंट बूथ, एडवांस प्लंबिग, इंटरनेट ऑफ थिंग लैब, प्रोडक्ट वेरिफिकेशन, एनालिसिस लैब आदि का मुआयना किया और अधिकारियों से विस्तृत जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने रोहतास जिला अंतर्गत मुफ्फसिल थाना डेहरी में थाना भवन एवं आउट हाउस, क्षेत्रीय विधि विज्ञान प्रयोगशाला, विशेषीकृत इकाइयों के लिए संयुक्त भवन के शिलापट्ट का अनावरण कर शिलान्यास किया। उन्होंने जिले के विभिन्न प्रखंडों में मुख्यमंत्री सोलर स्ट्रीट लाइट योजनान्तर्गत 1,962.82 लाख रुपये की लागत से कुल 6,400 सोलर लाइट योजनाओं, 104.77 लाख रुपये की लागत से नवनिर्मित कुल 13 आंगनबाड़ी केंद्रों एवं 2 जीविका ग्राम संगठन भवनों के शिलापट्ट का अनावरण कर उद्घाटन किया। साथ ही मुख्यमंत्री ने जिले के विभिन्न प्रखंडों में 264 लाख रुपये की लागत से निर्मित होने वाले 66 पुस्तकालयों, 169.18 लाख रुपये की लागत से 17 आंगनबाड़ी केंद्रों, 465 लाख रुपये की लागत से 372 आंगनबाड़ी केंद्रों का जीर्णोद्धार कार्य, 221.76 लाख रुपये की लागत से बुनियादी मध्य विद्यालय बस्तीपुर, भैंसहा, डेहरी का निर्माण कार्य एवं जिले के विभिन्न पंचायतों में 310.32 लाख रुपये की लागत से बनने वाले 21 ग्राम पंचायत खेल का मैदान तथा खेल सुविधाओं से संबंधित शिलापट्ट का अनावरण कर शिलान्यास भी किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी काम समय पर ठीक ढंग से पूर्ण हो, इसका विशेष रूप से ख्याल रखें।

मुख्यमंत्री ने पुस्तकालय एवं पंचायत स्तरीय लोक सेवा केंद्र का किया निरीक्षण: मुख्यमंत्री ने ग्राम पंचायत भैसहा, बस्तीपुर में पुस्तकालय का फीता काटकर उद्घाटन किया। उद्घाटन के पश्चात मुख्यमंत्री ने पुस्तकालय एवं पंचायत स्तरीय लोक सेवा केंद्र भैंसहा का निरीक्षण कर उपलब्ध कराई गई सुविधाओं के संबंध में विस्तृत जानकारी ली। निरीक्षण के क्रम में मुख्यमंत्री ने कहा कि पंचायत स्तरीय लोक सेवा केन्द्र के संचालित होने से लोगों को काफी सहूलियत मिलेगी। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने स्वास्थ्य विभाग, जिला उद्योग केंद्र, जिला परिवहन कार्यालय आदि विभागों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया। प्रदर्शनी अवलोकन के क्रम में मुख्यमंत्री ने बिहार महादलित विकास मिशन योजना अंतर्गत सामुदायिक भवन सह वर्क शेड की चाभी, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कल्याण विभाग अंतर्गत (बिहार महादलित विकास मिशन) नवनियुक्त विकास मित्रों को नियोजन पत्र, मुख्यमंत्री ग्रामीण आवास सहायता योजना अंतर्गत नवनिर्मित आवासों की चाभी, कुशल युवा कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित लाभुकों को प्रमाण पत्र एवं मुख्यमंत्री प्रखंड परिवहन योजना के तहत चयनित लाभुकों को चाभी प्रदान किया। साथ ही मुख्यमंत्री ने सतत जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत 1,035 लाभार्थियों को 2 करोड़ 49 लाख 18 हजार 400 रुपये का चेक एवं 1,864 जीविका स्वयं सहायता समूहों को 74 करोड़ 17 लाख रुपये का चेक जीविका दीदियों को प्रदान किया।

ये रहें मौजूद : इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, जल संसाधन मंत्री विजय कुमार चौधरी, श्रम संसाधन मंत्री संतोष कुमार सिंह, भवन निर्माण मंत्री सह रोहतास जिले के प्रभारी मंत्री जयंत राज, अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री जमा खान, विधायक मुरारी प्रसाद गौतम, पूर्व सांसद महाबली प्रसाद सिंह, पूर्व विधायक वशिष्ठ सिंह, पूर्व अन्य जनप्रतिनिधिगण, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, जल संसाधन विभाग के अपर मुख्य सचिव चैतन्य प्रसाद, जल संसाधन विभाग के प्रधान सचिव श्री संतोष कुमार मल्ल, मुख्यमंत्री के सचिव कुमार रवि, रोहतास के जिलाधिकारी नवीन कुमार, रोहतास के पुलिस अधीक्षक विनीत कुमार सहित अन्य वरीय अधिकारीगण उपस्थित थे।

सदस्यता अभियान आंकड़ों का खेल नहीं, यह वैचारिक और भावनात्मक आंदोलन है: मोदी

पीएम मोदी ने बीजेपी के राष्ट्रीय सदस्यता अभियान-2024 का किया शुभारंभ

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को बीजेपी के राष्ट्रीय सदस्यता अभियान-2024 का शुभारंभ करते हुए कहा कि सदस्यता अभियान आंकड़ों का खेल नहीं, यह वैचारिक और भावनात्मक आंदोलन है। यह सदस्यता अभियान सिर्फ एक रस्म नहीं है, यह हमारे परिवार का विस्तार है, यह संख्याओं का खेल नहीं है। उन्होंने कहा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कितने नंबर हासिल करते हैं। यह सदस्यता अभियान देश को मजबूत बनाने और सामर्थ्य बढ़ाने का अभियान है।

सदस्यता अभियान को एक उत्सव की तरह मनाने की अपील : उन्होंने सदस्यता अभियान को एक उत्सव की तरह मनाने का आग्रह करते हुए कहा कि 18 से 25 वर्ष के युवाओं को टारगेट करके उन्हें भाजपा से जोड़ना चाहिए। भाजपा के कार्यकताओं को उन्हें बताना चाहिए कि 10 वर्ष पहले भारत में स्थिति कितनी खराब थी और उनकी सरकार ने देश के हालात को कितना बदला है, देश को किस नई ऊंचाइयों पर ले गई है। युवाओं का सामर्थ्य 2047 तक ह्विकसित भारतह्व के सपने को साकार करने में काम आएगा। यह सदस्यता अभियान सारे रिकॉर्ड को तोड़ेगा। उन्होंने सदस्यता अभियान को लेकर देश के आकांक्षी जिलों, ब्लॉक और सीमावर्ती इलाकों पर भी ज्यादा फोकस करने की सलाह दी। पीएम मोदी ने कहा कि हम सिर्फ चुनावी मशीन नहीं हैं, बल्कि वो खाद-पानी हैं जो देशवासियों के सपने को सींच सकता है। भाजपा को चुनावी मशीन कहना अपमान है।

बीजेपी लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का पालन करने वाली पार्टी: पीएम मोदी ने भाजपा और अन्य राजनीतिक दलों के बीच के अंतर के बारे में कहा कि आज सदस्यता अभियान का एक और दौर प्रारंभ हो रहा है। भारतीय जनसंघ से लेकर अब तक हमने देश में एक नई राजनीतिक संस्कृति लाने का भरसक प्रयास किया है। जब तक जिस संगठन के माध्यम से या जिस राजनीतिक दल के माध्यम से देश की जनता सत्ता सुपुर्द करती है, वो इकाई, वो संगठन और वो दल अगर लोकतांत्रिक मूल्यों को नहीं जीता है, आंतरिक लोकतंत्र निरंतर उसमें पनपता नहीं है, तो वैसी स्थिति बनती है, जो आज देश के कई दलों में हम देख रहे हैं। भाजपा एक मात्र दल है, जो अपनी पार्टी के संविधान के अनुसार पूरी तरह से लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का पालन करते हुए अपने कार्य का विस्तार कर रही है और जन-सामान्य की आशा, आकांक्षाओं पर खरा उतरने के लिए अपने आप को निरंतर योग्य बनाए रहता है।

संघर्ष के दिनों को किया याद : उन्होंने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए कहा कि मैं जब राजनीति में नहीं था, तो जनसंघ के जमाने में बढ़े उत्साह के साथ कार्यकर्ता दीवारों पर दीपक पेंट करते थे, तो कई राजनीतिक दल के नेता अपने भाषणों में मजाक उड़ाते थे कि दीवारों पर दीपक पेंट करने से सत्ता के गलियारों तक नहीं पहुंचा जा सकता है। हम वो लोग हैं, जिन्होंने श्रद्धा से दीवारों पर कमल पेंट किया, क्योंकि विश्वास था कि दीवारों पर पेंट किया कमल कभी न कभी तो दिलों पर भी पेंट हो जाएगा। एक जमाने में लोकसभा में दो सदस्य होने पर हमारा मजाक उड़ाया गया था। बहुत जुल्म सहकर पार्टी यहां तक पहुंची है।

50 नमूना की जांच में मिले 12 डेंगू मरीज, 11 भर्ती

पटना सिटी (प्राकि)। एनएमसीएच के माइक्रोबायोलॉजी विभाग में डेंगू के 50 सैंपल की जांच सोमवार को की गई। इसमें 12 डेंगू संक्रमित मरीज मिले हैं। माइक्रोबायोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉप्रो संजय कुमार ने बताया कि पटना सिटी की चार वर्ष की बच्ची, अगमकुआं के 16 वर्ष का किशोर, कुम्हरार का फामेर्सी स्टूडेंट 24 वर्षीय युवक, बाजार समिति के 21 वर्षीय युवक, लोहिया नगर का चार वर्ष का बच्चा, भूतनाथ रोड का 21 वर्षीय युवक, दीदारगंज की दो वर्ष की बच्ची, राजापुर का 14 वर्षीय किशोर, अथमलगोला के 17 वर्षीय किशोर, जहानाबाद के 32 वर्षीय युवक, अररिया के 48 वर्षीय युवक, वैशाली के 30 वर्षीय युवक डेंगू से संक्रमित है। अस्पताल के अधीक्षक डॉप्रो बिनोद कुमार सिंह ने बताया कि अस्पताल में डेंगू के 11 मरीज भर्ती हैं। इसमें मेडिसिन विभाग में सात मरीज में एक महिला है। शिशु रोग विभाग में चार मरीज भर्ती है।

आरजी कर अस्पताल के पूर्व प्राचार्य संदीप घोष गिरफ्तार

वित्तीय अनियमितता मामले में सीबीआई ने की कार्रवाई

प्रात : किरण

६ कोलकाता। आखिरकार आरजी कर मेडिकल कॉलेज का पूर्व प्राचार्य को सीबीआई ने सोमवार को गिरफ्तार कर लिया। 16 अगस्त से लगातार 15 दिनों तक संदीप को सीबीआई द्वारा पूछताछ का सामना करना पड़ा। पिछले शनिवार और रविवार को उनकी पूछताछ नहीं की गई थी, लेकिन सोमवार को उन्हें फिर से सीजीओ कॉम्प्लेक्स में तलब किया गया। शाम को सीबीआई के अधिकारी संदीप को वहां से निकालकर निजाम पैलेस ले गए। इसके बाद केंद्रीय जांच एजेंसी ने सूचित किया कि संदीप को गिरफ्तार कर लिया गया है। नौ अगस्त को आरजी कर मेडिकल कॉलेज में जूनियर डॉक्टर के साथ कथित दुष्कर्म और हत्या की घटना के बाद से तत्कालीन प्राचार्य संदीप की भूमिका पर सवाल उठने लगे थे। जांच का जिम्मा मिलने के बाद 15 अगस्त को सीबीआई ने उन्हें पहली बार तलब किया। उस दिन संदीप ने हाजिरी नहीं हुए। लेकिन अगले दिन सीबीआई ने उन्हें साल्ट लेक की सड़क से पकड़ लिया। संदीप को सीजीओ कॉम्प्लेक्स के सीबीआई दफ्तर ले गए। इसके बाद से 24 अगस्त तक लगातार 9 दिनों तक उन्हें सीजीओ में तलब किया गया। उन्हें रोजाना 10 से 14 घंटे तक सीबीआई दफ्तर में रहना पड़ा। उल्लेखनीय है कि 25 अगस्त की सुबह सीबीआई की एक टीम ने संदीप के बेलघाटा स्थित घर पर छापा मारा। उन्हें 75 मिनट तक घर के बाहर इंतजार करवा कर बाद में दरवाजा खोला। सीबीआई अधिकारी अंदर गए और उस दिन संदीप से पूछताछ की। कोलकाता हाई कोर्ट के आदेश पर सीबीआई महिला डॉक्टर की बलात्कार और हत्या की घटना की जांच कर रही है। इसके अलावा, अस्पताल में वित्तीय अनियमितताओं की जांच भी सीबीआई द्वारा की जा रही है। दोनों मामलों में संदीप को केंद्रीय एजेंसी की जांच के दायरे में रखा गया है। वित्तीय अनियमितताओं के मामले में 24 अगस्त को सीबीआई ने एफआईआर भी दर्ज की है। सूत्रों के अनुसार, इसी एफआईआर के आधार पर सीबीआई की टीम संदीप के घर पहुंची थी। इसके साथ ही अदालत की अनुमति से संदीप समेत कुल सात लोगों का पॉलीग्राफ परीक्षण भी किया गया। बता दें कि जूनियर डॉक्टर की मौत के बाद आरजी कर मेडिकल कॉलेज में शुरू हुए आंदोलन में आवासीय डॉक्टरों और छात्रों की मुख्य मांग संदीप की बर्खास्तगी या इस्तीफा थी। आंदोलन के दबाव में 12 अगस्त को संदीप ने इस्तीफा दे दिया और स्वास्थ्य विभाग में अपना इस्तीफा जमा कर दिया। लेकिन कुछ घंटों के भीतर ही राज्य सरकार ने संदीप को कोलकाता के एक अन्य सरकारी अस्पताल में प्राचार्य पद पर नियुक्त कर दिया। वहां भी उनकी बर्खास्तगी की मांग को लेकर आंदोलन शुरू हो गया। इस बीच, कोलकाता हाई कोर्ट ने संदीप को छुट्टी पर जाने का आदेश दिया। तब से संदीप छुट्टी पर थे। बाद में आंदोलन के दबाव में उन्हें उस पद से भी हटा दिया गया।

बुलडोजर एक्शन पर सुप्रीमकोर्ट ने लगाई रोक

कहा-दोषी हो तब भी किसी का घर नहीं गिरा सकते

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने देशभर में बुलडोजर कार्रवाई पर सवाल खड़ा किया है। जस्टिस बीआर गवाई की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि सिर्फ आरोपित होने के आधार पर किसी के खिलाफ ऐसी कार्रवाई नहीं हो सकती है। कोर्ट ने कहा कि इसे लेकर वो राष्ट्रीय स्तर पर दिशा-निर्देश जारी करेगा। मामले की अगली सुनवाई 17 सितंबर को होगी। सुप्रीम कोर्ट ने उदयपुर में चाकू मारने के आरोपित बच्चे के पिता के घर पर बुलडोजर कार्रवाई पर कहा कि एक पिता का बेटा अड़ियल हो सकता है लेकिन उसके लिए उसका घर गिरा दिया जाए, यह तरीका सही नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि किसी के दोषी साबित होने के बाद भी उसका घर नहीं गिराया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि बुलडोजर कार्रवाई के संबंध में दिशा-निर्देश बनाए जाने की जरूरत है। कोर्ट ने राष्ट्रीय स्तर पर दिशा-निर्देश जारी करने के लिए सभी पक्षों से सुझाव मांगा। सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि ऐसा केवल नगर निगम के कानून के अनुसार ही किया जा सकता है। यहां याचिकाकर्ता अदालत के सामने गलत ढंग से मामले को रख रहे हैं। बुलडोजर की कार्रवाई नियमों का पालन करते हुए की गई है। मेहता ने कोर्ट के समक्ष रखे गए मामलों का हवाला देते हुए कहा कि नोटिस बहुत पहले जारी किए गए थे और लोग पेश नहीं हुए। तब जस्टिस विश्वनाथन ने कहा कि अगर किसी की कोई कमी भी हो तो उसका फायदा नहीं उठाना चाहिए। जस्टिस गवई ने कहा कि अगर निर्माण अनधिकृत है, तो ऐसे मामलों में भी कार्रवाई कानून के अनुसार होना चाहिए।

सुखोई विमानों के लिए 240 एयरो इंजन की खरीद को मंजूरी

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई केंद्रीय मंत्रिमंडल की सुरक्षा मामलों की समिति ने देश की रक्षा को मजबूत करने की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण और बड़ा फैसला लेते हुए भारतीय वायुसेना के प्रमुख लड़ाकू विमान सुखोई -30 के लिए 26,000 करोड़ रुपये की लागत से 240 एयरो इंजन की खरीद के प्रस्ताव को सोमवार को मंजूरी दे दी है।

26 हजार करोड़ रुपये किए जाएंगे खर्च : रक्षा मंत्रालय की तरफ से साझा की गई जानकारी के अनुसार इसके तहत वायुसेना के सुखोई -30 एमकेआई लड़ाकू विमानों के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड से खरीदे (भारतीय) श्रेणी के तहत 240 एयरो-इंजन (एएल-31 एफपी) खरीद की जाएगी। इन विमानों की खरीद पर सभी करों और शुल्कों को मिलाकर 26,000 करोड़ रुपये से अधिक का व्यय होगा। इन एयरो-इंजन की डिलीवरी एक साल बाद शुरू होगी और कुल आठ साल की अवधि में पूरी होगी।

एचएएल के कोरापुट डिवीजन में होगा इंजन का निर्माण : जानकारी के मुताबिक इन इंजनों में 54 से अधिक स्वदेशी सामग्री होगी, जो एयरो-इंजन के कुछ प्रमुख घटकों के स्वदेशीकरण के कारण बढ़ी है। इनका निर्माण हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के कोरापुट डिवीजन में किया जाएगा।

देश की रक्षा तैयारियों को मिलेगी मजबूती : सुखोई -30 एमकेआई लड़ाकू विमान भारतीय वायुसेना का सबसे शक्तिशाली और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बेड़े में से एक है। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड की तरफ से इन एयरो-इंजनों की आपूर्ति भारतीय वायुसेना के बेड़े की आवश्यकताओं को पूरा करेगी, ताकि वो अपने निर्बाध संचालन को जारी रख सकें और देश की रक्षा तैयारियों को मजबूत कर सकें।

मंजूरी केंद्रीय मंत्रिमंडल ने देश भर में खाद्य सुरक्षा बढ़ाने के लिए सात महत्वपूर्ण निर्णयों को दी स्वीकृति

कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए 13,966 करोड़ रुपये की योजनाओं को मिली मंजूरी

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। मोदी कैबिनेट ने सोमवार को किसानों के लिए बड़ी घोषणा करते हुए 13,966 करोड़ रुपये की कुल लागत वाली सात योजनाओं को मंजूरी दी। सरकार ने कहा कि किसानों के जीवन को बेहतर बनाने और उनकी आय बढ़ाने के उद्देश्य से यह फैसले लिए गए हैं। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बैठक में कृषि से जुड़ी गतिविधियों को बढ़ावा देने और देश भर में खाद्य सुरक्षा बढ़ाने के लिए सात महत्वपूर्ण निर्णयों को मंजूरी दी। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सरकार के इस फैसले की जानकारी देते हुए बताया कि ये उपाय कृषि क्षेत्र को समर्थन देने, सतत विकास को बढ़ावा देने और सभी नागरिकों के लिए भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए डिजाइन किए गए हैं। अश्विनी वैष्णव ने फैसलों की जानकारी देते हुए बताया कि पहला अहम निर्णय है डिजिटल कृषि मिशन। इसे कृषि के लिए डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे की संरचना की तर्ज पर विकसित किया जा रहा है। कुछ अच्छे पायलट प्रोजेक्ट शुरू किए गए हैं और हमने सफलता हासिल की है, कुल 20,817 करोड़ रुपये के निवेश के साथ, डिजिटल कृषि मिशन स्थापित किया जाएगा। दूसरा अहम निर्णय है खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए फसल विज्ञान को बढ़ावा देना। इसके तहत 3979 करोड़ रुपये की लागत से किसानों को जलवायु परिवर्तन के हिसाब से फसल उगाने करने के लिए तैयार किया जाएगा और 2047 तक खाद्य सुरक्षा मिलेगी। कृषि शिक्षा, प्रबंधन और सामाजिक विज्ञान को सुदृढ़ बनाना: केंद्र सरकार ने कृषि शिक्षा, प्रबंधन और सामाजिक विज्ञान को मजबूत करने के लिए भी 2,291 करोड़ रुपये की योजना को मंजूरी दी है। इसके तहत कृषि छात्रों और शोधकताओं को वर्तमान चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार किया जाएगा। सतत पशुधन स्वास्थ्य और उत्पादन: केंद्रीय मंत्रिमंडल ने पशुधन और डेयरी से किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से सतत पशुधन स्वास्थ्य और उत्पादन के लिए 1,702 करोड़ रुपये की योजना मंजूर की है। इसके तहत पशु स्वास्थ्य प्रबंधन और पशु चिकित्सा शिक्षा एवं डेयरी उत्पादन और प्रौद्योगिकी विकास को बढ़ावा दिया जाएगा। केंद्र ने बागवानी पौधों से किसानों की आय में वृद्धि करने के लिए बागवानी का सतत विकास करने के उद्देश्य से 860 करोड़ रुपये मंजूर किए हैं। कृषि विज्ञान केंद्र का सुदृढ़ीकरण: केंद्र सरकार ने कृषि विज्ञान केंद्र के सुदृढ़ीकरण के लिए 1,202 करोड़ रुपये मंजूर किए हैं। प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन: प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के लिए भी 1,115 करोड़ रुपये मंजूर किए गए हैं।

14 हजार करोड़ की मंजूरी से बिहार को भी मिलेगा लाभ : मंगल

पटना। कृषि मंत्री मंगल पांडेय ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सोमवार को उनकी अध्यक्षता में हुई केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में कृषि क्षेत्र से संबंधित 7 कार्यक्रमों के लिए करीब 14 हजार करोड़ रुपये को मंजूरी दी गई है, जिससे बिहार जैसे कृषि प्रधान राज्य को काफी लाभ मिलेगा। किसानों की आय बढ़ाने व उनके जीवन मे खुशहाली लाने की केंद्र सरकार की यह पहल स्वागत योग्य है। श्री पांडेय ने कहा कि केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में किसानों से जुड़ीं 7 योजनाओं जिनमें खाद्य, पोषण के लिए 3 हजार 979 करोड़ रुपये, डिजिटल कृषि मिशन के लिए 2 हजार 817 करोड़ रुपये, कृषि शिक्षा और प्रबंधन को सशक्त करने के लिए 2 हजार 292 करोड़, टिकाऊ पशुधन स्वास्थ्य के लिए 1 हजार 702 करोड़ रुपये, बागवानी के विकास के लिए 860 करोड़ रुपये, कृषि विज्ञान केंद्रों के लिए 1 हजार 202 करोड़ रुपये व प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन को मजबूती देने के लिए 1 हजार 115 करोड़ रुपये की योजना को मंजूरी दी है। देश सहित बिहार के किसानों के लिए यह बड़ी सौगात है।

पीएम मोदी तीन दिवसीय यात्रा पर आज जायेंगे ब्रुनेई व सिंगापुर

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सिंगापुर यात्रा से पहले विदेश मंत्रालय ने सोमवार को कहा कि भारत-सिंगापुर मंत्रिस्तरीय गोलमेज सम्मेलन के तहत साझेदारी के लिए चिह्नित नए महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर आधारित, दोनों देशों के बीच संबंध और भी बड़े स्तर पर पहुंचने वाले हैं। मोदी सिंगापुर के प्रधानमंत्री लॉरेंस वोंग के आमंत्रण पर चार-पांच सितंबर को सिंगापुर की यात्रा पर जाएंगे। इससे पहले उनका तीन-चार सितंबर को ब्रुनेई का दौरा करने का कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य सभी मौजूदा क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को और मजबूत करना है। विदेश मंत्रालय के सचिव (पूर्व) जयदीप मजूमदार ने यहां प्रेस वार्ता में कहा कि भारत और ब्रुनेई रक्षा क्षेत्र में एक संयुक्त कार्य समूह स्थापित करने की दिशा में काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी करीब छह साल बाद सिंगापुर की यात्रा करने वाले हैं। मोदी ने अपने पहले कार्यकाल में सिंगापुर की यात्रा की थी। मजूमदार ने कहा कि सिंगापुर ने प्रधानमंत्री मोदी के तीसरे कार्यकाल की शुरूआत में उनकी यात्रा का स्वागत किया है। उन्होंने कहा, यह दौरा ऐसे समय में हो रहा है जब सिंगापुर में नए नेता ने सत्ता संभाली है और यह हमारे जीवंत द्विपक्षीय संबंधों के अगले चरण के लिए मंच तैयार करने का उपयुक्त समय है। सचिव (पूर्व) ने कहा कि भारत-सिंगापुर संबंध मजबूत हुए हैं और दोनों देशों के बीच एक गतिशील रणनीतिक साझेदारी है, जिसमें साझा इतिहास और लोगों के बीच आपसी संपर्क जैसे विभिन्न क्षेत्र शामिल हैं, जो दोनों देशों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। उन्होंने कहा, ह्यहमारे व्यापार और निवेश में लगातार वृद्धि देखी गई है, हमारे बीच मजबूत रक्षा सहयोग है और संस्कृति तथा शिक्षा क्षेत्र में आदान-प्रदान बढ़ रहा है।

संक्षिप्त खबरें

गृह रक्षा वाहिनी के जवान की हृदयाघात से हुई मौत

दानापुर। नगर के रूपसपुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत कुसुमपुरम में डियूटी के दौरान गृह रक्षा वाहिनी के जवान की हृदयाघात से मौत हो गयी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करा परिजनों को सौप दिया। मिली जानकारी के अनुसार दरभंगा के जाले थाना क्षेत्र के रेवधा निवासी स्व0 श्रीकृष्ण प्रसाद के पुत्र रमण प्रसाद 50 वर्षीय गृह रक्षा वाहिनी मे सिपाही थे। कुसुमपुर में डियूटी लगी थी। इसी दौरान हार्ट अटैक कर गया। जिससे उनकी मौत हो गयी। मृतक के दामाद रोहित ने बताया कि डियूटी के दौरान मौत हुई है

स्कूल से घर जाने निकली बच्ची रास्ते से लापता हो गई

दानापुर। थाना क्षेत्र के अंतर्गत गोला रोड में एक निजी स्कूल से घर जाने निकली 13 वर्षीय बच्ची रास्ते से लापता हो गई। निर्धारित समय तक घर नहीं पहुंचने से परिजन स्कूल पहुंचे और बच्ची के संदर्भ में जानकारी प्राप्त किए।स्कूल के सीसीटीवी फुटेज में बच्ची को पैदल जाते हुए देखकर परिजन और परेशान हो उठे। घटना की जानकारी दानापुर थाना समेत पुलिस अधिकारी को दिए। सूचना पाकर एएसपी दीक्षा, दानापुर थानाध्यक्ष प्रशांत भारद्वाज, रूपसपुर थानाध्यक्ष दल-बल के साथ पहुंचे और छानबीन में जुट गए। थानाध्यक्ष ने बताया कि बच्ची को जल्द बरामद कर लिया जाएगा।

पटना साहिब स्टेशन के स्मार्ट बाजार से 4.5 लाख की चोरी, मामला दर्ज

पटना सिटी, पटना साहिब स्टेशन स्थित स्मार्ट बाजार से साढ़े चार लाख रुपए की संपत्ति चोरी चली गई है। इस संबंध में प्रबंधक राकेश कुमार ने चौक थाना में मामला दर्ज कराया है। बताया गया है कि सीसीटीवी फुटेज जांच करने पर पता चला कि फरवरी माह से ही चोरी का क्रम जारी है। अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला दर्ज कराया गया है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। दो वाहन की चोरी वाहन चोरी की घटनाएं क्षेत्र में लगातार हो रही हैं। चौक थाना क्षेत्र के हरिमंदिर गली के सामने से सुजीत कुमार की बाइक चोरी चली गई है। इसी थाना क्षेत्र के मंगल तालाब चीक टोली के रहने वाले संजय कुमार की स्कूटी घर के दरवाजा के पास से चोरी चली गई है। दोनों ही मामले में चौक थाना की पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर मामले की छानबीन कर रही है।

गुमशुदगी का मामला दर्ज

पटना सिटी (प्राकि)। दो नाबालिग लड़की के गुमशुदगी का मामला थाना में दर्ज कराया गया है। आलमगंज थाना क्षेत्र के गुलजारबाग के रहने वाले 16 वर्षीया लड़की 30 अगस्त से लापता है। परिजनों ने पुलिस को बताया कि वह गुस्से में आकर कहीं चली गई है। इसी थाना क्षेत्र के बेलवरगंज मोहल्ला से भी एक 14 वर्षीया किशोरी लापता है। परिजनों ने पुलिस को बताया कि वह 29 अगस्त को घर से स्कूल के लिए निकली थी। छुटी के बाद घर वापस नहीं लौटी है। संभावित स्थानों पर खोजबीन किए जाने के बाद पुलिस को सूचित किया है।

भूषण माली युवा रजत के महानगर महासचिव मनोनीत

पटना सिटी (प्राकि)। युवा राष्ट्रीय जनता दल पटना महानगर के उपाध्यक्ष सन्नी यादव ने बताया कि युवा राष्ट्रीय जनता दल पटना महानगर अध्यक्ष रोहित कुमार यादव के द्वार पटना महानगर के महासचिव सह प्रभारी, पटना साहिब विधानसभा के पद पर भूषण माली को मनोनीत किया गया है। इनके मनोनयन पर राजद के प्रदेश महासचिव प्रेम कुमार गुप्ता, प्रदेश कार्यालय प्रभारी शिवेंद्र तांती, मोहम्मद जावेद, डॉ एकबाल अहमद, हेदयत अहमद, पंकज रजक, बबलू राम, राजा कुमार मेहता, शुभम जायसवाल, अमन कुमार ने खुशी का इजहार करते हुए कहा कि भूषण माली के मनोनयन से युवा राष्ट्रीय जनता दल पटना महानगर और भी मजबूत होगा।

स्वस्थ समाज के निर्माण में गर्भनिरोधक की अहम भूमिका

परिवार नियोजन के माध्यम से आर्थिक और सामाजिक स्थिरता को मिलता है बढ़ावा

- गर्भनिरोधक उपायों के नियमित उपयोग से होती है मातृ मृत्यु दर में 30% तक कमी

प्रात :किरण संवाददाता

पटनाः गर्भनिरोधक न केवल परिवार नियोजन का एक महत्वपूर्ण उपकरण है, बल्कि यह एक स्वस्थ और संतुलित समाज की नींव रखने में भी अहम भूमिका निभाता है। गर्भनिरोधक का इस्तेमाल महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य को बेहतर करने के साथ उन्हें अपने जीवन में प्रगति करने के लिए प्रोत्साहित भी करना है।

एक स्वस्थ समाज की दिशा में कदम बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि हर व्यक्ति को गर्भनिरोधक की उपलब्धता और उसके लाभों की जानकारी हो। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, सही और समय पर गर्भनिरोधक उपायों का उपयोग न केवल अनचाहे गर्भधारण को रोकता है, बल्कि महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार भी करता है। यह मातृ और शिशु मृत्यु दर को कम करने में भी सहायक होता है।

गर्भनिरोधक के इस्तेमाल से मातृ मृत्यु दर में लायी जा सकती है कमी

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-5) के अनुसार, बिहार में केवल 24% महिलाएं ही आधुनिक गर्भनिरोधक उपायों का उपयोग करती हैं, जो राष्ट्रीय औसत (54%) से काफी कम है। गुट्टमाकर इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट के अनुसार, गर्भनिरोधक उपायों के नियमित उपयोग से मातृ मृत्यु दर 30% तक कम हो सकती है।

परिवार नियोजन का प्रभावः

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) के मुताबिक, परिवार नियोजन के माध्यम से आर्थिक और सामाजिक स्थिरता को बढ़ावा मिलता है। सही समय पर परिवार की योजना बनाने से परिवार के सदस्यों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं और शिक्षा मिल सकती हैं।

पटना एम्स में एडिशनल प्रोफेसर डॉ इंदिरा प्रसाद ने कहा कि वर्तमान परिदृश्य में परिवार नियोजन बहुत ही महत्वपूर्ण है। समाज में समय पूर्व विवाह या किशोरावस्था में ही महिलाओं में प्रजनन के घातक परिणाम हो सकते हैं। इसका असर माता एवं शिशु दोनों पर ही पड़ता है। सरकार की ओर से भी परिवार नियोजन के लिए स्थायी और अस्थायी साधनों की व्यवस्था है जिसके इस्तेमाल से परिवार को सीमित या दो बच्चों के जन्म में अंतर रख सकते हैं। यह सभी गर्भनिरोधक सुरक्षित भी है।

इस संबंध में पटना की गर्भनिरोधक का इस्तेमाल करने वाली पटना की सुषमा कुमारी कहती हैं, ह्लगर्भनिरोधक के उपयोग ने हमारे परिवार को न केवल स्वस्थ रखा है, बल्कि हमें आर्थिक रूप से भी स्थिर किया है। पहले हमें इस बारे में जानकारी नहीं थी, लेकिन अब हमें समझ में आता है कि यह हमारे लिए कितना फायदेमंद है।

अमर कुमार, एक ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक, कहते हैं, गर्भनिरोधक के बारे में जानकारी न होने के कारण कई परिवार अनियोजित गर्भधारण का सामना करते हैं, जिससे उनके आर्थिक और सामाजिक जीवन पर असर पड़ता है। सरकार को इस पर और जागरूकता फैलानी चाहिए।ह्व

परिवार नियोजन के पांच संकेतकों पर फोकस

राज्य सरकार और विभिन्न सहयोगी संस्था इस दिशा में लगातार प्रयासरत हैं। हाल ही में स्वास्थ्य विभाग ने राज्य में गर्भनिरोधक उपायों के प्रचार-प्रसार पर विशेष बल दिया है। जिन पांच संकेतकों को इसने फोकस किया है उसमें गर्भनिरोधक प्रचलन दर, हाई अनमेट नीड, समय पूर्व शादी,किशोरी प्रजनन, एवं कुल प्रजनन दर शामिल हैं। इसका उद्देश्य लोगों को सही जानकारी और साधनों तक पहुंचाना है। इसके साथ ही, जागरूकता अभियानों के माध्यम से गर्भनिरोधक के बारे में भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है।

गर्भनिरोधक का सही और सटीक उपयोग न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, बल्कि समाज को भी स्वस्थ और संपन्न बनाने में मदद करता है। इसके लिए सरकार, समाज और परिवारों का एकजुट प्रयास आवश्यक है। इस दिशा में एक सकारात्मक बदलाव लाने के लिए हमें अपने विचारों और रवैये को बदलने की आवश्यकता है।

टीबी मुक्त जिले के लिए अप्रशिक्षित लैब तकनीशियनों का प्रशिक्षण हुआ प्रारंभ

राज्य स्तरीय 6 दिवसीय होगा प्रशिक्षण

- नाट एवं माइक्रोस्कोपी जांच की तकनीकी जानकारी से प्रशिक्षु होंगे प्रशिक्षित

प्रात :किरण संवाददाता

पटना- यक्ष्मा प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण केंद्र, अगमकुआँ पटना में डॉ. रेनू सिंह, अपर निदेशक, टीबीडीसी पटना के नेतृत्व में राज्य स्तरीय 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला की शुरूआत की गयी. यह प्रशिक्षण आज से 7 सितंबर तक जारी रहेगा. राज्य के सभी जिलों के अप्रशिक्षित प्रयोगशाला प्रावैधिक नाट एवं माइक्रोस्कोपी टीबी जांच की तकनीकों से प्रशिक्षित होकर अपने अपने जिलों में कार्यों को उत्कृष्टा से कर सकेंगे और जिलों को टीबी मुक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. रवि शंकर, चिकित्सा पदाधिकारी सह नोडल पदाधिकारी (प्रशिक्षण एवं अनुश्रवण) ने सभी प्रशिक्षुओं को नाट एवं माइक्रोस्कोपी टीबी जांच से संबंधित आवश्यक जानकारियां प्रदान की. उन्होंने कहा कि प्रशिक्षु इस 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के बाद तकनीकी रूप से दक्ष हो जायेंगे और इसका प्रतिफल संभावित टीबी रोगियों को त्वरित जांच सुविधा एवं ससमय उपचार प्रदान कर अपने अपने जिले को टीबी मुक्त कराने में सहायक सिद्ध होंगे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में डॉ. अवकाश सिन्हा, विश्व स्वास्थ्य संगठन के एनटीईपी सलाहकार, संजय कुमार सिन्हा, एसटीएसयू (एनटीईपी) बिहार, डॉ. मुकुल कुमार सिंह, डॉ. आनंद कुमार, चिकित्सा पदाधिकारी, टीबीडीसी पटना, रश्मि सिंह, माइक्रोबायोलॉजिस्ट के साथ आईआरएल पटना, फाइंड इंडिया, मोलबियो डायग्नोस्टिक आदि ने भाग लिया।

हमने ऐसा दानवीर खोया, जो लोगों के सुख-दुख में खड़े होते : नंदकिशोर

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

वरिष्ठ समाजसेवी भामाशाह पुत्र बसंत लाल गोयल की स्मृति में चौक स्थित जालान भवन में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन सोमवार को किया गया। सभा का संचालन रमेश चंद्र गुप्ता ने किया। श्रद्धांजलि सभा में बिहार विधानसभा के अध्यक्ष नंदकिशोर यादव ने कहा कि भामाशाह बसंत लाल गोयल के निधन से आज पटना सिटी ने एक ऐसी दानवीर को खो दिया है, जो हमेशा दूसरे के सुख-दुख के साथ रहे। वह जनसंघ से जुड़े थे। उन्होंने कितने युवाओं को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जोड़ने का काम किया था। आज जल्ला महावीर मंदिर के संरक्षक के रूप में उन्होंने बहुत काम किया। आज उनके नहीं रहने से सबसे बड़ी कमी उन्हें हो रही है। वक्ताओं में पद्मश्री बिमल जैन, हनुमान सहाय गोयल, सुबोध गोयल, संजीव यादव, शिव प्रसाद मोदी, डॉ एसए कृष्णा, कमल नोपानी, संजीव देवड़ा, शिव महतो, गोविंद कानोडिया, डॉ सुशील पोद्दार, ललित अग्रवाल, रमण केडिया, अरविंद, अलका, आलोक रिचा, अमित, रीना, अजय गोयल, सीता देवी, कैलाश चंद्र गोयल, हनुमान सहाय, शंकर लाल, सुबोध कुमार गोयल, विजय कुमार गुप्ता, रमेश चंद्र गुप्ता, मातादीन गोयल सहित अनेक लोगों ने शोकसभा में अपनी बात रखी और गोयल जी के बताए हुए रास्ते पर चलने का आह्वान किया। सभा में पुत्र आलोक गोयल, सुबोध गोयल, महावीर प्रसाद अग्रवाल, विजय गुप्ता, विनय सिंह, शशि शेखर रस्तोगी, मोहन चतुर्वेदी, शोभा गुप्ता, श्याम मिश्रा आदि उपस्थित थे।

एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की ओर से स्कूल परिसर में किया पौधारोपण

शिक्षक एवं छात्र-छात्राओं ने लगाये गए पौधों की देखभाल का लिया संकल्प

प्रात :किरण संवाददाता

पटना । सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के केंद्रीय संचार ब्यूरो(सीबीसी) पटना के द्वारा सोमवार (02 सितंबर 2024) को ह्यएक पेड़ माँ के नामह्ल वैश्विक अभियान के तहत आशियाना-दीघा रोड पर स्थित अंकुर पब्लिक स्कूल परिसर में शिक्षक एवं छात्र-छात्राओं द्वारा 15 से अधिक पौधे लगाए गए, जिनमें मुख्य रूप से अशोक, महोगनी, अर्जुन आदि के पौधे थे। पौधारोपण अभियान सीबीसी पटना के प्रमुख सह उपनिदेशक संजय कुमार के नेतृत्व में चलाया गया। इस अभियान के तहत अंकुर पब्लिक स्कूल के निदेशक संजय कुमार और सीबीसी पटना के प्रमुख ने एक-एक पौधा लगाया। जबकि शिक्षकों और छात्र-छात्राओं ने भी पौधारोपण अभियान में हिस्सा लिया। मौके पर सीबीसी पटना के प्रमुख सह उपनिदेशक संजय कुमार ने कहा कि ह्यएक पेड़ माँ के नामह्ल एक वृक्षारोपण अभियान है, जिसकी शुरूआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व पर्यावरण दिवस 2024 पर की थी। इसके तहत विभाग के द्वारा अभियान चला कर लोगों से एक पेड़ माँ के नाम लगवाया जा रहा हैसाथ ही लगाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। वहीँ, अंकुर पब्लिक स्कूल के निदेशक संजय कुमार ने कहा कि पेड़ पर्यावरण के लिए अहम है। उन्होंने कहा कि हमारे शिक्षक छात्र-छात्राओं को लागतार पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी प्रत्येक व्यक्ति की है और खासकर नई पीढ़ी, यानी छात्र-छात्राओं को इस अभियान में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए एवं पेड़-पौधे लगाने चाहिए। उन्होंने शिक्षक एवं छात्र-छात्राओं से लगाये गए पौधों की देखभाल का भी संकल्प दिलवाया। ह्यएक पेड़ माँ के नामह्ल अभियान के तहत वन प्रमंडल पटना की और से प्राप्त पौधों को लगाया गया। मौके पर केंद्रीय संचार ब्यूरो के सर्वजीत सिंह, सुरेन्द्र, राकेश, रौशन आदि ने भी एक पेड़ माँ के नाम पौधा लगाया।

जौहल को 15 की मीटिंग के लिए भेजा गया पत्र, चरणजीत नाराज

प्रात :किरण संवाददाता

प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब की बैठक 15 सितंबर को अपराह्न 11 बजे पटना उच्च न्यायालय के आदेश से किया जा रहा है। इस संबंध में 29 अगस्त को महासचिव इंद्रजीत सिंह ने सभी सदस्यों को पहले सोशल मीडिया के माध्यम से और उसके बाद निबंधित डाक से भी सूचना भेजी है। इधर मिली जानकारी के अनुसार बैठक में भाग लेने के लिए सदस्य हरपाल सिंह जौहल को पत्र नहीं भेजा गया है और न ही सोशल मीडिया के माध्यम से ही उनको सूचित किया गया था। जब इस संबंध में अध्यक्ष जगजोत सिंह को जानकारी मिली, तो उन्होंने महासचिव से इस संबंध में बात की। दरअसल काफी जद्दोजहद के बाद बताया जाता है कि महासचिव ने हरपाल सिंह जौहल को भी निबंधित डाक से और सोशल मीडिया के माध्यम से भी 15 सितंबर को होने वाली बैठक के बारे में भाग लेने के लिए सूचना भेजी है। वहीं इसकी जानकारी मिलने के बाद कमेटी के पूर्व महासचिव और सदस्य चरणजीत सिंह नाराज हो गए हैं। उनका कहना है कि श्री जौहल को कमेटी की बैठक में सवार्नुमति से सदस्यता समाप्त की जा चुकी थी। उसके बाद उन्हें कमेटी में जौहल की जगह सदस्य चुना गया। मगर श्री जौहल को बैठक में भाग लेने के लिए सूचित किया गया है, जबकि उन्हें नजरअंदाज कर दिया गया है। इस संबंध में वह महासचिव इंद्रजीत सिंह को आपत्ति जताते हुए पत्र भेजेंगे कि आखिर उन्हें बैठक में भाग लेने के लिए सूचित क्यों नहीं किया गया। इसका जवाब महासचिव को देना होगा।

गुरु ग्रंथ साहिब के प्रकाश पर्व पर गुरुद्वारा गायघाट में रखा गया अखंड पाठ

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

गुरु ग्रंथ साहिब जी का 420वां प्रकाश पर्व प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के द्वारा संगतों के सहयोग से मनाया जाएगा। इसे लेकर गुरुद्वारा गायघाट में सोमवार को श्री अखंड पाठ साहिब शुरू हुआ। यहां ग्रंथी सतलोक सिंह, कुलदीप सिंह और गुरचरण सिंह की देखरेख में अखंड पाठ शुरू हुआ। इसकी समाप्ति चार सितंबर को होगी। उस दिन श्री अखंड पाठ की समाप्ति के बाद विशेष दीवान सजेगा। इसके बाद गुरु का अटूट लंगर चलेगा दोपहर में पंज प्यारे की अगुवाई में नगर कीर्तन निकाला जाएगा। पंज प्यारे के पीछे सजे सजाए पालकी साहिब पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी विराजित होंगे, जिनकी सेवा सिंह साहिबानों के द्वारा किया जाएगा। दरअसल श्री गुरु ग्रंथ साहिब संसार के धर्म ग्रंथों में ऐसा पहला ग्रंथ है, जिसे गुरु की पदवी दी गई है। इसमें भारत के सभी जातियों के संत और महापुरुषों की वाणियां दर्ज हैं। इसका पहला प्रकाश भद्र शुद्ध एकम 1604 ई को अमृतसर में श्री हरिमंदिर साहिब जी में किया गया था। तीन सितंबर को रात सात से नौ बजे तक विशेष दीवान सजेगा, जिसमें शबद कीर्तन उच्च कोटि के रागी जत्था भाई मनोहर सिंह जी बरेलीवाले एवं श्री अमृतसर के हजूरी रागी जत्था भाई हरजीत सिंह पेश करेंगे। इसके अलावा तख्तश्री पटना साहिब के हजूरी रागी जत्था एवं कथावाचक व्याख्यान आदि पेश करेंगे। तख्तश्री कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह, उपाध्यक्ष लखविंदर सिंह, गुरुविंदर सिंह, महासचिव इंद्रजीत सिंह एवं सचिव हरबंश सिंह ने बताया कि वहीं तख्तश्री पटना साहिब में मंगलवार को अतिरिक्त मुख्य ग्रंथी ज्ञानी दिलीप सिंह की देखरेख में अखंड पाठ साहिब रखा जाएगा। इसकी समाप्ति पांच सितंबर को होगी। उस दिन श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश पर्व विशेष रूप से मनाया जाएगा।

भादो बदी अमावस्या महोत्सव के पहले दिन दादीजी को लगाया मेहंदी

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

मेहंदी ओ मेहंदी तू इतना बता दे तूने कौन सा काम किया है। दादी मंगलम दादी नाम मंगलम दादी जी को झुंझनू धाम मंगलम। मेहंदी रची थार हाथा में धुल रहे हो काजल आंख में। जलती रहे झुंझुनू वाली जोत तेरी जलती रहे जैसे अनेक भजनों से आज दादीजी का मंदिर और आसपास का इलाका दादीमय हो गया। मौका था श्री राणी सती दादी जी पटना ट्रस्ट पटना सिटी द्वारा आयोजित भादो बदी अमावस्या महोत्सव मेरचाई गली स्थित श्री दादी जी के मंदिर में आचार्य लखन शर्मा और हरिओम शास्त्री की देखरेख में दादी जी की ज्योत प्रचवलित की गई। श्री दादी जी का भव्य अलौकिक श्रृंगार मेहंदी उत्सव के साथ 56 प्रकार के व्यंजनों का भोग अपने आपमें अलग छटा बिखेर रहा था। श्री नारायणी महिला मंडल, मंगल सखी एवं मारवाड़ी महिला समिति की सदस्यों द्वारा दादी जी को मेहंदी लगाई गई। महिलाएं हरे और गुलाबी परिधानों में माथे पर चुनरी लिए दादी जी को रिझा रही थीं। मुख्य समारोह कल प्रातः मंगला आरती व जात पूजा से प्रारंभ होगा। दोपहर दो बजे से सामूहिक मंगल पाठ का आयोजन मंदिर प्रांगण में होगा। मंगल पाठ को स्वर देंगे कोलकाता के संजय शर्मा। आज भजनों की रसगंगा बहाने में उर्मिला साह, तारा झुनझुनवाला, राधिका चौधरी, अनिता झुनझुनवाला और सुनैना झुनझुनवाला ने दादी जी की एक से एक भजन सुना कर भक्तों को भाव विभोर कर दिया। आज के कार्यक्रम को सफल बनाने में अध्यक्ष प्रभात भरतिया, गिरधारी लाल सराफ, प्रभु दयाल भरतिया, सुभाष झुनझुनवाला, राजेश कमलिया, सुरेश चौधरी, राजेश चौधरी, डॉ सुशील पोद्दार, मनोज झुनझुनवाला, संजीव देवड़ा, ललित अग्रवाल, ईश्वर लाल अग्रवाल, गजानंद बूबना, पुरुषोत्तम पोद्दार, अमित झुनझुनवाला आदि सक्रिय थे।

गुमशुदगी का मामला दर्ज

पटना सिटी (प्राकि)। दो नाबालिग लड़की के गुमशुदगी का मामला थाना में दर्ज कराया गया है। आलमगंज थाना क्षेत्र के गुलजारबाग के रहने वाले 16 वर्षीया लड़की 30 अगस्त से लापता है। परिजनों ने पुलिस को बताया कि वह गुस्से में आकर कहीं चली गई है। इसी थाना क्षेत्र के बेलवरगंज मोहल्ला से भी एक 14 वर्षीया किशोरी लापता है। परिजनों ने पुलिस को बताया कि वह 29 अगस्त को घर से स्कूल के लिए निकली थी। छुटी के बाद घर वापस नहीं लौटी है। संभावित स्थानों पर खोजबीन किए जाने के बाद पुलिस को सूचित किया है।

राजीव रंजन को राष्ट्रीय प्रवक्ता बनाए जाने पर दी गई बधाई

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

- जल्द ही समय लेकर वृहद रूप से किया जाएगा उनका नागरिक अभिनंदन

जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता बनाए जाते ही श्री राजीव रंजन प्रसाद के चाहने वालों के बीच खुशी की लहर दौड़ गई है। उनके आवास व कार्यालय पहुंच लोग लगातार बधाइयां दे रहे हैं। इधर पटना फ्रूट्स मर्चेंट एसोसिएसन के महासचिव मो साबिर अली उर्फ भुट्टो खान, अध्यक्ष मो शमशाद आलम, कोषाध्यक्ष मो वसीम आलम, पाटलिपुत्रा नगर विकास समिति के अध्यक्ष बबलू कुमार, वार्ड 50 के प्रतिनिधि मो इरफान फन्नी खान, केला मंडी के वरुण कुमार, संतरा मंडी के अध्यक्ष जयप्रकाश कुशवाहा, पुतुल मिश्रा, छोटे लाल सिंह, अंजनी कुमार आदि ने संयुक्त रूप से राष्ट्रीय प्रवक्ता बनने पर राजीव रंजन प्रसाद को बधाई दी है। मुख्यमंत्री और जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार व कार्यकारी अध्यक्ष संजय कुमार झा के द्वारा श्री राजीव को राष्ट्रीय प्रवक्ता बनाए जाने के बाद जल्द ही संयुक्त रूप से उनका सम्मान समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। जल्द ही सभी लोग श्री राजीव रंजन से मिलकर उनसे तिथि और समय लेकर बृहद रूप से मुसल्लहपुर बाजार समिति परिसर या अन्य योग्य स्थान पर उनका नागरिक अभिनंदन किया जाएगा। इसमें विभिन्न व्यवसाय, स्वयंसेवी और राजनीतिक दल से जुड़े लोग भी शामिल होंगे और उस अभिनंदन समारोह को यादगार बनाने का काम करेंगे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने श्री राजीव रंजन प्रसाद पर भरोसा कर उन्हें राष्ट्रीय प्रवक्ता जैसी जिम्मेदारी सौंप कर बेहतर निर्णय लिया है।

करीब आठ घंटे देर से अमृतसर से चली स्पेशल ट्रेन पटना साहिब पहुंची

- जयकारा के साथ किया गया स्वागत, चाय-नाश्ता के बाद रिहाइश को गए

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

शहीद बाबा जीवन सिंह जी के 363वें जयंती को समर्पित 25वां चेतना मार्च एक से पांच सितंबर तक मनाया जा रहा है। इसी कड़ी में कारसेवा चेयरमैन जसवंत सिंह, सतनाम सिंह, वाइस चेयरमैन शैलेंद्र सिंह, मुख्य सलाहकार भगवान सिंह, संत सिंह एवं मनजीत सिंह ने बताया कि श्री अमृतसर से गाजे-बाजे के साथ एक सितंबर को पूर्वाह्न नौ बजे ट्रेन से यात्रा शुरू हुई। स्पेशल ट्रेन दो सितंबर को पूर्वाह्न 10 बजे पटना साहिब स्टेशन पहुंचना था। मगर यह ट्रेन पटना साहिब स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या एक पर सायं 5.40 पर पहुंची। यहां ट्रेन से उतरी संगतों का स्वागत तख्तश्री कमेटी के महासचिव इंद्रजीत सिंह, चेयरमैन जसवंत सिंह और सतनाम सिंह के अलावा कमेटी कार्यालय के अधीक्षक दलजीत सिंह, मैनेजर दिलीप सिंह पटेल, हरजीत सिंह, लेखापाल देवेंद्र सिंह, सतनाम सिंह, मनजीत सिंह, पपिंदर सिंह, जसवंत सिंह खालसा, इंद्रजीत सिंह बग्गा, सरदार प्रेम सिंह आदि ने किया। वहीं ट्रेन को सही रूप से प्लेटफार्म संख्या एक पर खड़ी कराने, संगतों को उतारने के बाद उक्त ट्रेन को स्टेशन मास्टर उपेन्द्र कुमार ने स्टाफ के सहयोग से ट्रेन को प्लेटफार्म एक को उक्त स्पेशल ट्रेन से खाली कराया गया। इस दौरान संगतों को दिशा निर्देशित और जयकारा करने का काम समाजसेवी डॉ विनोद अवस्थी ने किया। संगतों को पटना साहिब स्टेशन पर ही चाय नाश्ता का प्रबंध कराया गया। इसके बाद दर्जनों वाहनों में सवार कर उन सबों को तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब, कंगन घाट स्थित पर्यटन भवन, गुरुद्वारा बाललीला मैनी संगत, कुंदन निवास से लेकर अन्य रिहाइश में ठहराने के लिए ले जाया गया। इस ट्रेन से करीब 2127 संगत पहुंची है। वहीं जमशेदपुर से भी करीब 700 संगतों का जत्था सड़क मार्ग से जमशेदपुर से विभिन्न वाहनों पर सवार होकर पटना साहिब आ रही है। कल मंगलवार को सुबह आठ बजे तख्तश्री पटना साहिब में अखंड पाठ रखा जाएगा। इसके बाद तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब से संगतों की टोली गुरुद्वारा गायघाट, गुरुद्वारा कंगन घाट, गुरुद्वारा बाललीला मैनी संगत, गुरुद्वारा सोनार टोली, गुरुद्वारा गुरु का बाग व गुरुद्वारा हांडी साहिब के दर्शन करते हुए वापस तख्तश्री पटना साहिब पहुंचेगी। इस दिन रात आठ से 11 बजे तक प्रकाश एवं स्वर पर आधारित धार्मिक नाटक गुरु के बेटे पेश किया जाएगा। चार सितंबर को अपराह्न डेढ़ बजे गुरुद्वारा गायघाट से हाथी, घोड़ा, ऊंट, गाजे-बाजे, गुरु की लाडली फौजी, गतका पार्टी के साथ पंज प्यारे के नेतृत्व में और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की छत्रछाया में नगर कीर्तन निकाला जाएगा। यह अशोक राजपथ के पुरानी सिटीकोर्ट, पश्चिम दरवाजा, गुरहट्टा, खाजेकलां, मच्छरहट्टा सहित भगत सिंह चौक से होता हुआ तख्तश्री पटना साहिब पहुंचेगा। यहां रात 8.30 से 9.30 बजे तक आरती, आतिशबाजी एवं रात 9.30 से मध्य रात्रि 12 बजे तक प्रकाश एवं ध्वनि पर आधारित धार्मिक नाटक लालां दी कुबार्नी पेश किया जाएगा। पांच सितंबर को सुबह 7.30 से आठ तक श्री अखंड पाठ साहिब का समापन होगा। इसके बाद अपराह्न तीन बजे तक शबद कीर्तन और गुरमत विचार होगा। रात 8.30 से नौ तक आतिशबाजी के बाद रात 9.30 बजे से लड्डू बांटा जाएगा।

अकलियतों की आज जो हालत है उसके लिए कांग्रेस जिम्मेदार : दिलीप

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा- नेता प्रतिपक्ष को माफी यात्रा पर निकलना चाहिए

- ममता बनर्जी पर कसा तंज, दवा लाते-लाते बहुत देर कर दी

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह बिहार के राजस्व और भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल ने आज विरोधियों पर विभिन्न मुद्दों को लेकर जमकर निशाना साधा है। उन्होंने इस क्रम में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव की प्रस्तावित यात्रा को लेकर तंज कसते हुए कहा कि उन्हें पहले माफी यात्रा पर निकालना चाहिए। पटना प्रदेश कार्यालय में आज पत्रकारों से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि प्रतिपक्ष के नेता विदेश यात्रा से लौटे हैं और अब उन्हें बिहार की याद आई है। दरअसल, वे राहुल गांधी के संस्कार पर चल रहे हैं। पिछले महीने ही वे यात्रा पर निकलने वाले थे। भाजपा अध्यक्ष डॉ. जायसवाल ने तंज कसते हुए कहा कि इनको इस यात्रा से पहले जनता से माफी मांगने की यात्रा पर निकलना चाहिए। जो भ्रष्टाचार और पाप इनकी पूर्ववर्ती सरकार में इनके दल के लोगों ने किया है, जिस तरह का घोटाला,अपराध उनके दल के लोगों ने किया है, उसको लेकर माफी यात्रा पर निकलना चाहिए कि हम लोगों ने जो गलती किया है उसको बिहार की जनता माफ कर दे। भाजपा के सदस्यता अभियान को लेकर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा सबसे बड़ा राजनीतिक दल है और इसके सबसे ज्यादा सदस्य यानी 18 करोड़ सदस्य हैं। जितना भाजपा के सदस्य हैं उतने बहुत सारे देश की आबादी भी नहीं है। उन्होंने कहा कि भाजपा राष्ट्रवादी कार्यकताओं के विचारों की फौज है। इस देश में दो ही विचारधारा है - एक राष्ट्रवाद की विचार है और एक ऐसे लोग हैं जो देशद्रोहियों और देश विरोधी ताकतों से मिलकर राजनीति दुकानदारी चलाना चाहते हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस देश की

चिंता यदि कोई राजनीतिक दल करता है, भारत माता की जय करता है तो वह भारतीय जनता पार्टी है। उन्होंने कहा कि सदस्यता अभियान हमारा महापर्व है। कार्यकताओं की ताकत है। कार्यकर्ता ही हमारी पूंजी है और हम सदायस्ता अभियान को महापर्व के रूप में मना रहे हैं। आज राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पहला सदस्य बनाकर सदायस्ता अभियान की शुरूआत की है। उसके बाद पूरे देश और दुनिया में जो भारतवासी हैं वह मिस्ड कॉल के माध्यम सहित अन्य माध्यमों से भाजपा का सदस्य बनेंगे। पत्रकारों द्वारा कांग्रेस नेता राहुल गांधी के एक बयानके संबन्ध में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि देश में मुसलमानो को डरा कर रखने वाला यही पार्टी है कि भाजपा आ जाएगा ,भाजपा आ जाएगा।

नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद देश में अकलियत महफूज महसूस कर रहे हैं। हर वक्त प्रधानमंत्री सबका साथ सबका विकास सबका प्रयास की बात करते हैं। यह काम इंडी गठबंधन के लोग नहीं करते हैं। उन्होंने सवाल करते हुए कहा कि 75 सालों से अकलियत के लिए इन लोगों ने क्या किया कांग्रेस बता दे? उन्होंने स्पष्ट तौर से कहा कि आज जो हालत अकलियत भाइयों की है वह कांग्रेस के कारण है। अगर इनलोगों ने अकलियतों के लिए काम किया होता तो यह स्थिति नहीं होती। इसलिए इसका जवाब राहुल गांधी के पूर्वजों को जहां है वहां से देना चाहिए। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के एंटी रेप बिल लाने पर भाजपा अध्यक्ष डॉ. जायसवाल ने अपने अलग अंदाज में कहा, दवा लाते लाते बहुत देर कर दी। उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी बहुत दिन बाद जगी है। इतना दिनों के बाद इनको लगा है कि एंटी रेप कानून लाया जाए। डॉक्टर को हम लोग समाज में देवता मानते हैं और जिस तरह से महिला के साथ रेप हुआ और अपराधियों को बचाने का प्रयास ममता बनर्जी की सरकार ने किया वह अक्षम्य है। उच्च न्यायालय और सीबीआई की टीम ने जब अपना काम करना शुरू किया तो अब वह अपना चमड़े को बचाना चाहती हैं। उन्होंने कहा कि ममता बनर्जी का नैतिक पतन हो चुका है। ममता बनर्जी ने अपना विश्वास, जनमत खो चुकी है । ऐसी सरकार पर लोगों का विश्वास नहीं रह गया है अपराधियों को बचाना जघन्य अपराध है।

पूर्व मुख्यमंत्री स्व दारोगा प्रसाद राय की जयंती पर मुख्यमंत्री ने उन्हें नमन किया

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पूर्व मुख्यमंत्री स्व दारोगा प्रसाद राय की जयंती के अवसर पर नया सचिवालय परिसर के समक्ष स्थित स्व दारोगा प्रसाद राय की आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, बिहार विधानसभा अध्यक्ष नंदकिशोर यादव, जल संसाधन मंत्री सह संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी, स्वास्थ्य सह कृषि मंत्री मंगल पाण्डे, सूचना एवं जन-सम्पर्क मंत्री महेश्वर हजारी, विधान पार्षद संजय कुमार सिंह उर्फ गांधी जी, पूर्व मंत्री एवं स्व दारोगा प्रसाद राय के सुपुत्र चन्द्रिका राय एवं उनके परिजन, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, बिहार राज्य नागरिक परिषद् के पूर्व महासचिव अरविंद कुमार सिंह सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने स्व दारोगा प्रसाद राय जी की आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के कलाकारों द्वारा आरती पूजन तथा बिहार गीत एवं देश भक्ति गीत का गायन भी किया गया।

केंद्र की सरकार देश, संविधान और सौहार्द के लिए खतरनाक : तेजस्वी

- कहा- भजपा का हिडन एजेंडा संविधान को खत्म कर देना है

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार के नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव इन दिनों केंद्र सरकार और बिहार सरकार पर हमलावर हैं। तेजस्वी एक के बाद एक बिहार सरकार पर हमला बोल रहे हैं। वहीं जातिगत जनगणना को लेकर तेजस्वी केंद्र सरकार को घेर रहे हैं। बीते दिन तेजस्वी ने आरक्षण को लेकर एक दिवसीय धरना भी किया। वहीं, सोमवार को एक बार फिर उन्होंने आरक्षण को लेकर हमला बोला है। तेजस्वी यादव ने कहा कि, यह समझना होगा कि भारतीय जनता पार्टी का हिडन एजेंडा संविधान को खत्म कर देना है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार पहले ही इनकार कर चुकी है कि वह जातिगत गणना नहीं कराएगी। लेकिन सवाल सीधा है कि अब क्या करेगी केंद्र सरकार। शेड्यूल 9 का हो या जातीगत गणना वो नहीं कराना चाहती है। बीजेपी का कथनी कुछ है और करनी कुछ और है। इन लोगों का असल एजेंडा है संविधान को बदल देने का। उपेंद्र कुशवाहा के इस बयान पर जिसमें उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय जनता दल आने वाले विधानसभा चुनाव में काफी कम सीटों पर निपटा जाएगी इस पर तेजस्वी यादव ने कहा कि छोड़िए कौन क्या बोलता है उससे कोई मतलब नहीं है चलिए उनको भी मैं शुभकामना देता हूं। वहीं भाजपा के एमएलए के द्वारा मुसलमान को खुलेआम धमकी दिए जाने पर उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी जब देश के बाहर जाते हैं तो बुद्ध और शांति की बात करते हैं, गांधी की बात करते हैं। यहां उनकी डबल स्टैंड दिखती है। आपके नेता दिन रात यहां गाली देते रहते हैं। हिंसा की बात करते हैं। टूटपुजिंए नेता जिसकी कोई औकात नहीं है। ये नेता बस चाहते हैं कि चमचा गिरी करके कुछ बन जाएं। वे लोग सीधे तौर पर धमकी देते हैं हिम्मत है तो अकेले कूद करके देखे अकेले जाकर देखें। श्री तेजस्वी ने कहा कि देशवासियों के लिए जहर उगल रहा यह व्यक्ति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रिय वरिष्ठ सहयोगी बीजेपी सांसद नारायण राणे का बेटा बीजेपी एमएलए है। यह बीजेपी एमएलए संविधान और कानून को धत्ता बता मस्जिदों में घुस कर काटने-मारने की धमकी दे रहा है। खाड़ी देशों में जाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सजदा करते है, मस्जिदों में घूमते है। विदेशों में गांधी और बुद्ध की बात करते है लेकिन अपने ही देश में हिंसा करने तथा बीजेपी शासित राज्यों में अपने ही लोगों को काटने-मारने की धमकी देने वालों को प्रश्रय, श्रेय और प्रेय देते है। क्या यह प्रधानमंत्री जी का दोहरा मापदंड नहीं है? क्या प्रधानमंत्री जी इसे दिल से माफ करेंगे या फिर बीजेपी का टिकट देकर उसे पुरस्कृत करेंगे? एक ओर बीजेपी अपने संगठन और जनप्रतिनिधियों के माध्यम से समाज में नफरत फैला मुसलमानों को टारगेट करती है वहीं दूसरी ओर बीजेपी/आरएसएस अपने संपोषित एजेंटों के मार्फत भ्रम फैलाने तथा विभाजन करने का कुचक्र रचती है। बीजेपी के नेतृत्व में केंद्र की एनडीए सरकार देश, संविधान, समानता और सौहार्द के लिए अति हानिकारक व खतरनाक है।

जगदेव प्रसाद की शहादत दिवस पर राजद कार्यालय में 5 सितम्बर को संगोष्ठी : आलोक

भाजपा के लोग संवैधानिक व्यवस्था को कमजोर करना चाहते हैं : शक्ति

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार सरकार के पूर्व मंत्री सह राष्ट्रीय जनता दल के वरिष्ठ नेता आलोक कुमार मेहता ने विधायक फतेह बहादुर सिंह, राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रो सुबोध मेहता, प्रदेश के मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव प्रवक्ता एजाज अहमद, मधु मंजरी के साथ संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय जनता दल के तत्वाधान में अमर शहीद जगदेव प्रसाद का शहादत दिवस के अवसर पर 5 सितंबर को लोकतंत्र और संविधान की रक्षा विषय पर संगोष्ठी राष्ट्रीय जनता दल के राज्य कार्यालय के कपुर्री सभागार में आयोजित किया जा गया है। इस अवसर पर नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी प्रसाद यादव, राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह सहित अन्य नेतागण भी गोष्ठी को संबोधित करेंगे। पूर्व मंत्री आलोक मेहता ने आगे कहा कि पिछले दस वर्षों में नरेंद्र मोदी की सरकार ने संविधान के प्रतीक अशोक स्तंभ और चक्र को मुख्य धारा से अलग करने के लिए लगातार साजिश रची है। इस कड़ी में पासपोर्ट पर अशोक स्तंभ की जगह भाजपा के चुनाव चिन्ह कमल का निशान लगाने की कोशिश की गई। भारतीय जनता पार्टी के नेता लगातार शोषितों,वंचितों, पिछड़ों, अति पिछड़ों, दलितों और आदिवासियों के हक और अधिकार को कुचलने वाली कार्रवाई कर रही है और इन वर्गों के खिलाफ विषवमन करने वाले नेताओं को आगे बढ़ा रहे हैं। इसी क्रम में भाजपा के सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष रहे दया प्रकाश सिंहा के द्वारा सम्राट अशोक को क्रुरता हत्या, शोषण ,अत्याचार ,छल जैसे अवगुणों से परिपूर्ण बताया लेकिन इस पर कार्रवाई की जगह भाजपा उन्हें सम्मानित किया। भाजपा किसी भी महापुरुषों को सम्मान नहीं देना चाहती है और खास तौर से उन महापुरुषों को जो शोषित, वंचित वर्ग से आते हैं। आलोक कुमार मेहता ने आगे कहा कि जगदेव बाबू का मानना था कि संविधान के निमार्ताओ ने जो लक्ष्य स्थापित किए हैं ,उन्हें पाने के लिए विभिन्नता में एकता ,लोकतंत्र और सामाजिक क्रांति में तारतम्य होना चाहिए। इन्हीं मुल्यो को लेकर बाबा साहब अंबेडकर के सपनों को पूरा करने के लिए वे निरंतर प्रयास करते रहे। जगदेव बाबू ने जाति के वर्चस्व को तोड़ा और शोषित वर्ग को अपने अधिकारों की लिए लड़ाई लड़ने के लिए प्रेरित किया। आलोक ने कहा कि इन्हीं मूल्यों को लेकर लालू प्रसाद जी ने प्रजातांत्रिक तरीके से लोगों को आगे बढ़ाने में अपनी महती भूमिका निभाई। प्रदेश राजद के मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव ने कहा कि जगदेव बाबू को अमर शहीद का दर्जा लालू प्रसाद यादव ने अपने कार्यकाल में दिया। आगे कहा कि पुर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव जी ने 17 महीने के कार्यकाल में गरीबों, शोषितों , वंचितों के लिए जो काम किया है, वह यादगार है । भाजपा के लोग भारत के संवैधानिक व्यवस्था को कमजोर करना चाहते हैं ,सबसे पहले शोषितों और वंचितों, पिछड़ों,अति पिछडों , दलितों और आदिवासियों के आरक्षण व्यवस्था को समाप्त करने की साजिश में लग गई है। संविधान को कमजोर करने वाली कार्रवाई की जा रही है और इसके लिए हर तरह का उपाय किया जा रहा है।

सदाकत आश्रम में पूर्व मुख्यमंत्री स्व दारोगा प्रसाद राय की मनी जयंती

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री स्व दारोगा प्रसाद राय की 102 वी जयंती एवं प्रदेश कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष लहटन चौधरी की 21वीं पुण्यतिथि मनायी गयी। कार्यक्रम की अध्यक्षता बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने किया ।इस अवसर पर डॉ. अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि दारोगा बाबू कांग्रेस के सम्मानित नेता थे और राज्य सरकार के लम्बे समय तक मंत्री एवं बाद में मुख्यमंत्री के रूप में राज्य में पिछड़ो दलितों एवं अल्पसंख्यक समुदाय के विकास के लिए कई योजनायें चलाई ।डॉ. सिंह ने कहा कि स्व लहटन चौधरी लम्बे समय तक राज्य सरकार में कृषि, राजस्व एवं स्वास्थ विभाग के मंत्री रहे। उन्होंने कहा कि वे जिस जिस विभाग के मंत्री रहे वहाँ उन्होंने अपनी गहरी छाप छोड़ी। लहटन चौधरी, प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे तथा सभी दायित्वों को उन्होंने ईमानदारी से निभाया ।इस अवसर पर श्रद्धाँजलि अर्पित करने वालों में पूर्व मंत्री कृपानाथ पाठक, पूर्व विधायक नरेन्द्र कुमार, विधायक नीतू कुमारी, ब्रजेश पाण्डेय, मीडिया चेयरमैन राजेश राठौड़, बंटी चौधरी, ब्रजेश प्रसाद मुनन, कपिलदेव प्रसाद यादव, रघुनन्दन मांझी, आलोक हर्ष, नागेन्द्र कुमार विकल, रीता सिंह, शशि भूषण राय,केसर कुमार सिंह,उमेश कुमार राम, मिन्नत रहमानी, राजकिशोर सिंह, अखिलेश्वर सिंह, ललन कुमार, मधुबला, अभिषेक सिंह,आदित्य पासवान, मो अब्दुल वकी सज्जन, नदीम अंसारी,मुन्द्रिका सिंह यादव, पंकज यादव, निधि पाण्डेय, रमाशंकर पाण्डेय, पंकज पासवान, संजय कुमार सिंह,राजीव कुमार, आलोक शर्मा, मनोज कुमार मिश्र आदि प्रमुख हैं।

युवा कांग्रेस के प्रवक्ताओं की समीक्षा बैठक सम्पन्न

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार प्रदेश युवा कांग्रेस के द्वारा प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम में प्रवक्ताओं की बैठक आहूत की गई। बैठक की अध्यक्षता मुख्य प्रवक्ता विशाल यादव ने की। बिहार प्रदेश युवा कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता विशाल यादव ने अपने संबोधन में कहा कि आज के समय सरकार के खिलाफ बोलने वालों की संख्या कम है। इस समय हमको जनता की आवाज बनकर सरकार से सवाल करना होगा। बैठक को संबोधित करते हुए युवा कांग्रेस के प्रभारी सम्राट केसरी जेना ने कहा कि मोदी सरकार आम जनता की आवाज को दबा रही है। युवा कांग्रेस की सिपाही उनकी आवाज को सड़क से लेकर सदन तक उठाएंगे। कार्यक्रम में उपस्थित बिहार कांग्रेस के मीडिया चेयरमैन राजेश राठौड़ ने कहा कि समाज में युवा ही बदलाव ला सकते है। इसलिए युवा को बोलना पड़ेगा गूंगी सरकार से सवाल करना होगा । बैठक में उपस्थित उपाध्यक्ष आशुतोष त्रिपाठी ने कहा कि इस दौर में युवा नहीं बोलेगा तो कौन बोलेगा। युवाओं को आगे आकर केंद्र और राज्य सरकार से सवाल करना चाहिए। कार्यक्रम में प्रदेश कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़, उपाध्यक्ष आशुतोष त्रिपाठी, दौलत इमाम अमितेश पाण्डे, अजमेर करीम, शशांक रंजन, सुंदरम पाठक, राहुल सिंह, जयवर्धन सिंह, संस्कार यादव, कमालुद्दीन राजा अमित सिंह एवं विभिन्न जिलों से आए जिला प्रवक्ता शामिल हुए सहित अन्य नेतागण मौजूद रहें।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से उनके आवास एक अण्णे मार्ग पर शिष्टाचार मुलाकात करते हुए पुलिस महानिदेशक आलोक राज

सासाराम में मृतक के परिजन से मिले लोजपा आर सांसद

पटना। लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के जमुई सांसद अरुण भारती सोमवार को सासाराम पहुंचे, जहां दो दिन पूर्व सासाराम के दरिगाव थाना के अंतर्गत बडकी करपुरवा गांव निवासी सरोज पासवान की अपराधियों ने बेरहमी से चाकू गोद कर हत्या कर दी थी। सांसद श्री अरुण भारती ने सरोज पासवान के हत्या उपरांत उनके परिजनों से मिलने पहुंचे इस दौरान मृतक कार्यकर्ता के पिता राजेश्वर पासवान भी भावुक हो गए ।ऐसे में सांसद ने परिजन को ढाढस बढाया।

जमीन सर्वेक्षण में कई प्रकार की आशंकाएं : माले

- सरकार सर्वदलीय बैठक बुलाए
- माले ने हक दो-वादा निभाओ अभियान की समीक्षा की

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण के उपरांत सरकार द्वारा घोषित 2 लाख रु। की सहायता राशि के लिए 72 हजार रु। से नीचे के आय प्रमाण पत्र, भूमिहीनों के लिए 5 डिसमिल आवासीय जमीन और पक्का मकान के सवाल पर भाकपा-माले द्वारा चलाए जा रहे हक दो-वादा निभाओ अभियान को जनता का जबरदस्त जनसमर्थन मिल रहा है। गांवों से शहर तक गरीबों की भारी गोलबंदी विगत 22-24 अगस्त को प्रखंड मुख्यालयों पर हुआ। 72 हजार रु। से नीचे के तकरीबन डेढ़ लाख फॉर्म, 5 डिसमिल जमीन के एक लाख और पक्का मकान के तरकीबन 75 हजार फॉर्म भराए गए हैं। यह अभियान अभी भी जारी है और आगामी 23-24 सितंबर को एक बार फिर से प्रखंड मुख्यालयों पर जोरदार प्रदर्शन किया जाएगा। उक्त बातें माले राज्य सचिव कुणाल ने सोमवार को पटना में आयोजित जिला सचिवों/संयोजकों की बैठक में कही। बैठक में उनके अलावा पार्टी के वरिष्ठ नेता स्वदेश भट्टाचार्य, धीरेन्द्र झा, मीना तिवारी, शशि यादव सहित सभी जिला सचिव, संयोजक, पार्टी के विधायक तथा जनसंगठनों के नेता उपस्थित थे। बैठक में बिहार में जारी भूमि सर्वेक्षण पर विभिन्न कोनों से उठ रहे सवालों पर गहरी चिंता व्यक्त की गई। प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार प्रतीत होता है कि सरकार की बुनियादी मंशा जमीन को गरीबों से छीनकर उसे सरकारी घोषित कर देने की है। कई तरह की विसंगतियां उभरकर सामने आ रही हैं। भाकपा-माले भूमि सर्वेक्षण में गरीबों, आदिवासियों और अन्य वंचित वर्गों के भूमि अधिकारों पर समुचित रूप से ध्यान देने की मांग करती है जिसकी उपेक्षा सर्वे में की जा रही है। बरसो बरस से बसे गरीबों को कागज का बहाना बनाकर उनके अधिकार को अवैध घोषित कर दिया जा रहा है। यह गरीबों, किसानों व वंचितों की हकमारी है। अतः माले की मांग है कि भूमि सर्वेक्षण की प्रक्रिया को अधिक न्यायपूर्ण, पारदर्शी और समावेशी बनाने तथा गरीबों-आदिवासयों के हितों की रक्षा के लिए सबसे पहले सर्वदलीय बैठक बुलाई जाए।

पुस्तक चौदस मेला के दूसरे दिन आयोजित हुई श्रुतलेख प्रतियोगिता

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

हिन्दी पखवारा के अंतर्गत, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन में लगाए गए पुस्तक-चौदस-मेला के दूसरे दिन, सोमवार को, छात्र-छात्राओं के लिए श्रुतलेख-प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें, रवींद्र बालिका विद्यालय, राजेंद्र नगर, प्रभुतारा स्कूल, संकरी गली, पटना सिटी, सैंट जौन्स स्कूल, कदमकुआं, सैंट ऐंड्र्युज ऐकेडमी, आचार्य सुदर्शन कृष्णा निकेतन आदि विद्यालयों के चौथी से आठवीं के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता के आरंभ में बिहार सरकार के पूर्व विशेष सचिव एवं निर्णायक-मंडल के अध्यक्ष डा उपेन्द्र नाथ पाण्डेय ने श्रुतलेख के महत्त्व को समझाते हुए, विद्यार्थियों को सुलेख का पाठ पढ़ाया। उन्होंने कहा कि बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसी गौरवशाली संस्था में प्रतिभागिता भी गौरव का विषय है। इस संस्था में आए हैं तो कुछ विशेष अर्जित कर जाएँ। इस अवसर पर सम्मेलन की उपाध्यक्ष डा मधु वर्मा, प्रतियोगिता आयोजन समिति के सदस्यगण ई अशोक कुमार, आराधना प्रसाद, प्रेमलता सिंह तथा डा सीमा रानी, शैलेंद्र कुमार, मनोज कुमार उपाध्याय, गणेश झा, कुमारी प्रमिला समेत विभिन्न विद्यालयों के शिक्षकगण भी उपस्थित थे। कृष्णा निकेतन की छात्राओं ने महाकवि जयशंकर प्रसाद के अमर गीत ह्यअरुण यह मधुमय देश हमारा समेत अनेक मधूर गीतों के समूह-गान सहित अंत्याक्षरी आदि सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से विद्यार्थियों और अतिथियों का मनोरंजन भी किया। पुस्तक मेले में भी विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक, अभिभावक एवं छात्र-छात्राओं की बड़ी उपस्थिति रही। विद्यार्थियों ने बाल-साहित्य के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों की खरीद की। मेले में बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों ह्यबिहार की साहित्यिक प्रगति, डा शशिभूषण प्रसाद सिंह की पुस्तक बिहार की गौरव गाथा, सम्मेलन अध्यक्ष डा अनिल सुलभ की पुस्तकें हिन्दी के प्रणम्य पुरुष, प्रियंवदा, मै मरुथल सा चिर प्यासा, प्रथम पग, अमरेन्द्र नारायण की पुस्तक पावनचरित डा राजेंद्र प्रसाद, वरिष्ठ कवि मृत्युंजय मिश्र करुणेश के गजल-संग्रह रस्ते में गुलमोहर है, बटोहिया गीत के अमर रचनाकार बाबू रघुवीर नारायण आदि की खूब मांग रही। नेशनल बूक ट्रस्ट की दीर्घा पर भी पाठकों की पर्याप्त भींड़ थी ।

पटना नगर निगम का दावा कंकड़बाग एवं अजीमाबाद के लिए मुख्यालय स्तर पर विशेष मॉनिटरिंग टीम का गठन

डेंगू प्रभावित इलाकों में 500 मीटर तक किया जा रहा फॉगिंग एवं एंटी लार्वा का छिड़काव

- प्रतिदिन 375 टीम द्वारा लगभग 10 हजार घरों में किया जा रही एंटी लार्वा की टीम

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना नगर निगम द्वारा डेंगू से बचाव एवं रोकथाम के लिए नियमित रूप से फॉगिंग एवं एंटी लार्वा का छिड़काव किया जा रहा है। गौरतलब है कि सुबह से ही टीम सभी वार्डों में रवाना होती है। प्रतिदिन 375 टीम द्वारा शहर के सार्वजनिक स्थानों एवं 10 हजार घरों में एंटी लार्वा का छिड़काव भी किया जा रहा है जिससे कि डेंगू/मलेरिया के मच्छर को पनपने से रोका जा सके। बता दें कि एक टीम द्वारा प्रतिदिन 50 घरों को कवर किया जाता है। नगर आयुक्त के निर्देश पर कंकड़बाग एवं अजीमाबाद के लिए मुख्यालय स्तर पर एक विशेष टीम का भी निर्माण किया गया है। इसके साथ ही सभी पदाधिकारी को निर्देश दिया गया है की कार्ड में कृषि प्रकार की लापरवाही न हो यह सुनिश्चित करें हो यह सुनिश्चित करें।

डेंगू प्रभावित इलाकों में 500 मीटर तक विशेष फॉगिंग एवं एंटी लार्वा का किया जा रहा छिड़काव :

पटना नगर निगम द्वारा युद्ध स्तर पर डेंगू प्रभावित क्षेत्रों के लिए फॉगिंग एवं एंटी लार्वा का छिड़काव किया जा रहा है। प्रतिदिन लाइन लिस्ट के अनुसार मरीजों की सूची पटना नगर निगम को प्राप्त होती है। डेंगू से पीड़ित हुए मरीजों के घरों के आसपास के इलाके में 500 मीटर के दायरे में विशेष एंटी लार्वा का छिड़काव एवं फॉगिंग किया जा रहा है। इन जगहों पर मशीनों द्वारा बाहर एवं हैंड मशीन द्वारा घर के अंदर फॉगिंग किया जा रहा है। स्वास्थ्य पदाधिकारी डॉ. प्रवीण कुमार सिंह को इसके नोडल है। जिनके द्वारा लाइन लिस्ट के अनुसार स्वास्थ्य पदाधिकारी एवं नगर निगम के संबधित पदाधिकारी द्वारा प्रतिदिन फॉगिंग एवं एंटी लार्वा के छिड़काव की जांच भी की जाती है।

सभी अंचलों में हेल्थ एजुकेटर द्वारा की जा रही निगरानी :

पटना नगर निगम के सभी 6 अंचल में हेल्थ एजुकेटर भी डेंगू के मामलों एवं फागिंग एंटी लार्वा की निगरानी भी करते है एवं सुनिश्चित करते हैं कि सभी प्रभावित जगहों पर सुचारू रूप से हैंड फागिंग के द्वारा प्रभावित घरों एवं आसपास के इलाकों में छिड़काव सुनिश्चित किया जाए।

अस्पतालों के लिए विशेष 25 कर्मियों की टीम :

नगर आयुक्त के निर्देश पर 25 विशेष टीम को शहर के विभिन्न अस्पतालों के लिए विशेष टीम भी है। इस इलाको के पास नियमित रूप से एंटी लार्वा का छिड़काव एवं फॉगिंग कर रहे है। इसमें पीएमसीएच, एनएमसीएच, एम्स, आईजीआईसी, आईजीआईएमएस, गार्डिनर, राजवंशी नगर सहित शहर के सभी अस्पताल शामिल है। सभी अंचल के पदाधिकारियों को नगर आयुक्त द्वारा निर्देश दिया गया है की टीम द्वारा सुबह शाम पटना नगर निगम को स्थल की जियो टैग तस्वीर भी उपलब्ध कराई जा रही जिससे कार्य के पूर्ण होने की मॉनिटरिंग लगातार की जा सके। इसके साथ ही कर्मियों द्वारा आमजनों से लॉगबुक भी भरवाया जा रहा है। पटना नगर निगम के 375 सेक्टर में 375 टीम रोस्टर वार एंटी लार्वा के छिड़काव के लिए प्रतिदिन घरों में जा रही है।

जिंगल के माध्यम से आमजनों को किया जा रहा जागरूक :

डेंगू के मच्छर साफ पानी में पनपते है एवं दिन में काटते है। इसलिए इस दौरान विशेष सावधानी के साथ इसे पनपने से रोकने के लिए आमजनों को जागरुक भी किया जा रहा है। गौरतलब है कि पटना नगर निगम के कर्मियों द्वारा सभी वार्ड में गली, छोटे एवं संकरे रास्ते, छतों ,गमले एवं सभी ऐसे जगह जहां डेंगू के मच्छर पनप सकते हैं ऐसे जगह को चिन्हित कर छिड़काव किया जा रहा है। और लोगों से अपील की जा रही है कि वह कहीं भी पानी इकट्ठा न होने दे। इसके साथ ही पटना नगर निगम की डोर टू डोर गाड़ियों, स्मार्ट सिटी द्वारा लगे पीएस सिस्टम एवं वीएमडी पर भी आमजनों को डेंगू से बचाव के लिए जागरूक किया जा रहा है।

आमजनों से अपील 155304 पर छिड़काव के लिए करें संपर्क :

शहर के सभी बाजार एवं सार्वजनिक स्थल और घरों में भी विशेष रूप से चिन्हित कर फॉगिंग करवाया जा रहा है। जिससे आमजनों को सुरक्षित रखा जा सके। इसके साथ ही प्रतिदिन पटना नगर निगम की विशेष टीम द्वारा ऐसे एरिया को कवर किया जा रहा है जहां से फॉगिंग के लिए शिकायत आ रही है।

आम जन 155304 एन्टी लार्वा के छिड़काव के लिए शिकायत कर सकते है।

बिहार सरकार

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, भवन निर्माण विभाग, पटना।

अल्पकालीन कोटेशन आमंत्रण सूचना संख्या–09 वर्ष 2024–25

(विशेष शर्त मद एवं मात्रा के लिए वेबसाईट state.bihar.gov.in/.prdbihar देखें)

समुचित श्रेणी में निबंधित संवेदकों/ख्याति प्राप्त फार्मो/निबंधित दुकानदारों/कम्पनियों (जिसे Cupboard and Kitchen के कार्य करने का अनुभव हो उसे विशेष प्राथमिकता दी जायेगी) से निम्नलिखित कार्य के लिए मुहरबंद कोटेशन आमंत्रित किया जाता है, जो अधीक्षण अभियंता, दक्षिण बिहार अंचल, भवन निर्माण विभाग, पटना, एवं अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 09,09.2024 के अपराहन 12:30 अपराहन बजे तक प्राप्त किया जायेगा एवं उसी दिन 3:00 बजे अपराह्न में कोटेशनदाताओं या उनके द्वारा अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष खोला जाएगा।

कोटेशन का मूल्य (रूपये में) प्रत्येक कार्य क्रमांक के कोटेशन–पत्र के साथ कोटेशन मूल्य ONLINE GOVERNMENT REVENUE AND ACCOUNTING SYSTEM (O-GRAS) के माध्यम से (कार्यपालक अभियंता, गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, पटना) के पदनाम से जमा करना अनिवार्य होगा, जो कोटेशन प्रकाशन की तिथि के बाद का होना चाहिए। कोटेशन प्रकाशन के पूर्व के निर्गत ओ–ग्रास (O-GRAS) का कम्पयूटराईज्ड प्राप्ति रसीद पर कोई विचार नहीं किया जाएगा। कोटेशन मूल्य संवेदक के द्वारा कुल कोटेड राशि के अनुसार होगा, जो निम्न प्रकार हैः रू0 0 से 50,000.00 तक रू0 250/– रू0 50,001 से रू0 2,50,000.00 तक रू0 500/– रू0 2,50,001 से रू0 5,00,000 तक रू0 750/– रू0 5,00,001 से रू0 10,00,000 तक रू0 1250/– रू0 10,00,001 से रू0 15,00,000 तक रू0 2500/– एवं अग्रधन की राशि 2% (कोटेड राशि का मूल्य दो प्रतिशत तथा कम से कम रू0 30,000) कोटेशन कागजात के साथ संलग्न किया जाना अनिवार्य होगा।

कार्य का विवरणी :–

क0	सामग्री का नाम एवं विशिष्टयॉ
1	S/F/F/ Cupboard & Modular Kitchen in B -Type quarter (Block-1 Flat No-113,114 & 115) at Gardanibagh, Patna for the year 2024-25

- कार्य समाप्ति की अवधि : 20 दिन
- सक्षम पदाधिकारी के निर्देशन में ही सामानों की आपूर्ति की जानी है तथा आपूर्तिकर्त्ता को आपूर्ति के पश्चात ही भुगतान की प्रक्रिया की जायेगी।
- विशेष जानकारी हेतु सूचनापट्ट अथवा वेबसाईट state.bihar.gov.in/.prdbihar देखें या अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में कार्यावधि में सम्पर्क करें।

PR- 007279 (B C D) 2024-25

कार्यपालक अभियंता,
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, भ0नि0वि0, पटना

नशे की मार, बर्बाद करे सुखी परिवार।

संक्षिप्त खबरें

पूनम आजाद के निधन पर पूर्व विधान पार्षद ने शोक जताया

दरभंगा। सांसद एवं पूर्व वर्ल्ड कप क्रिकेटर कीर्ति आजाद की पत्नी पूनम आजाद के निधन पर पूर्व विधान पार्षद प्रो दिलीप कुमार चौधरी ने शोक जताया। शोक संवेदना व्यक्त करते हुए उन्होंने उनके निधन को राजनीतिक जगत के लिए बड़ी क्षति बताया। उन्होंने कहा कि मिथिला की बेटी पूनम आजाद नेक महिला होने के साथ-साथ एक तेज तर्रार एवं जुझारू नेत्री थी। अपने राजनीतिक जीवन में दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के विरुद्ध गोल मार्केट विधान सभा क्षेत्र से चुनाव लड़कर उन्होंने खूब सुर्खियां बटोरी थी। हालांकि इसमें उन्हें पराजय का मुंह देखना पड़ा। लेकिन राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में दिए अपने योगदान के लिए वे हमेशा याद की जाएंगी। उनके निधन से हमने एक संवेदनशील मैथिलानी को असमय खो दिया।

डीलर के निधन पर जताया शोक

कल्याणपुर समस्तीपुर प्रखंड क्षेत्र के कल्याणपुर गांव के डीलर के आकस्मिक निधन पर लोगों ने शोक जताया है। वहीं डीलर कल्याणपुर गांव निवासी नवल किशोर गुप्ता का निधन ईलाज के दौरान आईजी एम एस पटना में शनिवार को हो गया। इनके निधन पर शोक जताने वाले में डीलर एसोसिएशन के प्रखंड अध्यक्ष, डीलर राज किशोर गुप्ता, सुरेश महतो ,राजा राय हिमांशु कुमार मुन्ना ,उमेश ठाकुर मुखिया गंगा देवी पैक्स अध्यक्ष रजनीश कुमार राय, भाजपा उत्तरी मंडल उपाध्यक्ष विकास कुमार, राजद प्रखंड अध्यक्ष राम बाबू राय, मुन्ना राय, डॉ उमाकांत सिंह, सहित ग्रामीणों ने शोक व्यक्त किया

बाईक की चोरी

कल्याणपुर समस्तीपुर थाना क्षेत्र के रामपुरा हाट कल्याणपुर से अज्ञात चोरों द्वारा ग्लैमर बाईक की चोरी रविवार की रात कर लिया गया है। इस मामले को लेकर कल्याणपुर गांव निवासी सुनील राय स्थानीय थाना का आवेदन देकर बाइक बरामद करने की गुहार लगाई है। वहीं पुलिस मामले में जांच पड़ताल करने की बात कही है।

खेल से जीवन में अनुशासन व चरित्र का निर्माण होता है : मंत्री

दरभंगा। बिहार सरकार,बिहार राज्य खेल प्राधिकरण पटना एवं जिला प्रशासन दरभंगा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित जिला स्तरीय विद्यालय खेल प्रतियोगिता का उद्घाटन मुख्य अतिथि हरि सहनी,मंत्री पिछड़ा एवं अति पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग, बिहार सरकार, विशिष्ट अतिथि संजय सरावगी दरभंगा नगर विधायक, जितेंद्र कुमार सिंह सचिव जिला खेल संघ दरभंगा, डॉ.सविता मिश्रा अध्यक्ष दरभंगा जिला टेबल टेनिस एसोसिएशन एवं जिला खेल पदाधिकारी परिमल के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में जिला खेल पदाधिकारी दरभंगा परिमल ने वर्तमान समय में खिलाड़ी और खेल के उत्कर्ष के लिए बिहार सरकार की उन सभी योजनाओं की विस्तार से चर्चा की।इस अवसर पर मुख्य अतिथि के द्वारा सरकार के द्वारा 71 खिलाड़ियों को मेडल के बदले नौकरी के अभियान में धर्मशिला कुमारी जिन्हें दरोगा के पद पर दरभंगा में पदस्थापित किया गया है। मुख्य अतिथि मंत्री हरि सहनी ने खेल के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मानव के जीवन में जितनी भी आकांक्षाएं हैं उनकी पूर्ति का एकमात्र साधन खेल है।उन्होंने खिलाड़ियों का जोरदार उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि खिलाड़ी ही होते हैं जो हर क्षण भारत के राष्ट्रीय तिरंगे को फहराने का गौरव पाते हैं। वर्तमान समय में ओलंपिक से लेकर विभिन्न स्पर्धा में भारत के खिलाड़ियों ने विश्व में भारत का मान बढ़ाया है। खेल से जीवन में अनुशासन एवं चरित्र का निर्माण होता हैऔर चरित्र निर्माण से जुड़ा व्यक्ति ही राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने का दम रखता है। अपने प्रेरणादाई उद्बोधन में नगर विधायक संजय सरावगी ने खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाते हुए उनकी उपस्थिति एवं सुंदर तैयारी के लिए एक और जहां जिला खेल पदाधिकारी दरभंगा की प्रशंसा की वही खिलाड़ियों से जिले में चयनित होकर राज्य में जिले के लिए मेडल लाने के लिए उन्हें प्रेरित किया।

एनएसएस के मूल मंत्र समाज के प्रति बने अधिक जवाबदेह : कुलपति

मिथिला विश्वविद्यालय के कुलपति ने हरी झंडी दिखाकर परेड को किया रवाना

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।छात्र एनएसएस के व्यापक उद्देश्यों को समाज के अन्य युवाओं को भी बताएं, ताकि वे भी समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का बखूबी निर्वहन कर सकें। एनएसएस के मूल मंत्र समाज कल्याण की भावना को हमेशा याद रखते हुए स्वयंसेवक समाज के प्रति अपनी जवाबदेही का बखूबी पालन करें और अपने लक्ष्यों को भी प्राप्त करें। उक्त बातें ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा के कुलपति प्रो संजय कुमार चौधरी ने एनएसएस कोषांग की ओर से पूर्व गणतंत्र दिवस परेड शिविर के लिए स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग में आयोजित विश्वविद्यालय स्तरीय चयन प्रतियोगिता हेतु स्वयंसेवकों को परेड, दौड़ आदि के लिए हरी झंडी दिखाकर विदा करते हुए कही। कुलपति ने प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए आए हुए स्वयंसेवकों को बधाई एवं शुभकामना देते हुए कहा कि हमारे एनएसएस कोऑर्डिनेटर एवं प्रोग्राम अफसर्स अपने अच्छे-अच्छे कार्यक्रमों के माध्यम से स्वयंसेवकों को अच्छी शिक्षा देंगे, जिन्हें स्वयंसेवक अपने जीवन में उतारें तथा समाज को समुन्नत बनाएं। इस अवसर पर ललित कला संकायाध्यक्ष प्रो पुष्पम नारायण, कुलानुशासक प्रो अजय नाथ झा, संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ घनश्याम महतो, एनएसएस समन्वयक डॉ आर एन चौरसिया, आइक्यूएसी कोऑर्डिनेटर डॉ मो ज्या हैदर, भू संपदा पदाधिकारी डॉ कामेश्वर पासवान, उप परीक्षा नियंत्रक डॉ सुरेश पासवान, विभिन्न कॉलेजों से आए कार्यक्रम पदाधिकारी एवं डेढ़ सौ से अधिक स्वयंसेवक उपस्थित थे।

इस अवसर पर स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग के सभागार में डॉ घनश्याम महतो की अध्यक्षता में उद्घाटन कार्यक्रम हुआ, जिसमें विश्वविद्यालय के पूर्व चिकित्सा पदाधिकारी डॉ जीतेन्द्र ठाकुर, पूर्व एनसीसी पदाधिकारी डॉ अनिल कुमार चौधरी एवं डॉ रश्मि शिखा, एनएसएस पदाधिकारियों में डॉ सुबोध चंद्र यादव, डॉ लक्ष्मण यादव, डा संतोष कुमार, डा बबीता कुमारी, डॉ रश्मि कुमारी, डॉ शगुफ्ता खानम, डॉ सोनी कुमारी, डॉ सुनीता कुमारी, डॉ गंगासागर दीनबंधु, डॉ मो मंजर हुसैन, डॉ मनोज कुमार सिंह, डॉ ममता स्नेही, डॉ मोना शर्मा, कुमार नरेंद्र नीरज, डॉ दिलीप कुमार झा, डॉ वृन्दावन लाल जाटव आदि उपस्थित थे।

नैतिक मूल्यों में गिरावट के कारण महिलाओं को वस्तु मान लिया गया है : जेबा आफताब

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जमाअत ए इस्लामी हिंद की महिला प्रकोष्ठ द्वारा आज माड़ीपुर स्थित एक निजी होटल में संवाददाता सम्मेलन का आयोजन किया गया। जमाअत ए इस्लामी हिंद की मुजफ्फरपुर प्रकोष्ठ की सचिव जेबा आफताब ने बताया कि हमारी शाखा देश में महिला विरोधी हिंसा, उत्पीड़न, यौन उत्पीड़न, और हत्या के बढ़ते मामलों पर गहरी चिंता व्यक्त करती है। भारतीय समाज में महिलाओं के प्रति गहरी सामाजिक असमानताएं, स्त्री द्वेष पूर्वाग्रह, और भेदभाव की स्थिति ओर भी जटिल बन रहा है। साथ ही नैतिक मूल्यों का भी पतन हो रहा है। हमारा विश्वास है कि महिलाओं के विरुद्ध अत्याचार व्यापक रूप से फैल रहा है। यह हमारे देश की शांति और प्रगति को प्रभावित कर रहा है। इस खतरे का मूल कारण नैतिक मूल्यों का पतन है। समाज में नैतिक मूल्यों की कमी के कारण महिलाओं को वस्तु के रूप में देखना, यौन शोषण और दुर्व्यवहार, पॉर्नोग्राफी का व्यापक उपयोग, विवाहेतर संबंध और बेवफाई, शराब और नशीली दवाओं का बढ़ता उपयोग, आत्महत्या, पारिवारिक इकाई का टूटना और अनैतिकता का सामान्य कारण जैसी समस्या पैदा हो रही है। जो समाज के नैतिक ताने-बाने को तेजी से नष्ट कर रही है। इसलिए हमारी संस्था 1 सितंबर से 30 सितंबर 2024 तक विशेष अभियान चला कर जागरूकता कार्यक्रम चलाएगी। इसमें जी आई एच कैडर का निर्माण किया जाएगा। इसमें संस्था की सदस्य नैतिक मूल्यों का पालन करने और उनके कर्तव्यों के प्रति समाज को जागरूक करने का काम करेंगे। और मुस्लिम समाज में कुरान और सुन्नत के माध्यम से इस्लाम का ज्ञान प्राप्त करने और उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुए जागरूक करेगा। यह भारतीय समाज में सामान्य जागरूकता पैदा करने की नैतिक स्वतंत्रता की असल नींव है। क्योंकि वह व्यक्तियों को ऐसे विकल्प चुनने की अनुमति देता है, जो दूसरे का नुकसान पहुंचाये बिना खुशी और समृद्धि लाते हैं और यह हमें अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने में सक्षम बनाता है। हमारा यह अभियान विवाह के बाहर सुख और शांति की खोज के खतरों और मानवीय संबंधों में मार्गदर्शन नियम के रूप में नैतिकता के महत्व के बारे में लोगों को चेतावनी देगा। युवा पीढ़ी को सही रास्ते पर चलने का मार्गदर्शन देगा। संवाददाता सम्मेलन के इस अवसर पर हुमैरा जावेद, आलम आरा, हमीदा हुसैन, साजिद हुसैन, तारिक जमाल,मोहम्मद हैदर आदि उपस्थित थे।

मारपीट मामले में पुलिस ने इजरा गांव से दो व्यक्तियों को किया गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी रहिका थाना पुलिस ने एक माह पूर्व इजरा गांव में हुई मारपीट मामले में दो व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया है गिरफ्तार व्यक्ति की पहचान इजरा गांव निवासी रामप्रीत महतो के पुत्र पवन महतो,जीतन महतो के रूप में किया गया। बताते चलें कि लगभग एक माह पूर्व इजरा गांव वार्ड 11 निवासी श्याम लाल दास ने एक आवेदन रहिका थाना को देकर प्राथमिकी दर्ज कराया था तथा आवेदन में कथन किया कि जब मैं अपने दरवाजे पर बैठे हुए थे तो मेरे ही ग्रामीण पवन महतो आया और मुझे मरने लगे लप्पर थप्पड़ चलने लगे और मेरा दांत तोड़ दिया जब मेरी पत्नी मुझे बचाने आए तो उसे भी मारने लगे एवं लक्ष्मी चौपाल,रामदयाल चौपाल,जीतन महतो,शांति देवी, सोनी देवी सभी ग्राम ईजरा थाना रहिका जिला मधुबनी सभी लोग आए और मुझे बुरी तरह मारने लगे और बोलने लगे की इन दोनों को जान से मार कर पोखरा में फेंक दो और गली गलौज करने लगे हमको बोलने लगे की तुमको जहां जाना है जाओ मेरा कुछ नहीं होने वाला है जब मैं बोला कि हम थाना पर जा रहा हूं तो सभी लोग वापस आकर हम दोनों को दोबारा मारने लगे उसी क्रम में मैं बेहोश हो गया मुझे रहिका प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर इलाज चला तो मुझे होश आया। रहिका थानाध्यक्ष रविंद्र कुमार ने बताया कि पूर्व में मारपीट मामले में प्राथमिकी दर्ज किया गया था तब से कांड में अभियुक्त फरार चल रहा था गिरफ्तारी को लेकर लगातार छापेमारी चल रहा था गुप्त सूचना के आधार पर अभियुक्त को घर से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार पवन महतो , जीतन महतो पिता रामप्रीत महतो को न्यायिक हिरासत में लेने हेतु व्यवहार न्यायालय मधुबनी भेज दिया गया।

जमीनी विवाद में घर पर चढ़कर आधा दर्जन महिला व पुरुष को मारपीट कर किया गंभीर रूप से घायल

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के दुधपुरा में सोमवार की सुबह दो पक्षों के बीच आपसी विवाद को लेकर हुई मारपीट की घटना में लगभग आधा दर्जन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। घायलों की पहचान दुधपुरा वार्ड चार की नीलम देवी, मनीष कुमार, अनिश कुमार, कंचन कुमारी, अरविंद कुमार व हरिओम साह के रूप में हुई है। वहीं सूचना पर पहुंची पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई थी। मिली जानकारी के अनुसार पुलिस ने मौके से एक बाइक और तीन संदिग्ध व्यक्तियों को हिरासत में लिया है, जिनसे वह पूछताछ में जुटी हुई थी। घायलों के अनुसार कुछ महीनों से उन लोगों का अपने एक पड़ोसी के जमीन का विवाद चला आ रहा था। जिसमें वह लोग उनकी निजी जमीन पर जबरन कब्जा करने की कोशिश कर रहे थे। जिसका वह लोग लगातार विरोध कर रहे थे। इसी मामले में वह लोग उनके घर पर आकर गाली-गलौज की, जिसके बाद वे अपने 20-25 सहयोगियों के साथ हथियारों से लैस होकर घर पर हमला कर बैठे। हमलावरों के पास लाठी, डंडा, लोहे की रॉड, पिस्टल और तलवारें थीं। उन्होंने घर में घुसकर परिवार के सदस्यों को बेरहमी से पीटा, महिलाओं के साथ बदसलूकी की, और नकद, आभूषण व अन्य कीमती सामान लूट लिया।

इस दौरान बीच-बचाव करने आए पड़ोस के होमगार्ड जवान हरिओम साह और एक अन्य व्यक्ति भी गंभीर रूप से घायल हो गए। मुफ्फसिल थानाध्यक्ष पिंकी प्रसाद ने बताया कि पुलिस मामले की जांच में जुटी है और आवेदन मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। प्रथम दृष्टया यह मामला भूमि विवाद से जुड़ा प्रतीत हो रहा है और आरोपितों की पहचान कर जल्द ही उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा।

केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में किया गया हिंदी चेतना माह का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के विद्यापति सभागार में हिंदी चेतना माह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अध्यक्षीय सम्बोधन करते हुए कुलपति डॉ. पी एस पांडेय ने कहा कि हिंदी समृद्ध भाषा है। हिंदी सभी भाषाओं को अपने में समाहित कर लेती है। देश की एकता और अखंडता में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका है। कुलपति डॉ पांडेय ने अपने पिता की पुस्तकों का भी जिक्र किया और बताया कि कैसे वे इंग्लैंड में रहकर भी हिंदी की सेवा करते रहे। डॉ पांडेय ने वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वे हिंदी में पुस्तकों का लेखन करे। उन्होंने पूसा के लेखक देवकीनंदन खत्री सहित कई लेखकों के बारे में भी विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा हमारी मातृभाषा है और हमें इसका सम्मान करना चाहिए। हिंदी भाषा का महत्व केवल भारत में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में है। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा के कुलपति प्रो लक्ष्मी निवास पांडेय ने कहा कि हिंदी भाषा हमारी संस्कृति और परंपराओं का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि हमें हिंदी भाषा को अपनाना चाहिए और इसके माध्यम से अपनी संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित करना चाहिए। उन्होंने दक्षिण भारत के राज्यों में अपने अनुभव के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। निदेशक शिक्षा और राजभाषा के नियंत्री पदाधिकारी डॉ. उमाकांत बेहरा ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि हिंदी चेतना माह का आयोजन हमें हिंदी भाषा के महत्व को समझने में मदद करता है। उन्होंने कहा कि हमें हिंदी भाषा को अपनाना चाहिए और इसके माध्यम से अपनी संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित करना चाहिए। डीन पीजीसीए डॉ मयंक राय, निदेशक छात्र कल्याण डॉ रमन त्रिवेदी, डीन फिशरीज डॉ पी पी श्रीवास्तव ने भी कार्यक्रम के दौरान अपने विचार व्यक्त किए और हिंदी को समृद्ध बनाने को लेकर विभिन्न सुझाव दिए। राजभाषा पदाधिकारी डॉ. शंकर झा ने कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि हिंदी भाषा हमारी पहचान है और हमें इसका सम्मान करना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान डीन इंजीनियरिंग डॉक्टर अम्बरीष कुमार, डीन कम्युनिटी साइंस डॉ उषा सिंह, विश्वविद्यालय पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ राकेश मणि शर्मा, डॉ महेश कुमार, डॉ शिवपूजन सिंह,सूचना पदाधिकारी डॉ कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने राष्ट्रीय लोक अदालत को लेकर की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। राष्ट्रीय लोक अदालत के जरिए ग्राम कचहरी में लंबित शमनीय आपराधिक मामलों के निष्पादन हेतु पंचायती राज पदाधिकारियों के साथ जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह जिला विधिक सेवा प्राधिकार के अध्यक्ष विनोद कुमार तिवारी ने समीक्षात्मक बैठक की। बैठक को संबोधित करते हुए जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने कहा कि लोक अदालत के कुछ हीं दिन शेष हैं इसलिए सभी ग्राम कचहरियों को तत्परता से कार्य करने की आवश्यकता है। बैठक में बीपीआरओ ने अब तक कृत कार्य से जिला एवं सत्र न्यायाधीश को अवगत कराया।मौके पर पिछले राष्ट्रीय लोक अदालत में उत्कृष्ट कार्य करने पर कुशेश्वरस्थान एवं गौड़ाबौराम के बीपीआरओ को प्रमाणपत्र भी प्रदान किया गया। उन्होंने कहा कि सभी बीपीआरओ बेहतर कार्य कर राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाने में सहयोग करें। जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव रंजन देव ने कहा कि सभी बीपीआरओ से पिछले लोक अदालत से बेहतर परिणाम देने की अपेक्षित है। ज्ञात हो कि 14 सितंबर को दरभंगा, बेनीपुर एवं बिरौल न्यायालय परिसर में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन सुनिश्चित है बैठक में जिला पंचायती राज पदाधिकारी एवं विभिन्न प्रखंडों के बीपीआरओ मौजूद थे।

श्री दादी भादो महोत्सव में महिलाओं ने दादी जी का किया मंगलपाठ, श्रद्धालुओं में रहा उत्साह

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] शहर स्थित श्री दादी मंदिर में आयोजित दो दिवसीय श्री दादी भादो महोत्सव में सोमवार को धूमधाम के साथ राणी सती दादी का मंगलपाठ का आयोजन किया गया। मंगलपाठ को लेकर अग्रवाल समाज की महिलाओं में काफी उत्साह देखने को मिला। राजस्थानी भेषभूषा में सोलह श्रृंगार कर मंदिर पहुंची और राणी सती दादी का मंगल पाठ किया। सोमवार को दादी का जात लगाया जिसमें माता की ज्योत, माता का भव्य एवं अलौलिक श्रृंगार एवं छप्पन भोग लगाया गया। जिसके बाद श्री गणेश पूजन होने के बाद मंगलपाठ का कार्यक्रम कोलकाता से आई वाचक शिल्पी वर्मा की अगुवाई में दादी का मंगलपाठ किया। मंगलपाठ में अनिता बंका, सरीता डालमिया, रिंकू बंका, पूनम सुल्तानियां, लक्ष्मी शर्मा सहित 100 से भी अधिक महिलाएं शामिल हुई। वाचक के द्वारा कराए गए मंगलपाठ में राणी सती दादी जी के जन्म से लेकर सती होने तक का पूरा वर्णन किया गया। मंगलपाठ के दौरान वाचक के द्वारा सुंदर भजन भी प्रस्तुत किया गया। इससे पहले सोमवार को झारखंड के धनबाद से आए भजन गायक पंकज मोदी के द्वारा एक से बढ़कर एक भजन प्रस्तुत किया गया जिसे सुनकर लोग मंत्रमुग्ध हो गए। दो दिवसीय महोत्सव के सफल संचालन में जुटे समिति सदस्य सीताराम पोदार, संजय बंका, संदीप सुल्तानियां, प्रशांत सुल्तानियां, रवि अग्रवाल, संजय भालोटिया, अजय छापड़िया आदि ने बताया कि शहर में स्थित दादी की मंदिर की लोकप्रियता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

पुलिस टीम पर हमला के आरोपियों के विरुद्ध कार्रवाई का आदेश

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के जजुआर थाना क्षेत्र में शनिवार को पुलिस टीम पर हमला हुआ। दर्जनों लोगो ने पुलिस टीम को घेर कर हाथापाई शुरू कर दिया। जिसके बाद स्थानीय लोग ने बीच बचाव करके पुलिस को बचाया और भीड़ से निकाला।पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए कई असामाजिक तत्वों के लोगो हिरासत में लिया है। घटना जजुआर थान क्षेत्र पहसौल बाजार के समीप का है। जहां सड़क पर रखी ईंट हटाने के लिए कहने पर दबंगों ने जजुआर थाने की पुलिस पर हमला कर दिया। पुलिस के साथ बदसलूकी और हाथापाई की और पुलिस टीम को आधा घंटा तक बंधक बना कर रखा। बाद में स्थानीय कुछ लोगों ने बीच-बचाव कर पुलिस को छुड़ाया। जानकारी के अनुसार, जजुआर थाने में तैनात संदीप कुमार पुलिस बल के साथ पहसौल बैंक रोड में गश्ती के लिए निकले थे। पहसौल उत्तर बिहार ग्रामीण बैंक की शाखा से पहले सुनील प्रसाद के घर के समीप सड़क पर बहुत सारी ईंटें रखी हुई थी। पुलिस ने गृहस्वामी से ईंट को सड़क पर से हटाने को कहा। इसी बात को लेकर सुनील के पुत्र और अरुण नाम का युवक पुलिस से उलझ गया। मौके पर लोगों की भीड़ जुट गई। बदमाशो ने जमकर बवाल किया। पुलिस गश्ती टीम के साथ महिला पुलिस भी थी। जिसके साथ बदसलूकी की गई। मामले में जजुआर पुलिस ने दो लोगोंको हिरासत में लिया है। पूरे मामले को लेकर एसएसपी राकेश कुमार ने बताया कि उपद्रवियों पर विधि सम्मत कार्रवाई की जा रही है। जल्द ही अन्य आरोपियों को गिरफ्तार किया जाएगा।

लिओ क्लब द्वारा आयोजित साइक्लोथॉन सफलतापूर्वक संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। लिओ क्लब दरभंगा द्वारा आयोजित साइक्लोथॉन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस आयोजन में कुल 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जो फिटनेस, पर्यावरण जागरूकता, और सामुदायिक एकता का संदेश फैलाने में सफल रहे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नगर विधायक संजय सरावगी ने दीप प्रज्वलित कर इस आयोजन की शुरूआत की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों के रूप में लायन पवन कुमार सुरेका, लायन एस एम माइकल,के स्वामी, दीपक कुमार थाना प्रभारी लहेरियासराय, कुमार गौरव थाना प्रभारी यातायात उपस्थित थे। उनके साथ लायन्स क्लब ऑफ दरभंगा टाउन के सदस्य भी इस आयोजन में उपस्थित रहे। साइक्लोथॉन की शुरूआत पोलो ग्राउंड, लहेरियासराय से हुई, जिसमें प्रतिभागियों ने शहर के विभिन्न मार्गों पर साइक्लिंग करते हुए स्वास्थ्य, फिटनेस, और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस आयोजन में लीओ क्लब के सभी सदस्य भी उपस्थित थे और उन्होंने इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रतियोगिता के परिणामस्वरूप प्रतिभागियों को विजेता घोषित किया गया।लीओ क्लब दरभंगा के अध्यक्ष शुभम चौधरी ने इस सफल आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त किया।

पिछड़ों अति पिछड़ों तथा दलितों के नाम पर घड़ियाली आंसू न बहाए तेजस्वी : सांसद

प्रात : किरण संवाददाता

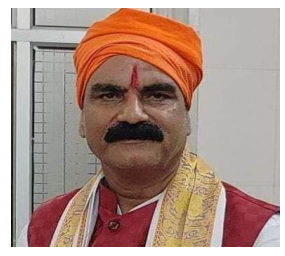

दरभंगा।भाजपा की नीतियों में समाज के अंतिम पायदान पर खरे लोगों को हर दृष्टि से सक्षम बनाना है जबकि राजद कांग्रेस ने सदैव इस समाज के हितों का शोषण किया है। जिस दल की सोच में आज भी अपने परिवार के सिवा और कुछ है ही नही वैसे दल के तेजस्वी यादव जैसे नेताओ का खुद को कमजोर वर्गों का हिमायती बनना तेजस्वी की अज्ञानता के सिवा कुछ भी नहीं है। दरभंगा के भाजपा सांसद तथा लोकसभा में पार्टी के सचेतक डा गोपाल जी ठाकुर ने राजद नेता तेजस्वी यादव द्वारा भाजपा के ऊपर की गई टिप्पणियों पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए उपरोक्त बातें कही। सांसद डा ठाकुर ने कमजोर वर्गों के हितों में तेजस्वी के बयान को अप्रासंगिक बताते हुए कहा कि तेजस्वी को समझना चाहिए कि देश में जब कभी भी कमजोर वर्गो के हितों की बात हुई है तो उसमे भाजपा की महती भागीदारी रही है। सांसद डा ठाकुर ने राजद काग्रेस की नीतियों पर जमकर हमला बोलते हुए कहा कि तेजस्वी को इस बात का जवाब देना चाहिए कि जब अति पिछड़ों दलितों तथा वंचित समाज के आरक्षण के लिए 1953 में गठित काका कालेलकर और मुंगेरी लाल कमीशन ने 1955 में अपना रिपोर्ट पेश किया तो 45 वर्षो तक उस रिपोर्ट पर अमल क्यों नहीं किया गया। वहीं 2005 में जब बिहार में एनडीए की सरकार बनी तो स्थानीय निकाय के चुनाव में अति पिछड़ों को 20 प्रतिशत आरक्षण देकर चुनाव कराया वहीं 2002 में राजद काग्रेस ने एकल पदो पर आतक्षण का प्रावधान किए बीना पञ्चायत चुनाव कराकर अति पिछड़ों की हकमारी की। सांसद डा ठाकुर ने तेजस्वी के बयानों को उनकी अज्ञानता का परिचायक बताते हुए कहा जिस दल की बुनियाद ही भ्रष्टाचार पर टिकी है तथा जो व्यक्ती बालिग होने से पहले कालि कमाई के मानले में और भ्रष्टाचार के लिए कोर्ट से चार्जशीटेड हो जाता है उस दल के नेता को भाजपा पर टिप्पणी करने का नैतिक अधिकार नहीं है। सांसद डा ठाकुर ने तेजस्वी यादव एवं राजद को परिवारवाद भ्रष्टाचार तथा अराजकता का ब्रांड बताते हुए कहा कि तथाकथित जंगलराज के युवराज को समाज के कमजोर वर्गों के लिए घड़ियाली आंसू बहाना छोड़कर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के पदचिन्हों से सीखना चाहिए

ललई सिंह यादव के 113 वीं जन्म जयंती ,तेल चित्र पर माल्यार्पण कर दी श्रद्धांजलि

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिले के बेनीपट्टी प्रखंड के परकौली पंचायत के परकौली गांव के दुर्गा मंदिर परिसर में संविधान-आरक्षण बचाओ संघर्ष मोर्चा बेनीपट्टी के तत्वाधान सामाजिक परिवर्तन के क्रांतिदूत मान्यवर ललई सिंह यादव के 113 वीं जन्म जयंती के अवसर पर आजादी के बाद बहुजन समाजके दशा व दिशा विषय पर संगोष्ठी का आयोजन पूर्व सरपंच आशेश्वर यादव की अध्यक्षता व संचालन अजीत पासवान पूर्व मुखिया व महासचिव संविधान आरक्षण बचाओ संघर्ष मोर्चा मधुबनी किया गया।कार्यक्रम का उद्घाटन प्रो० मुनेश्वर यादव ललित नारायण मिथिला विश्व विद्यालय दरभंगा व डॉ विकास यादव हड्डी रोग विशेषज्ञ के संयुक्त रूप से द्वीप प्रज्जलित कर किया। उपस्थित लोगो ने ललई सिंह यादव के तेल चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी।वही बहुजन गायक के द्वारा बुद्ध,अशोक,कबीर, रवि दास, शाहू फुले आंबेडकर सावित्री बाई फुले फातमा शेख व रामा बाई आंबेडकर के जीवन पर आधारित शौर्यगथा का गायन किया।वक्ताओं ने ललई सिंह यादव के कृतित्व व व्यक्तित्व पर विस्तार से चर्चा करते हुए मनु संस्कृति के विनाश के लिए जंगे ए मैदान में उतरकर मूलनिवासी बहुजनो के मान सम्मान स्वाभिमान की जिंदगी जीने की प्रेरणा दी। वे ग्वालियर राज्य के पुलिस बल के हैड कांस्टेबल थे।आवासीय कुव्यवस्था के खिलाफ पुलिस बल को एकत्रित करने के खिलाफ में बरखास्त कर दिया। ललई सिंह यादव सोल्जर ऑफ वॉर सिपाही की तबाही नामक किताब लिखी,के कारण जेल में डाले गए।स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने स्वतंत्रता सेनानी घोषित किया।पेरियार रामा स्वामी नायक की लिखित सच्ची रामायण उत्तर प्रदेश की सरकार प्रतिबंध लगाया था। ललई सिंह यादव ने न्यायालय ने पुस्तक को मुक्त तथा सिंह को जेल से रिहाई किया।डॉ आंबेडकर की लिखित जाति उन्मूलन आत्म सम्मान के लिए धर्म बदलो प्रतिबंध किया न्यायालय से लड़ाई जीती वे जीवन भर पचासी(85) प्रतिशत मूल निवासी धन शिक्षा मानवाधिकार से वंचित था।आजीवन संघर्षरत थे।कार्यक्रम में अजीत पासवान पूर्व मुखिया सह महासचिव संविधान आरक्षण बचाओ संघर्ष मोर्चा मधुबनी,दिनेश साफी उप निदेशक शिक्षा विभाग बिहार सरकार पटना, प्रो सुरेंद्र प्रसाद सुमन राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य जन संस्कृति मंच सह संपादक समकालीन चुनौती,राश्रेष्ठ दीवाना राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय ओबीसी लेखक संघ, ललन मंडल आंवेदकर वादी मुज्जफरपुर, रामवरण राम प्रखंड अध्यक्ष राजद सह वार्ड पार्षद बेनीपट्टी,राजेंद्र पासवान पूर्व एस डी ओ ,बीएसएनएल,राजेंद्र साफी बहुजन चिंतक,राजेंद्र प्रसाद,गरीब गुरबा मंच,मधुबनी,गंगा प्रसाद यादव,अधिवक्ता राम वरन यादव,विजय कुमार यादव पूर्व राजद प्रखंड अध्यक्ष बेनीपट्टी,योगी पासवान उर्फ फौजी,अशोक पासवान,केदार मोची,दीपक पासवान सहित सकड़ों लोगो ने उपस्थित हुए।

संक्षिप्त खबरें

बिहार प्रदेश राजद द्वारा धरना को जनता ने नकारा : जदयू जिला प्रवक्ता

मुंगेर (।बिहार)। मुंगेर जिला जदयू के जिला प्रवक्ता मनोज कुमार रघु ने कहा की मुंगेर जिला राजद के द्वारा किए गए धरना प्रदर्शन से राजद के कार्यकताओं ने दूरी बनाए रखा जिसका परिणाम है कि धरना में बहुत कम कार्यकर्ता उपस्थित थे यह साबित करता है कि राजद आम जनता के साथ-साथ अपने लोगों का भी विश्वास खो चुकी है प्रवक्ता मनोज कुमार रघु ने कहा कि राजद का झूठ बेनकाब हो चुका है और उनके छल कपट की राजनीति को जनता समझ चुकी है 15 वर्षों तक जब बिहार में राजद का शासन था तो लालू परिवार सत्ता की मलाई खाने और जनता को लूटने में व्यस्त रहा उन्होंने कभी बिहार के दलितों पिछड़ों व वंचितों की चिंता तक नहीं की और आज वही लोग प्रदेश की जनता को बरगलाने के लिए जातीय गणना और आरक्षण पर घड़ियाल आंसू बहा रहे हैं प्रवक्ता रघु ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जातीय गणना कराकर पूरे देश के नाजिर काम की है इसमें राजद की कोई भूमिका नहीं है राजद का आरक्षण लालू परिवार तक ही सीमित रहा है लालू प्रसाद को पति-पत्नी बेटा बेटी के अलावा कभी किसी दलित पिछले अति पिछड़ों को याद नहीं आई राजद आज आरक्षण के नाम पर दलितों पिछड़ों व अति पिछड़ों को गुमराह करने की कोशिश कर रहा है जबकि शुरू से ही इसकी हमारी करता रहा है राजद और कांग्रेस हमेशा से पिछड़ों का अपमान करते और धोखा देते रहे,बिहार में 2005 में एन डी ए की सरकार बनी तब से स्थानीय निकाय के चुनाव में अधिक पिछड़ों को 20% आरक्षण दिया गया जबकि राजद कांग्रेस की सरकार ने 2002 में एकल पद पर आरक्षण का प्रावधान किए बिना ही पंचायत चुनाव करा कर अति पिछड़ों की हकमारी कर ली गई है।

महंगाई की मार-आलू के रेट में जबरदस्त उछाल से उपभोक्ताओं के जेब पर असर, गड़बड़ा रहा है बजट

● बढे आलू के रेट,किसानों को नहीं हो रहा है फायदा

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर प्रखंड क्षेत्र में इन दिनों मनमानी कीमत पर आलू बिक रहा है। बाजार में इसकी कीमत 35 प्रति किलो है। अब ऐसा नहीं है कि इसका फायदा सीधे तौर पर किसानों को मिल रहा है। आलू उत्पादन के बावजूद इसके मुनाफे की डोर बाजार के पास है। कुल मिलाकर आलू का बाजार एक सिस्टम के अधीन चलता है जहां सबसे ज्यादा मार उपभोक्ताओं को झेलनी पड़ती है। इस संदर्भ में सबसे अहम बात यह है कि किसानों को आलू के इस मार्केट कोई लाभ नहीं मिल पाता। हालांकि यह सिलसिला कोई नया नहीं है बरसों से ऐसा ही चल रहा है लेकिन बीते तीन-चार सालों से बाजार की प्रकृति में कई बदलाव हुए हैं इनमें हाई मार्जिन सेल का धंधा जोर पकड़ चुका है। बाजार में ऊंचे भाव में आलू बेचने की स्थिति ना होने के बावजूद भी ज्यादा महंगाई ने आम उपभोक्ताओं के कसबल ढीले कर दिए हैं किसान उपभोक्ता दोनों परेशान इस पूरे मामले में किसान और उपभोक्ता दोनों ही परेशान है। ना किसानों को मूल्य मिल रहा है ना ही उपभोक्ताओं को राहत है। उत्पादन के बाद खेतों से उठाव के वक्त आलू की कीमत 14 रुपय किलो रही अगर स्टोरेज भाड़ा समेत तमाम खर्चों को जोड़ लें तो वर्तमान बल्की रेट में किसानों की उम्मीदों पर पानी फिरना तय है। 20 से 23 है थोक आलू का भाव फायदा व्यापारियों को बाजार में अधिकतम मूल पर आलू की बिक्री से छोटे से बड़े दुकानदार मालामाल हो रहे हैं,जबकि आम लोग से लेकर किसान तक परेशान है। आखिर रिटेल मार्केट में आलू जैसे रोजमर्रा की जरूरत की सब्जी में 12 रुपए प्रति किलो का भारी मार्जिन से आम लोगों की जेब ही तो ढीली हो रही है। महंगाई की मार आखिरकार आम लोगों पर ही क्यों पड़ती है।

पन्ना गांव में कैंप लगाकर एसबीआई ने 150 किसानों का ऋण किया माफ

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] बैंक चला गांव की ओर कार्यक्रम के तहत एसबीआई की ओर से परसा गांव में किसानों के बीच ऋण माफी को लेकर कैंप लगाया गया। जिसकी अध्यक्षता शाखा प्रबंधक जीपी सिंह ने किया। कैंप में 150 किसानों का ऋण माफ किया गया। जिससे किसान काफी खुश दिखाई दिए। शाखा प्रबंधक ने कहा कि आरबीआई के प्रावधान के तहत यह कार्यक्रम आयोजित कर किसानों का ऋण माफ किया गया। उन्होनें बताया कि लोक अदालत में पहुंचकर यही किसान कई तरह की परेशानियों का सामना करते हुए अपनी ऋण माफ करवाते है। किसानों की परेशानी को देखते हुए 150 किसानों का ऋण माफ किया गया। शाखा प्रबंधक ने बताया कि किसान देश की रीढ़ है अगर किसान की समस्या का समाधान नही किया जाता है तो किसानों को कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बैंक सदैव किसानों की परेशानी को दूर कर उनके हित के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य करता है जिससे लोगों का विश्वास बैंक के प्रति बढ़ता है। मौके पर बैंक कर्मी मनोज कुमार एवं अन्य लोग मौजूद रहे।

विकास के मुद्दे को लेकर पंचायत समिति का बैठक आयोजित किया

प्रात : किरण संवाददाता

बरियारपुर (मुंगेर)।अम्बेडकर भवन के सभागार मे विकाश के मुद्दे को लेकर पंचायत समिति का बैठक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का अध्यक्षता प्रखंड प्रमुख रुची रानी ने किया।इस अवसर पर 15 पंचायत समिति सदस्यों के साथ प्रखंड विकाश पदाधिकारी स्वेता कुमारी, करहरिया पश्चिमी पंचायत के मुखिया अशोक कुमार मंडल, करहरिया पुर्वी पंचायत के मुखिया नन्दलाल मंडल, करहरिया दक्षिणी पंचायत के मुखिया सह प्रदेश उपाध्यक्ष संजय कुमार सिंह, बरियारपुर दक्षिणी पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि बिनय कुमार गुड्डू,प्रखंड कृषी साउंड बैक प्रताप सिंह,बाल विकास परियोजना के महिला प्रवेक्षिका श्रृति सिंह, अंचल नाजीर संजय कुमार, प्रखंड कल्याण पदाधिकारी उपस्थित हो।सदन मे माहोल गर्म हो गया जब मुखिया संजय कुमार सिंह ने पी एच ई डी विभाग, एसबीपीडीएल खाद्यान्न सुरक्षा विभागों के पदाधिकारियों की उपस्थिति नदारत देख मुखिया द्वारा प्रखंड प्रमुख से जवाब तलब किया। तब प्रखंड प्रमुख रुची रानी ने प्रस्ताव को कलम बर्धन कर स्पष्टीकरण की मॉग किया गया।आम सदस्यों द्वारा सदस्य वालों कि संख्या नही होने के कारण कार्यवाही स्थगित करनी पड़ी।

राजद के पंचायती राज प्रकोष्ठ के प्रदेश सचिव बनने पर नरेश यादव को गिद्धौर के पंच मंदिर में स्वागत समारोह का आयोजन किया

राजद के कार्यकर्ता ने फूल माला पहनाकर स्वागत करते प्रदेश सचिव नरेश यादव

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर प्रखंड के रतनपुर पंचायत के थर्डघटिया गांव निवासी नरेश यादव को राजद पार्टी के द्वारा बड़ी जिम्मेदारी दी गयी नरेश यादव को राजद के पंचायती राज के प्रदेश सचिव बनाए जाने पर गिद्धौर के पंच मंदिर में राजद कार्यकर्ताओ के द्वारा समान समारोह आयोजित कर उन्हें स्वागत किया गया सामान समारोह की अध्यक्षता पूर्व मुखिया दिलीप रविदास के द्वारा किया गया इस मौके पर पंचायती राज के प्रदेश सचिव नरेश यादव को फूल के माला पहनकर स्वागत किया इस दौरान नरेश यादव ने कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि जिस तरह से लालू प्रसाद यादव ने सामाजिक न्याय की धाराओं को आगे बढ़ाया और विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव जी के द्वारा मुझे जो जिम्मेदारी दी गई है मैं उसे ईमानदारी पूर्वक निवाहन करूंगा साथी जमुई व पूरे प्रदेश में संगठन को मजबूत बनाने का हर संभव प्रयास करूंगा सामान समारोह में झाझा विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी राजेंद्र यादव, चकई के राजद के कद्दावर नेता विजय शंकर यादव, भूषण यादव, नरेश यादव, उपेन्द्र यादव,शेखावत अली, उपेंद्र यादव, लखन यादव ,रंजीत यादव, मुस्ताक अंसारी, प्रमोद यादव, सतनारायण यादव सहित दर्जनों राजद कार्यकर्ता मौजूद थे।

स्कूलों को ई-शिक्षा कोष पोर्टल पर देनी होगी मध्याह्न भोजन की जानकारी

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/गिद्धौरः- सरकारी प्रारंभिक स्कूलों में बच्चों को दिए जाने वाले मध्याह्न भोजन की जानकारी अब ई-शिक्षा कोष पोर्टल पर देनी होगी।वर्तमान में जिला शिक्षा कार्यालय की और से मोबाइल फोन से मध्याह्न भोजन की जानकारी ली जाती है। नई व्यवस्था के तहत सितंबर के अंतिम सप्ताह से ई-शिक्षा कोष पोर्टल पर प्रारंभिक स्कूलों को मध्याह्न भोजन से जुड़े डिटेल प्रतिदिन अपडेट करना होगा।जिला शिक्षा कार्यालय के अनुसार स्कूलों द्वारा फोन पर बेहतर रिस्पांस नहीं मिलने की वजह से पोर्टल के माध्यम से एमडीएम से जुड़ी जानकारी देने का निर्णय लिया गया है। हमेशा शिकायत आती थी कि प्रधानाध्यापक का मोबाइल बंद रहता है या वे रिसीव नहीं करते हैं।ई- शिक्षा कोष पोर्टल के माध्यम से स्कूलों के प्रधान को यह जानकारी देनी होगी कि कितने बच्चों ने मध्याह्न भोजन किया और उन्हें कैसा भोजन परोसा गया।

एक युवक ने अपनी मां, भाई- भाभी के साथ कि मारपीट, गंभीर रूप से घायल सास बहु को किया रेफर

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] थानाक्षेत्र के बैजला पंचायत स्थित बैजलाटांड गांव में जमीन विवाद को लेकर एक युवक ने अपनी बुजुंग मां, भाई व भाभी के साथ मारपीट की घटना को अंजाम दिया है। मारपीट की घटना की सूचना घायलों के द्वारा डायल 112 की पुलिस को दी गई जिसके बाद पुलिस टीम मौके पर पहुंची और सभी घायलों को उठाकर इलाज के लिए रेफरल अस्पताल लाया गया जहां डॉ.नबाब के द्वारा सभी घायलों का इलाज किया गया। घायल की पहचान बुजुंग महिला आनो देवी उसका बेटा जितेंद्र कुमार बहु रेणु देवी के रूप में हुई है। मारपीट की घटना में गंभीर रूप से घायल आनो देवी और रेणु देवी की स्थिति नाजुक रहने पर दोनो को बेहतर इलाज के लिए डॉक्टर ने सदर अस्पताल जमुई रेफर कर दिया। घायल जितेंद्र कुमार ने बताया कि मेरा छोटा भाई अजय जमीन को लेकर विवाद करते हुए घर से मां को भगा रहा था जिसको लेकर मेरी बुजुंग मां विरोध कर रही तो अजय, उसकी पत्नी, बेटा एवं अन्य चार से पांच लोग मेरी मां के साथ लोहे के रॉड, लाठी डंडा से मारपीट करने लगा और जब मै और मेरी पत्नी बचाने के लिए गए तो वे लोग हमदोनो के साथ भी मारपीट करते हुए हमतीनों को घायल कर दिया। डायल 112 टीम के पुलिस पदाधिकारी ने बताया कि जब हमलोग पहुंचे तो मौके स्थल अजय एवं अन्य लोग फरार था।

राष्ट्रीय लोक अदालत के संबंध में दावा एवं बीमा विवाद के शाखा प्रबंधक व अधिवक्ता के साथ बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर (बिहार)। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकार नई दिल्ली एवं बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार पटना के निदेर्शानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकार मुंगेर के तत्वाधान में एडीआर भवन परिसर में आगामी 14 सितंबर 2024 को पूर्वाह्न 10: 30 बजे से राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाना सुनिश्चित किया गया है। इस सम्बन्ध में सोमवार को जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार मुंगेर के निदेर्शानुसार सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकार दिनेश कुमार की अध्यक्षता में बीमा वाद के शाखा प्रबंधक नेशनल एवं ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी तथा दावा एवं बीमा वाद के अधिवक्ताओं के साथ बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में सचिव द्वारा उपस्थित सदस्यों को अधिक से अधिक पक्षकारों को नोटिस निर्गत करने का निर्देश दिया गया हैं जिससे कि आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत के दिन अधिक से अधिक वादों का निष्पादन हो सके। उपस्थित सदस्यों को निर्देश दिया गया कि वह अपने-अपने स्तर से प्रचार प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक लोग जागरुक हो सके। बैठक में उपस्थित सदस्यों द्वारा बताया गया कि पिछले राष्ट्रीय लोक अदालत की अपेक्षा इस बार अधिक से अधिक वादों का निष्पादन किया जाएगा।

बच्चों की पढ़ाई जारी रखने में मदद करेंगे टोला सेवक मैट्रिक-इंटर के अनुत्तीर्ण छात्रों को करेंगे चिन्हित

बी-बॉस के माध्यम से विद्यार्थियों को कराएंगे पंजीकृत

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। शिक्षा सेवक के रूप में कार्य करने वाले टोला सेवक व तालिमी मरकज स्वयंसेवक अब बच्चों की पढ़ाई को जारी रखने में मदद करेंगे। ये दोनों ही अब मैट्रिक और इंटर की अनुत्तीर्ण छात्रों को चिन्हित करने का कार्य भी करेंगे। अनुत्तीर्ण छात्रों को यह बिहार मुक्त विद्यालयी शिक्षण एवं परीक्षा बोर्ड में पंजीकृत कराने का कार्य करेंगे।शिक्षा विभाग की ओर से टोला सेवकों और तालिमी मरकज स्वयंसेवकों को एक नई जिम्मेदारी दी गई है। कोई भी ऐसा विद्यार्थी जो मैट्रिक और इंटर की परीक्षा में पास हुआ है वह आगे की पढ़ाई ना छोड़े इसके लिए शिक्षा विभाग की ओर से यह पहल की गई है। टोला सेवक अब तक बच्चों को उनके घर से स्कूल तक पहुंचाने का काम करते थे। अब तक ये गांव के विभिन्न टोलों में जाकर यह देखते थे कि हर घर के स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे स्कूल जा रहे या नहीं।

जो बच्चे स्कूल में नामांकन लेने के बावजूद भी रोजाना स्कूल नहीं जाते उन्हें नियमित स्कूल पहुंचाने और स्कूलों में उनकी उपस्थिति बढ़ाने की जिम्मेदारी टोला सेवकों की होती थी। तो वहीं अति पिछड़े मुस्लिम समुदाय के बच्चों की शिक्षा सुनिश्चित करने का काम तालिमी मरकज द्वारा किया जाता है। मालूम हो कि राज्य में करीब 27 हजार टोला सेवक है, जिनकी मदद से रोजाना बच्चों को स्कूल पहुंचा जाता है। एक टोला सेवक पर होंगे पांच छात्र एक गांव में एक टोला सेवक पर पांच-पांच छात्रों की जिम्मेदारी दी गई है। एक टोला सेवक पांच छात्रों को चिन्हित करने का कार्य करेंगे। उन्हें बी-बॉस के माध्यम से पंजीकृत कराया जाएगा।

फॉगिंग मशीन बना शोभा की वस्तु, नहीं हो रहा है इस्तेमाल

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। नवगठित नगर पंचायत संग्रामपुर को स्वच्छ एवं स्वस्थ रखने के लिए विभाग के द्वारा लाखों की लागत से फागिंग मशीन एवं साफ सफाई के सामान की खरीदारी की गई हैं। आए दिन जिला से डेंगू के मरीज की संख्या में वृद्धि की खबर भी देखी जा रही है। बावजूद इसके फॉगिंग मशीन स्थानीय प्रखंड कार्यालय की शोभा बढ़ा रही है। लेकिन दवा का छिड़काव करने में उसका उपयोग नहीं हो पा रहा है। नगर पंचायत के गठन के 02 साल बीत जाने के बावजूद विकास के एक भी कार्य नहीं हुआ है जिससे हर वार्ड में नाली गली की समस्या से सड़कों पर जल जमाव और नाले के पानी सड़क पर बहते रहता है। लगभग सभी वार्डों में जल निकासी की व्यवस्था नहीं हैं। ऐसे में बरसात के दिनों में कीड़े मकोड़े के साथ साथ मच्छरों का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। लगभग तीन माह पूर्व होगी मशीन की खरीदारी नगर पंचायत संग्रामपुर में की गई है बरसात का मौसम बीतने को है लेकिन अभी तक होगी मशीन का श्री गणेश नगर पंचायत संग्रामपुर में नहीं हो पाया है। एक और सरकार लगातार स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरुक करते हुए गली मोहल्ले को साफ रखने का अपील कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर सरकार के राजस्व से लाखों की राशि खर्च होने के बावजूद भी साफ सफाई के उपकरण का इस्तेमाल नहीं होना दुर्भाग्यपूर्ण है। दिन-प्रतिदिन मच्छरों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि से नगर पंचायतवासियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं दूसरी और नगर पंचायत प्रशासन साफ सफाई के नाम पर खाना पूर्ति कर रही है। इससे साफ जाहिर होता है कि नगर पंचायत प्रशासन अपने कार्य के प्रति लापरवाह है। इस संदर्भ में कार्यपालक पदाधिकारी से संपर्क करना चाहा लेकिन उन्होंने कॉल रिसीव नहीं किया ।

मुंगेर विश्वविद्यालय मुंगेर की अंगीभूत ईकाई डीएसएम कॉलेज झाझा के छात्र, छात्राओं ने परीक्षा नियंत्रक को सौंपा ज्ञापन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] छात्र-छात्राओं ने कहा कि मुंगेर विश्वविद्यालय मुंगेर द्वारा आयोजित सत्र 23-27 के सेमेस्टर 2 की परीक्षा पेपर पर्सनैलिटी डेवलपमेंट एंड कम्युनिकेशन के प्रश्न पत्र सिर्फ अंग्रेजी में आए थे। प्रश्न पत्र का हिंदी में अनुवाद नहीं होने की वजह से हम जैसे हजारों हिंदी माध्यम से तैयारी करने वाले छात्रों का परीक्षा बहुत खराब गया है। परीक्षा खराब जाने की वजह से हमारा पूरा रिजल्ट खराब आएगा। यह जानकर हम सभी छात्र - छात्राएं बहुत तनाव में है। जबकि यह घटना विश्वविद्यालय की गलती की वजह से हुई है विश्वविद्यालय इस गलती को सुधारते हुए इस परीक्षा को पुनः आयोजित करें मौके पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद झाझा के नगर मंत्री हरिनंदन प्रजापति ने कहा कि इस प्रकार की भूल विश्वविद्यालय प्रशासन पर बहुत बड़ा सवाल पैदा करती है,क्या विश्वविद्यालय प्रशासन हिंदी भाषी के विरोधी है, यह छात्रों के भविष्य के लिए खतरा है इस प्रकार से प्रताड़ित होने से छात्र-छात्रा हताश है ।विश्वविद्यालय प्रशासन इस पर त्वरित कार्रवाई करें तथा इस परीक्षा को पुनः हिंदी माध्यम से भी आयोजित करें न्याय उचित कार्रवाई नहीं करने पर विद्यार्थी परिषद ऐसे कार्यों के खिलाफ आन्दोलन करेगी। मौके पर नगर कार्यकारिणी सदस्य सतीश िसन्हा, राजीव कुमार, सुरुचि कुमारी, रिया कुमारी, शिवानी कुमारी,विद्या कुमारी, पूजा कुमारी, आरती कुमारी आदि उपस्थित रहें।

नगर क्षेत्र में कूड़े कचरे का अंबार और सड़कों पर बेतरतीब ढंग से गंदगी पसरी हुई है

हवेली खड़गपुर (कोर्ट) सोमवार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद नगर इकाई हवेली खड़गपुर के कार्यकताओं ने नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी विशाल मोहन को एक ज्ञापन सौंपा। जानकारी देते हुए एबीवीपी के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य शुभम केसरी ने बताया कि अभाविप छात्र हितों के साथ-साथ समाजहित एवं राष्ट्रहित के लिए भी अग्रसर रहती है इसलिए परिषद के कार्यकताओं ने नगर की समस्या को लेकर नगर परिषद के कार्यपालिका को ज्ञापन दिया। उन्होंने बताया कि नगर परिषद हवेली खड़गपुर में जहां तहां कूड़े-कचरे का अंबार और सड़कों पर बेतरतीब ढंग से गंदगी पसरी हुई है। यह हवेली खड़गपुर नगर परिषद क्षेत्र की पहचान बन रही है।अगर यही स्थिति बनी रही तो लोगों को खासा परेशानी उठाना पड़ेगा। चार दिन से साफ सफाई और कूड़ा नहीं उठने की वजह से लोगों में अब संक्रामक बीमारी फैलने का भय सताने लगा है।

बढ़ते अपराध के आगे नतमस्तक है जिला प्रशासन : सपा

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर (बिहार) जिले की लगातार बिगड़ती विधि व्यवस्था एवं बढ़ते अपराध जदयू सरकार की कार्यप्रणाली और अकर्मण्य व्यवस्था का चीख चीख कर पोल खोल रही है और सांसद विधायक एवं जिले के आला अधिकारी मुकदर्शक बने हैं उक्त बातें समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष पप्पू यादव ने जिले में बेतहाशा बढ़ते अपराधिक घटनाएं पर विफरते हुए कहा। श्री यादव ने कहा की क्षेत्र का ये आलम है की अपराधी तो अपराधी पुलिस भी अपराधी की भूमिका में आ गए जिससे ऐसा प्रतीत होता है की माफिया प्रशासन गठजोड़ के आगे भाजपा जदयू की सरकार नतमस्तक है जिले में धरहरा प्रखंड के सरपंच पुत्र की हत्या महिला और बच्ची के साथ दुष्कर्म , वासुदेव पुर थाना क्षेत्र में खुलेआम गोली बारी की घटना सिंघीया में दरोगा नौवागढी क्षेत्र में युवक की हत्या तारापुर में राजनीतिक सामाजिक कार्यकर्ता की हत्या ईस्ट कॉलोनी थाना क्षेत्र में अपराधी और भू माफिया की दबंगई इसके ज्वलंत उदाहरण है जो जिले की पुलिसिंग व्यवस्था और सुशासन के दावा की हवा निकालने के लिए प्रर्याप्त है और कैंडल जुलूस निकालने वाले लोग अपने क्षेत्र में हो रहे दुष्कर्म और हत्या पर मौन है श्री यादव ने कहा कि ईमानदार डीआईजी और पुलिस प्रमुख के पदस्थापना के बाबजूद बढ़ते अपराध काफी चिंतनीय है अगर यही आलम रहा और बिगड़ती विधि व्यवस्था पर डीआईजी और एसपी संज्ञान नहीं लेते हैं तो समाजवादी पार्टी जिले में बढ़ते अपराध के विरुद्ध सड़क पर उतारेगी ।

अभाविप कार्यकर्ता ने वृक्षारोपण और नॉर्थ नरगंजो के जंगलों में ड्रोन से सीड बॉल गिराने की मांग की

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] झाझा वन प्रक्षेत्र के मुड़ली पहाड़ी पर वृक्षारोपण और नॉर्थ नरगंजो के जंगलों में ड्रोन के माध्यम से सीड बॉल गिराने की मांग अभाविप कार्यकर्ता एवं पर्यावरण प्रेमी कार्तिक कुसुम यादव ने की है। नरगंजो, झाझा के निवासी और अभाविप कार्यकर्ता कार्तिक कुसुम यादव ने वन प्रमंडलीय पदाधिकारी, जमुई को लिखे पत्र में इस दिशा में आवश्यक कदम उठाने का आग्रह किया है। कार्तिक कुसुम यादव ने बताया कि टहवा गांव के निकट स्थित मुड़ली पहाड़ी लंबे समय से खाली पड़ी है। उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र पर्यावरण संरक्षण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है और वृक्षारोपण से

न केवल हरित आवरण में वृद्धि होगी, बल्कि जैव विविधता और जलवायु संतुलन में भी सुधार होगा। यादव ने नॉर्थ नरगंजो के जंगलों में ड्रोन के माध्यम से फलदार वृक्षों के बीज गिराने का प्रस्ताव रखा है, जिससे ग्रामीणों को आर्थिक लाभ मिलेगा और वे जंगल संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभा सकेंगे। उनके अनुसार, इस पहल से स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में मदद मिलेगी। कार्तिक कुसुम यादव ने वन प्रमंडलीय पदाधिकारी से अपील की है कि मुड़ली पहाड़ी पर वृक्षारोपण और ड्रोन से सीड बॉल गिराने की योजना को प्राथमिकता दी जाए, जिससे पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीणों की आजीविका में सुधार के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। इस महत्वपूर्ण पहल से न केवल पर्यावरणीय संरक्षण को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि स्थानीय समुदायों को भी लाभ होगा, जिससे क्षेत्र में समग्र विकास को बल मिलेगा।

तारापुर के समीर मधुकर बने जनसुराज के युवा जिलाध्यक्ष

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर (मुंगेर 2 सितंबर) ।जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर के द्वारा आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर नजर 2025 में मुंगेर जिला संगठन विस्तार को लेकर यादव एवं कुशवाहा बाहुल्य क्षेत्र तारापुर से पूर्व मुखिया पुत्र समीर मधुकर लौना को युवा जिला अध्यक्ष के रूप में दायित्व सौंपा गया । तो वहीं दूसरी ओर इसी विधानसभा क्षेत्र से धानुक समाज से आनेवाले पूर्व मुखिया सह तारापुर नगर पंचायत के मुख्य पार्षद प्रतिनिधि जोगेंद्र मंडल को जिला अध्यक्ष बनाए जाने पर तारापुर सहित आस पास के कई सामाजिक संगठन से जुड़े लोगों सहित जनसुराज के सदस्यों ने संस्थापक प्रशांत किशोर के द्वारा लिए गए इस फैसले का हृदय की गहराई से स्वागत योग्य फैसला बताया है । गौरतलब है कि सोमवार को युवा जिला अध्यक्ष समीर मधुकर ने प्रेसवार्ता कर बताया कि जिस आस्था , विश्वास, समर्पण, और सुचिता , के साथ जनसुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर जी ने मुझे जो जिम्मेदारी सौंपा है इसके लिए मैं अपने हृदय की गहराई से उनका आभार प्रकट करता हूं। आगे बताया कि आने वाले विधानसभा के चुनाव में जनसुराज का अपना विधायक इस क्षेत्र से कैसे हो इसकी तैयारी क्षेत्र में जोर शोर से शुरू कर दी गई है। आगे इन्होंने जिला कार्यवाहक समिति संरक्षक के तौर पर नवनियुक्त , संग्रामपुर प्रखंड के राजपूत बाहुल्य गांव नवगांय निवासी अवकाश प्राप्त प्राचार्य रहे अभिभावक स्वरूप पुष्पेंद्र कुमार सिंह के प्रति भी युवा जिला अध्यक्ष ने उनसे मिलकर उनका आभार प्रकट किया है । इन्होंने पत्रकारों को बताया कि समय आने पर इस क्षेत्र में जनसुराज जाति धर्म से ऊपर उठकर सबसे मजबूत संगठन के रूप में जाना जाएगा । अंत में बताया कि जो दायित्व मुझे मिला है उसके तहत बिना किसी भेदभाव का संगठन हित में संगठन की मजबूती एवं संगठन विस्तार के लिए आत्मविश्वास के साथ मजबूती से काम करूंगा । इस मौके पर महासचिव हिमांशु कुंवर मुख्य प्रवक्ता पूर्व मुखिया शशि कुमार सुमन अफजल नगर महिला जिलाअध्यक्ष रवीना देवी ,तारापुर खड़गपुर अनुमंडल महिला अध्यक्ष पूर्व मुखिया मीणा देवी, शाहिद पार्टी के सैकड़ो पदाधिकारी मौजूद थे ।

सम्पादकीय

हरियाणा में अगर कांग्रेस को कोई हराएगा तो कांग्रेस ही !

कांग्रेसी इसी ठसक में रहते हैं। इसे केवल हाईकमान तोड़ सकता है। हरियाणा वह मौका है जहां वह सख्त मैसेज दे कि गुटबाजी करने वाला कोई नेता बख्शा नहीं जाएगा। यह चुनाव कांग्रेस पार्टी लड़ रही है। कोई गुट नहीं। कांग्रेस की किसान समर्थक नीतियों, छोटे व्यापारी दुकानदार समर्थक नीतियों, युवाओं को नौकरी देने और हरियाणा के विकास के लिए यह चुनाव हो रहा है। हरियाणा कांग्रेस ने ही बनाया था 1966 में। नहीं वहां भाजपा सरकार ने बहुत बुरा किया। इसी का परिणाम है कि वहां कांग्रेस की स्थिति अच्छी मानी जा रही है। लेकिन सामने जीत देखकर राज्य के कांग्रेसी नेता बावले हो रहे हैं। सब को मुख्यमंत्री पद दिख रहा है और मुख्यमंत्री बनने के लिए अपने ज्यादा से ज्यादा लोगों को लड़ाना चाहते हैं।

कांग्रेस हाईकमान यह मैसेज देने में लगातार असफल साबित हो रहे हैं कि वहां चुनाव कांग्रेस पार्टी लड़ रही है और बीजेपी के कुशासन के खिलाफ जो राहुल गांधी का अभियान रहा उसी की वजह से वहां कांग्रेस की हालत अच्छी दिख रही है। किसी क्षत्रप की वजह से वहां लोग वोट नहीं देंगे। वोट मिलेंगे कांग्रेस की किसान समर्थक नीति, अग्निवीर के खिलाफ राहुल की आवाज, महंगाई, बेरोजगारी, सरकारी शिक्षा चिकित्सा खत्म करने, छोटे व्यापारियों के उद्योग-धंधे ठप्प होने, राज्य का गौरव पहलवान बेटियों के साथ नाइंसाफी होने जैसे मुद्दों पर। राहुल के नाम पर।

कांग्रेस जब तक यह मैसेज देने में कामयाब नहीं होगी तब तक क्षत्रप अपने आप को तीस मार खां बताकर आपस में लड़ते रहेंगे। कांग्रेस राजस्थान का उदाहरण याद नहीं कर रही है। वहां केवल और केवल गुटबाजी की वजह से वह हारी। यह संयोग ही है कि वहां के इन्चार्ज होने के नाते इस गुटबाजी को बहुत झेले अजय माकन अब हरियाणा की स्क्रिनिंग कमेटी के अध्यक्ष हैं। और वे पिछले कई दिनों से लगातार हरियाणा के नेताओं और वहां के चुनाव लड़ने के इच्छुक लोगों से मिल रहे हैं। सोमवार 2 सितंबर को कांग्रेस की टिकट वितरण करने वाली सर्वोच्च समिति सीईसी (सेन्ट्रल इलेक्शन कमेटी) की बैठक है। उससे पहले का काम स्क्रिनिंग कमेटी करती है। हर विधानसभा क्षेत्र के तीन या चार महत्वपूर्ण उम्मीदवारों का पैनल बनाने का। स्क्रिनिंग कमेटी का अध्यक्ष राज्य के बाहर का होता है और माना जाता है कि वह गुटबाजी से अप्रभावित रहेगा।

हालांकि यह मजेदार है कि इसी हरियाणा में यही गुटबाजी खुद माकन को दो साल पहले राज्यसभा हरा चुकी है। राहुल गांधी के कैन्डिडेट के तौर पर उनकी पहचान थी। मगर किरण चौधरी ने इसकी परवाह न करके माकन के खिलाफ वोट दिया। उस समय कांग्रेस का ही एक गुट किरण चौधरी को बचाने में लग गया। कांग्रेस की अनुशासन समिति ने उन्हें कारण बताओ नोटिस दिया। उसे दबा दिया गया। यहां तक कि माकन की आवाज को भी। राहुल गांधी की यही कमजोरी उन्हें सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाती है। उन्हें बोलना चाहिए था। हरियाणा में यह दूसरा कांग्रेस उम्मीदवार हारा था। इससे पहले प्रख्यात वकील और के आनंद सोनिया गांधी के उम्मीदवार थे। इस समय कांग्रेस में जैसा जलवा अभिषेक सिंघवी का है। वैसा ही कभी आर के आनंद का था। वकालत का। मगर इन कांग्रेसियों ने तो हिमाचल में सिंघवी को भी हरवा दिया। पार्टी को नुकसान करने वाले ऐसे लोगों के खिलाफ अगर एक बार सख्त मैसेज चला जाए तो यह नजीर बन जाता है। किरण चौधरी को अगर उस समय ही पार्टी से निकाल दिया गया होता तो आज बीजेपी भी उन्हें नहीं लेती। मगर अब बीजेपी ने किरण चौधरी को राज्यसभा सदस्य दे दिया। बेटी को विधानसभा लड़वा रही है। लेकिन इसके बाद भी कांग्रेसी यह मानने को तैयार नहीं हैं कि किरण चौधरी ने कांग्रेस के साथ विश्वासघात किया। उनके भाजपा ज्वाइन करने के बाद भी कुमारी शैलजा और रणदीप सुरजेवाला ने उनके समर्थन में बयान दिए।

भारत विश्व में सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बना रहेगा

प्रहलाद सबनानी

वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही (अप्रेल-जून 2024) में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर के आंकडें जारी कर दिए गए हैं एवं हर्ष का विषय है कि भारत अभी भी विश्व में सबसे तेज गति से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बनी हुई है। वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 6.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। जबकि वित्तीय वर्ष 2023-24 की प्रथम तिमाही (अप्रेल-जून 2023) में 8.2 प्रतिशत की वृद्धि दर दर्ज हुई थी तथा पिछली तिमाही (जनवरी मार्च 2024) में वृद्धि दर 7.8 प्रतिशत की रही थी। भारतीय रिजर्व बैंक ने अप्रेल-जून 2024 तिमाही में 7.1 प्रतिशत की वृद्धि दर का अनुमान लगाया था। पिछले लगातार 5 तिमाही के दौरान भारत के सकल घरेलू उत्पाद में यह सबसे कम वृद्धि दर है। हालांकि चीन में 4.7 प्रतिशत की वृद्धि दर दर्ज हुई है तथा विश्व की अन्य बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में वृद्धि दर भारत की तुलना में अभी भी बहुत कम बनी हुई है।

भारत में वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद में कम हुई वृद्धि दर के पीछे कुछ महत्वपूर्ण कारण बताए गए है। प्रथम तो इस तिमाही में लोक सभा चुनाव सम्पन्न हुए हैं जिसके चलते आम जनता ने अपने खर्चे को रोक रखा था। साथ ही, लोक सभा चुनाव के समय केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा कोई भी बड़ा निर्णय नहीं लिया जा सकता है जिसके चलते सरकारों को अपने खर्चों को नियंत्रण में रखना होता है, इससे देश की विकास दर पर प्रभाव पड़ता है। दूसरे, इस तिमाही के दौरान देश में अत्यधिक गर्मी के चलते पर्यटन एवं कृषि के क्षेत्र में विकास दर अत्यधिक कम हो गई है। कृषि के क्षेत्र में वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही में वृद्धि दर केवल 2 प्रतिशत की रही है जो पिछले वर्ष की इसी तिमाही में 3.7 प्रतिशत की रही थी। परंतु, वित्तीय वर्ष 2024-25 की द्वितीय तिमाही में मानसून ने लगभग पूरे देश में तेज गति पकड़ ली है अतः विभिन्न फसलों के बुआई के क्षेत्र में अच्छी वृद्धि दर्ज हुई है इसलिए वित्तीय वर्ष 2024-25 के द्वितीय एवं तृतीय तिमाही (जुलाई-सितम्बर एवं अक्टोबर-दिसम्बर 2024) में कृषि क्षेत्र में वृद्धि दर के आकर्षक रहने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है। खरीफ मौसम की फसल के साथ ही अब रबी मौसम की फसल में भी अच्छी वृद्धि दर रहने की सम्भावना है क्योंकि देश के विभिन्न जलाशयों में पानी के संचयन में भारी वृद्धि दर्ज हुई है, जिसे कृषि क्षेत्र में सिंचाई के लिए उपयोग किया जा सकेगा। इन्हीं कारणों के चलते वैश्विक क्रेडिट रेटिंग एजेन्सी मूडीज ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में भारत के आर्थिक विकास दर के अपने अनुमान को बढ़ाकर 7.2 प्रतिशत कर दिया है, मूडीज ने पहिले यह अनुमान 6.8 प्रतिशत का लगाया था।

विनिर्माण इकाईयों द्वारा किए गए उत्पादन में अप्रेल-जून 2024 की तिमाही में 7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है जबकि पिछले वर्ष की इसी तिमाही में 5.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई थी। निर्माण के क्षेत्र में 8.6 प्रतिशत एवं सेवा के क्षेत्र में 7.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। ट्रेड, ट्रान्स्पोर्ट, होटल, टेलिकॉम की ग्रोथ 5.7 प्रतिशत की रही है। विनिर्माण, निर्माण एवं कोर इंडस्ट्री को मिलाकर बनने वाले सेकेण्डरी सेक्टर में वृद्धि दर बढ़ी है। वित्तीय वर्ष 2023-24 की प्रथम तिमाही में यह 5.9 प्रतिशत की रही थी जो वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही में बढ़कर 8.4 प्रतिशत की हो गई है। यह वृद्धि दर देश में निजी उपभोग के बढ़ने की ओर इशारा कर रही है।

विश्व में बहुत लम्बे समय से चल रहे दो युद्धों के बीच भारत की उक्त आर्थिक विकास दर अच्छी विकास दर ही कही जाएगी। एक युद्ध तो रूस यूक्रेन के बीच चल रहा है एवं दूसरा इजराईल एवं हम्मास के बीच चल रहा है। इजराईल के साथ युद्ध में तो लेबनान एवं ईरान भी कूदने को तैयार बैठें हैं। साथ ही, यूरोपीयन देशों में कुछ देशों की आर्थिक विकास दर में कमी होती दिखाई दे रही है। जापान एवं अमेरिकी अर्थव्यवस्थाओं में भी विकास दर में कमी आंकी गई है। जर्मनी एवं चीन भी अपनी अपनी अर्थव्यवस्थाओं में वृद्धि दर को बढ़ाने हेतु संघर्ष करते हुए दिखाई दे रहे हैं। जापान एवं जर्मनी में यदि विकास की रफ्तार कम होती है एवं भारत की आर्थिक विकास दर यदि इसी रफ्तार से आगे बढ़ती है तो शीघ्र ही भारत, जापान एवं जर्मनी की अर्थव्यवस्थाओं को पीछे छोड़ते हुए विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। अभी भारत विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और जापान एवं जर्मनी ही भारतीय अर्थव्यवस्था से थोड़ा आगे बने हुए हैं।

नशे की खिलाफ जंग कितनी कामयाब होगी ?

शाह ने कहा कि इससे उत्पन्न होने वाला धन आतंकवाद और नक्सलवाद को बढ़ावा देता है और अर्थव्यवस्था को भी कमजोर करता है। यदि दृढ़ निश्चय और रणनीति के साथ बढ़ा जाए तो इस खतरे के खिलाफ लड़ाई जीत सकते हैं। गृह मंत्री ने कहा कि मादक पदार्थों से होने वाले नुकसान व अवैध कारोबार को खत्म करने के लिए चार सूत्र दिए और कहा कि हमें मादक पदार्थों की पहचान करने, अवैध कारोबारियों के नेटवर्क को नष्ट करने, अपराधियों को हिरासत में लेने और नशे के आदी लोगों के पुनर्वास पर जोर देना होगा। लेकिन जितनी सरलता से यह बात कही है यह उतनी ही मुश्किल है चूंकि नशे का कारोबारियों ने बहुत बडे स्तर पर अपना जाल बिछा दिया। आज मादक पदार्थ गली-गली में इतनी आसानी से मिल रहे हैं जैसे परचून की दुकान पर टॉफी-बिस्कुट। मादक पदार्थ बहुत तेजी से युवाओं को निगल रहा है। आज युवाओं की पार्टी में चरस, गांजा, अफीम, हरोईन व ब्राउन शुगर के अलावा कई प्रकार के नशे होना बेहद आम बात हो गई।

योगेन्द्र सोनी

पहली बार केन्द्र सरकार ने नशे के खिलाफ कोई बयान दिया है और एक्शन लेने की बात कही है। मामला यह है कि छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से मादक पदार्थ के अवैध कारोबारियों के खिलाफ अभियान का आह्वान करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि इससे निपटने के लिए नेटवर्क पर प्रहार करना होगा। शाह ने कहा कि इससे उत्पन्न होने वाला धन आतंकवाद और नक्सलवाद को बढ़ावा देता है और अर्थव्यवस्था को भी कमजोर करता है। यदि दृढ़ निश्चय और रणनीति के साथ बढ़ा जाए तो इस खतरे के खिलाफ लड़ाई जीत सकते हैं। गृह मंत्री ने कहा कि मादक पदार्थों से होने वाले नुकसान व अवैध कारोबार को खत्म करने के लिए चार सूत्र दिए और कहा कि हमें मादक पदार्थों की पहचान करने, अवैध कारोबारियों के नेटवर्क को नष्ट करने, अपराधियों को हिरासत में लेने और नशे के आदी लोगों के पुनर्वास पर जोर देना होगा। लेकिन जितनी सरलता से यह बात कही है यह उतनी ही मुश्किल है चूंकि नशे का कारोबारियों ने बहुत बडे स्तर पर अपना जाल बिछा दिया। आज मादक पदार्थ गली-गली में इतनी आसानी से मिल रहे हैं जैसे परचून की दुकान पर टॉफी-बिस्कुट। मादक पदार्थ बहुत तेजी से युवाओं को निगल रहा है। आज युवाओं की पार्टी में चरस, गांजा, अफीम, हरोईन व ब्राउन शुगर के अलावा कई प्रकार के नशे होना बेहद आम बात हो गई। यह सभी मादक पदार्थ पार्टी के पर्यायवाची बन चुके हैं। स्कूल व कॉलेज की बच्चों में इस नशे का क्रेज लगातार पढ़ रहा है। कॉलेज में लडके व लडकियां जमकर इस तरह के नशे कर रहे हैं। हम भली-भांति देखते आ रहे हैं कि नशे की वजह से हर रोज हजारों घर बर्बाद हो रहे हैं। यदि इस पटकथा के निमार्ता की बात करें तो वह है पुलिस-प्रशासन हैं चूंकि इस तरह के मादक पदार्थ बिना प्रशासन के नही बिक सकता। सूत्रों के अनुसार मादक पदार्थ बिकवाने की अनुमति के पुलिस लाखों रुपये लेती है। यह मादक पदार्थ बेचने वाले एक कॉल पर डिलीवरी देने आ जाते हैं और खुला खेल प्रशासन की नाक के नीचे चलता है। विशेषज्ञों के अनुसार नशा मनुष्य के सोचने समझने की शक्ति के साथ ही पूरे शरीर पर प्रहार करता है। इसका प्रहार ऐसा होता है कि धीरे-धीरे शरीर ही नष्ट हो जाता है। यह एक ऐसा धीमा जहर होता है कि लोग जब तक इसके दुष्परिणामों को समझ पाते हैं तब तक उनका अंत हो जाता है। नशा कई रूपों में किया जाता हैं शराब, तंबाकू, पाउच व आर्टिफिशल मादक पदार्थ आदि सभी नशे की श्रेणी में आते हैं। आज नशे का सेवन भारत में सबसे अधिक होता है। लाखों संस्थाए भले ही नशे पर प्रतिबंध को लेकर जागरुक कार्यक्रम करती हो लेकिन वास्तव में यह दुनिया भर में एक वर्ष में 54 लाख जानें ले रहा है। दुनिया में एक अरब लोग तंबाकू का सेवन करते हैं। भारत की बात करें तो सालाना 9 लाख मौतें तंबाकू व लगभग चार लाख मौतें चरस, गांजा, अफीम व हेरोईन से होती हैं। दस में से एक मौत में तंबाकू वजह बनती है। वहीं विश्व में सभी तरह के नशे को लेकर सेवन में भारत का दूसरा स्थान है। यह बेहद पीढ़ा देने वाला आंकडा हैं। विशेषज्ञों के अनुसार 2030 तक 80 लाख लोगों की नशे की वजह से मौतें होंगी। डब्लूएचओ द्वारा वर्ष 1988 से दुनिया को नशे के घातक दुष्परिणामों से सचेत करने के लिए 31मई को विश्व तंबाकू दिवस मनाया जाता है। बावजूद इसके लोग जागरूक होने की बजाय नशे के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। इसके अलावा कॉरपोरेट जगत में सिगरेट के अलावा बडे स्तर के नशे करना एक स्टेटस सिंबल बन गया। जैसे आज से लगभग दशक भर पूर्व लोग सिगरेट पीने के लिए एक-दूसरे का कहते थे चल सिगरेट पीने चलें लेकिन अब कहते हैं कि चल माल फूंकने चले। अब चिंता का विषय यह बनता जा रहा है कि स्कूल व कॉलेज की बच्चे नशे करने लगे। नशे के क्षेत्र में हर रोज परिस्थितियां विपरीत होती जा रही हैं। बीते दिनों भारत में एक पाकिस्तानी नौका से छह सौ करोड़ मूल्य की हेरोइन पकड़ी गई थी जिससे पाकिस्तान के नशा माफियाओं को करोड़ों रुपयों का फायदा होता और वह पैसा आतंकवाद में प्रयोग होता। जैसा कि भारत में कुछ मादक पदार्थ गैर-कानूनी तरीके से बाहरी देशों से आते हैं। दरअसल, कई देशों के सत्ता प्रतिष्ठानों की मिलीभगत से नार्को-आतंकवाद के एक बड़े पैटर्न को अंजाम दिया जा रहा है। निश्चित तौर पर यह साजिश हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये एक गंभीर चुनौती है। पुरानी घटनाओं के अनुसार जम्मू-कश्मीर व पंजाब में नशे के कारोबार से कमाया हुआ पैसा आतंकवाद में लगता आया है। इस तरह का पैसा आतंकवादियों को हथियार व पैसा उपलब्ध कराता है। बीती मई में भी नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो और नौसेना के साझे मिशन के जरिये केरल तट पर ढाई हजार किलोग्राम नशीला पदार्थ बरामद किया गया था। जिसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत पंद्रह हजार करोड़ रुपये बतायी गई थी। यह हमारे देश में बरामद अब तक की सबसे बड़ी नशे की खेप थी। इसके अलावा गुजरात के तट पर 150 किलो ड्रग्स ले जा रही एक नौका को जब जब्त किया गया तो छह पाकिस्तानी चालक दल के सदस्यों को गिरफ्तार किया गया था। इसी तरह फरवरी में पोरबंदर तट पर पांच विदेशी नागरिकों को चरस व 3300 किलोग्राम नशीले पदार्थों के साथ पकड़ा गया था। दरअसल, इस नशे के कारोबार की शुरूआत अक्सर अफगानिस्तान से होती है, जहां अफीम व हेरोइन का बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है। बहरहाल, केन्द्र सरकारी की ओर नशे माफियाओं पर नकेल कसना एक बेहतर कदम है लेकिन धरातल इसमें काम करने की जरूरत है चूंकि विभाग चाहेगा तो यह बेहद सरल अन्यथा इस प्रक्रिया बहुत जटिल है। जटिल इसलिए कहा जा रहा है कि नशे के सौदागर सिस्टम को इतना ज्यादा पैसा ऑफर करते हैं कि वह मना नही कर पाता। इस खेल में पैसा बहुत है जिसमें शासन-प्रशासन के बडे-बडे लोग शामिल है यदि सही से जांच की जाए तो न जाने कितने बड़े नामों के खुलासे हो सकते हैं। इसलिए इस तंत्र को भेदना आसान नही होगा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार है)

सत्ता का गुलाम आखिर कौन ?

राकेश अचल

> 52 साल के योगी जी ने विमर्श के लिए ये विषय हालांकि हवा में उछाला है, लेकिन ये जरूरी विषय है कि -आखिर सत्ता का गुलाम है कौन ? योगी ने आदित्यनाथ ने चंदौली में एक कार्यक्रम में कहा कि कोई योगी या संत सत्ता का गुलाम नहीं हो सकता है. उन्होंने कहा, संत समाज को एकजुट करते हैं। पूरे समाज को एकसाथ जोड़कर संत चलता है। योगी ने यह बातें अघोराचार्य बाबा कीनाराम की जन्मस्थली पर आयोजित 425 अवतरण समारोह को संबोधित करते हुए कही। योगी से बहुत साल पहले संत कुम्भनदास ने यही बात कही थी। कुम्भनदास किसान थे, संत थे और उस समय के संत थे, जब संत होना कठिन काम था।

बहुत दिनों बाद एक ढंग का विषय मिला है। इसके लिए धन्यवाद उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का। 52 साल के योगी जी ने विमर्श के लिए ये विषय हालांकि हवा में उछाला है, लेकिन ये जरूरी विषय है कि -आखिर सत्ता का गुलाम है कौन? योगी ने आदित्यनाथ ने चंदौली में एक कार्यक्रम में कहा कि कोई योगी या संत सत्ता का गुलाम नहीं हो सकता है. उन्होंने कहा, संत समाज को एकजुट करते हैं। पूरे समाज को एकसाथ जोड़कर संत चलता है। योगी ने यह बातें अघोराचार्य बाबा कीनाराम की जन्मस्थली पर आयोजित 425 अवतरण समारोह को संबोधित करते हुए कही। योगी से बहुत साल पहले संत कुम्भनदास ने यही बात कही थी। उन्होंने कहा था -

संतन को कहा सीकरी सों काम ?
आवत जात पनहियाँ टूटी, बिसरि गयो हरि नाम।।
जिनको मुख देखे दुख उपजत, तिनको करिबे परी सलाम।।
कुभंनदास लाल गिरिधर बिनु, और सबै बेकाम।।

कुम्भनदास किसान थे, संत थे और उस समय के संत थे, जब संत होना कठिन काम था। लेकिन कुम्भनदास के पांच सौ साल बाद संत होना कठिन काम नहीं रह गया। अब संत सींकरी आने-जाने के अभ्यस्त हो चुके हैं। जो सींकरी नहीं जाते उन्हें जेल जाना पड़ता है, जो सींकरी जाते हैं उन्हें फलरो के तहत जब चाहे तब जमानत मिल जाती है भले ही वे हत्या और बलात्कार के आरोप में सजा काट रहे हों। लेकिन असल सवाल ये है कि क्या आज के संत और योगी सत्ता के गुलाम हैं या नहीं? योगी जी यानि बाबा आदित्यनाथ 26 साल से राजनीति में हैं और सत्ता में रहते हुए भी उन्हें 9 साल हो चुके हैं और वे कहते हैं, गर्व से कहते हैं कि- योगी और संत सत्ता का गुलाम नहीं हो सकता। क्या आप योगी आदित्यनाथ के इस दावे पर यकीन कर सकते हैं ? योगी जी को जिन परिस्थितियों में सत्ता के मयूरपंखी सिंहासन पर बैठाया गया था, वो आपको याद होगा और जिस तरह से उनके सिंघासन को पिछले पांच साल से अस्थिर करने की कोशिश की जा रही है वो भी आप सबसे छिपा नहीं है। यदि योगी जी सत्ता के गुलाम नहीं है तो बादशाह की जीप के पीछे-पीछे उपने (नंगे पांव) क्यों दौड़ लगा रहे हैं ? क्या वे सत्ता को ठोकर मारकर गोरखपुर वापस नहीं लौट सकते ?

संतो-महंतों और योगियों को सत्ता में लाने का, सत्ता का गुलाम बनाने का एकमेव श्रेय यदि किसी राजनीतक दल को है तो वो है भारतीय जनता पार्टी। भारतीय जनता पार्टी ने देश में राम राज की स्थापना करने के मकसद से संतों-महंतों को सत्ता का गुलाम बनाने की कोशिश की। कांग्रेस के जमाने में भी संत-महंत सत्ता के साथ चस्पा रहते थे, किन्तु उनकी सत्ता में सीधी भागीदारी नहीं थी। भाजपा ने साध्वी उमा भारती को मध्यप्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया, केंद्र में मंत्री बनाया। अनेक साध्वियों को विधानसभाओं और लोकसभाओं में भेजा। मंत्रिमंडलों में शामिल किया। इनकी फेहरिस्त बहुत लम्बी है। लेकिन एक योगी आदित्यनाथ को छोड़ सभी को भाजपा ने दूध में पड़ी मख्खी की तरह निकाल भी दिया। अब कोई गौसेवा कर रहा है तो कोई अदालतों के चक्कर काट रहा है।

योगी आदित्यनाथ के इस कथन से कि संत-महंत सत्ता के गुलाम नहीं होते, मै पूरा इत्तफाक रखता हूँ, लेकिन उनकी ये बात मोदी युग में सही साबित नहीं होती। वो दौर दूसरा ही था, जब संत-महंत और योगी सत्ता को लतियाते हुए आगे बढ़ जाते थे। अब तो साधू-संत, महंत और योगी सत्ता के न सिर्फ गुलाम हैं बल्कि सत्ता के चरण-चुंबन में सबसे आगे हैं। जिन्हें सत्ता चाहिए वे दल नहीं देखते, केवल सत्ता देखते है। उत्तर प्रदेश में एक संत हैं प्रमोद कृष्ण। कांग्रसी संत थे, लेकिन अब भाजपाई संत हैं। हमारे चार शंकराचार्य इसके अपवाद हैं, लेकिन वे सत्ता के गुलाम न होते हुए भी सत्तानुरागी तो हैं ही। सबकी अपनी-अपनी पसंद है। किसी को कांग्रेस की सत्ता अच्छी लगती है, तो किसी को भाजपा की सत्ता। सत्ता विमुख होकर कोई धर्माचरण नहीं करना चाहता। मुख्यमंत्रियों और प्रधानमंत्री कि शपथ ग्रहण समरोह बिना संतों-महंतों कि पूरे ही नहीं होते। मेरी दृढ मान्यता है कि देश के साधु, संत, महंत और योगी जिस दिन सत्ता की गुलामी करना छोड़ देंगे उस दिन से सत्ता जनता को धर्म की अफीम चटाना बंद कर देगी, लेकिन दुर्भाग्य ये हो नहीं रहा। हो नहीं सकता। सत्ता होने नहीं दे रही संतों को गुलामी से मुक्त। इसका आगाज, योगी आदित्यनाथ से ही हो सकता है, किन्तु वे भी अब सत्ता से ऐसे चिपके हैं जैसे कोई फेविकोल का जोड़ हो। आदित्यनाथ रो सकते हैं, अपमानित हो सकते हैं लेकिन सत्ता का त्याग नहीं कर सकते। क्योंकि उन्होंने 9 साल में देख लिया हैकि जगत मिथ्या है और सत्ता ही परम सत्य है। सत्ता का त्याग करना आसान काम नहीं है। सत्ता से या तो राजनीतिक दलों का हाईकमान लतियाता है या फिर जनता। उत्तर प्रदेश में जनता पिछले आम चुनाव में अपने रुख का संकेत दे चुकी है। खुद योगीजी के उत्तर प्रदेश में भाजपा औंधे मुंह गिरी है। लेकिन योगी जी जहाँ थे, वहीं हैं।

योगी जी के दावे को सुनकर हंसी आती है कि संत, मेहनत या योगी सत्ता के गुलाम नहीं होते। योगी जी कहते हैं कि- सिद्धांत विहीन राजनीति मौत का फंदा है। योगी कहते हैं कि जब किसी को सिद्धि या कुछ भी प्राप्त होता है, तो वह उसके मद में किसी को कुछ नहीं समझता है। लेकिन योगी सभी को एकजुट कर आगे बढ़ता है। बात सही भी है। योगी जी उत्तरप्रदेश में पार्टी हाईकमान कि कहने पर केर-बेर कि संग मिलकर सरकार चला रहे हैं। योगी जी जैसी दक्षता उमा भारती में नहीं थी। 65 साल की उमा भारती पांच बार सांसद रहने के बाद मुख्यमंत्री की कुर्सी पर मात्र 9 माह रह पायीं थी। उन्होंने सार्वजनिक रूप से अपनी पार्टी कि हाईकमान को लतियाया था, लेकिन योगी आदित्यनाथ आज तक उमा भारती जैसा साहस नहीं जुटा पाए, फलस्वरूप उनकी कुगति हो रही है। वे पूरे संत-महंत और योगी समाज का अपमान करा रहे हैं। वे अपने पूर्वज कुम्भनदास का अपमान करा रहे हैं। योगी जी से सींकरी छूटती ही नहीं। बहरहाल ये कलिकाल है। कलिकाल में भी, मोदीकाल है। इस काल में संत, महंत, योगी सबके सब सत्ता कि गुलाम हैं, जो नहीं हैं वे भी होना चाहते हैं। जो नहीं हो पा रहे हैं वे सत्ता को, मोदी को कोसते रहते हैं। जो नहीं कोस रहे वे उममीद पाले हुए हैं कि आज नहीं तो कल उन्हें भी सत्ता का सुख मिल सकता है। उम्मीद बड़ी चीज होती है। भक्ति से भी बड़ी। जो सत्ता का गुलाम नहीं है, वो योगी नहीं है। वो संत नहीं है, वो महंत नहीं है। सत्ता सभी को अपना गुलाम बनाना चाहती है। संत, महंत, योगी, भोगी, मीडिया, कार्यपालिका, न्यायपालिका सब सत्ता कि निशाने पर हमेशा से रहे हैं और आज भी है।

पार्टी ने की कंगना की बोलती बंद!

अनिल चतुर्वेदी

फि ल्मी अंदाज को राजनीति की जमीन पर इस्तेमाल करने की कोशिश में बड़बोली कंगना रनौत आखिर मात खा गईं। पार्टी के निर्देशक यानी कि अध्यक्ष ने उन्हें चुप रहने की हिदायत तो ही साथ ही दुबारा ऐसी बयानबाजी न करने कीचेतावनी भी दे दी। अब कंगना भले पढ़ी लिखी हों पर चुनावी माहौल में बेतुके बयानों ने आखिर पार्टी की टेंशन बढ़ा दीं। एक तो वैसे ही हरियाणा में भाजपा की हालत अच्छी नहीं बताई जा रही है ऊपर से कंगना के किसानों को लेकर दिए गएबयानों ने पार्टी की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। ह्यपंजाब में जो किसान आंदोलन हुआ वहाँ लाशें लटक रहीं थीं और रेप हो रहे थेह्न जैसा बयान पंजाब क्या देश के किसी भी व्यक्ति की नाराजगी बढ़ा सकता है सो विरोधियों ने हल्ला शुरू कर दिया। मरता क्या न करता बाली बात, भाजपा ने तुरंत अपनी सांसद के इस बेतुके बयान से किनारा किया और कंगना कोफटकारा भी। अब टेंशन तो कंगना को भी रही ही होगी सो दौड़ी-दौड़ी पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा के दरबार में जा पहुँची परपर लंबे समय तक इंतजार के बाद जब पार्टी नेता की फटकार लगी और नीतिगत मामलों पर शटअप रहने को कहा गयातो कंगना को एहसास हुआ होगा कि उनके दिए गए बयान किसी फि ल्म के लिए नहीं थे बल्कि ऐसे बयानों से पार्टी कीछवि तो खराब होती ही है साथ ही चुनावी दौर में पार्टी को नुकसान भी होता है। भला कोई यह कहे कि आखिर कंगना नेऐसे बयान क्यों दिए होंगे तो लोग तो इसे पिछले दिनों एअरपोर्ट पर कंगना और एक सुरक्षा कर्मी के बीच हुई तकरार सेजोड़कर देख रहे हैं। वरना तो इस तरह के बयान देने लायक कंगना दिखती भी नहीं हैं। हाँ यह जरूर कि ह्यद क्वीन ऑफझांसीह्न फि ल्म में रानी लक्ष्मीबाई की भूमिका निभाने के बाद से कंगना का जोश भले बढ़ा रहा है पर बिना होश के ही वेबयान दे बैठती हैं। आगे-आगे होता है क्या यह तो बाद की बात पर फिलाहल तो उन्होंने अकाली नेता सिमरन जीत सिंहमान की टिप्पणी के बाद यह तो कह ही डाला कि मुझे धमकियाँ मिल रही हैं। मेरी आवाज नहीं दवा सकते। पार्टी को चुनाव जीतने के लाले पड़े हैं और नेता जो हैं कि मुख्यमंत्री बनने का सपना देखने में लगे हैं। जी अपन बात कर रहेहैं पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी की। मैडम अमेठी से इस बार लोकसभा हार गई, सारी हेकड़ी निकल गई पर न तो छपाई रोगकम हुआ और न ही सत्ता की ललक। शहर में मैडम को लेकर चर्चा है कि वे अगले साल होने वाले दिल्ली विधानसभा सभाके चुनाव लड़ने के लिए लॉबिंग कर रही हैं। चुनाव जीतने पर वे दिल्ली का मुख्यमंत्री बनने की मंशा पाले बताई जा रही हैं। उन्हें लग रहा है कि दिल्ली में पार्टी के पास इस कद का नेता नहीं जैसी कि वे रहीं हैं। यह अलग बात है कि उन्हें पूर्व केंद्रीयमंत्री डा हर्षवर्धन के अलावा कोई दूसरे नेता नजर नहीं आ रहे हों। भले हर्षवर्धन राजनीति से संन्यास की बात कर चुके होंपर राजनीति से कोई यूँ भी मोह भंग नहीं कर पाता है तो हर्षवर्धन ही कैसे अपवाद हो सकते हैं। पिछले दिनों जब उनसे यहसवाल किया गया कि क्या वे दिल्ली में विधानसभा लड़ने की तैयारी में हैं या फिर क्या वे दिल्ली का मुख्यमंत्री बनने कीमंशा रखती हैं तो सीधे तौर पर चुप्पी साध गईं अलबत्ता यह जरूर कहा कि वे वही करेंगी जो पार्टी कहेगी।

मानवता के लिए एक बड़ा खतरा बनकर उभर रहे हैं परमाणु ऊर्जा संयंत्र

डॉ. अरुण मित्रा

युद्धों का मतलब सैन्य औद्योगिक परिसरों के लिए बहुत बड़ा मुनाफा है। कहा जाता है कि वर्तमान सैन्य गतिविधि के कारण पर्यावरण को होने वाला नुकसान कुल पर्यावरणीय गिरावट का लगभग 5.4प्रतिशत है। परमाणु हथियारों की मौजूदगी ही एक बड़ा खतरा है। अगर इन हथियारों का इस्तेमाल नहीं भी किया जाता है, तो भी इनके रखरखाव में शामिल लागत का प्रभाव स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य सामाजिक जरूरतों पर किये जाने वाले निवेश पर पड़ता है। पहले जापोरिज्जिया और अब कुर्स्क में परमाणु ऊर्जा संयंत्र खतरे में हैं, जो अत्यधिक चिंता का विषय हैं। संयुक्त राष्ट्र परमाणु निगरानी संस्था अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (एआईईए) के प्रमुख राफेल ग्रॉसी ने 27 अगस्त को रूस के कुर्स्क परमाणु संयंत्र के दौरे के दौरान चेतावनी दी कि स्थिति बहुत गंभीर है क्योंकि यह संयंत्र युद्ध क्षेत्र से मुश्किल से 50 किलोमीटर दूर स्थित है।

आईएईए ने परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के लिए खतरे के बारे में कई चेतावनियां जारी की हैं, खासकर रूसी सेना द्वारा दक्षिणी यूक्रेन में जापोरिज्जिया परमाणु संयंत्र पर कब्जा करने के बाद। आईएईए प्रमुख ने चेतावनी दी कि परमाणु ऊर्जा संयंत्रों पर कभी भी हमला नहीं किया जाना चाहिए। यह एक अत्यंत गंभीर चेतावनी है जो आईएईए प्रमुख के मुंह से निकली है। थ्री माइल आइलैंड, चेरनोबिल और फुकुशिमा परमाणु ऊर्जा संयंत्र आपदाओं की भयानक यादें हमें उन क्षेत्रों में और उसके आसपास के क्षेत्रों में जीवन और बुनियादी ढांचे के भारी नुकसान की याद दिलाती हैं, साथ में विकिरणों के दीर्घकालिक परिणाम की भी। इसलिए वैश्विक समुदाय न केवल चिंतित है बल्कि भयभीत भी है कि अगर यूक्रेन में युद्ध बढ़ता है, तो परमाणु दुर्घटना के खतरे से इंकार नहीं किया जा सकता है। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने चेतावनी दी है कि अगर उनकी संप्रभुता या क्षेत्र को खतरा हुआ तो उनका देश परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करने से पीछे नहीं हटेगा। उन्होंने यह बयान 5 जून 2024 को दिया जब वे रूस द्वारा 2022 में यूक्रेन पर पूर्ण पैमाने पर आक्रमण शुरू करने के बाद पहली बार अंतरराष्ट्रीय समाचार एजेंसियों के वरिष्ठ संपादकों से व्यक्तिगत रूप से मिले। रूस-यूक्रेन क्षेत्र के अलावा, गाजा में महिलाओं और बच्चों पर चल रहा इजरायली आक्रमण दिल दहला देने वाला है। गाजा के नागरिकों को मवेशियों के झुंड की तरह इधर-उधर धकेला जा रहा है। इजरायली सुरक्षा बलों ने उन्हें सुरक्षित स्थानों पर जाने या मौत का सामना करने के लिए कहा है। लेकिन तथाकथित सुरक्षित स्थानों पर भी हमले किये जाते हैं और बच्चों और महिलाओं को बिना किसी दोष के मार दिया जाता है। 7 अक्टूबर से, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्वास्थ्य सुविधाओं पर कुल 890 हमले दर्ज किये हैं, जिनमें से 443 गाजा में और 447 पश्चिमी तट पर हुए हैं।

अस्पतालों को आम तौर पर युद्ध के समय सुरक्षित स्थान माना जाता है क्योंकि युद्धरत पक्षों से जिनेवा कन्वेंशन के अनुसार स्वास्थ्य सुविधाओं पर हमला नहीं करने की अपेक्षा की जाती है, जिसमें कहा गया है कि ह्यघायलों और बीमारों, अशक्तऔर प्रसूति मामलों की देखभाल करने के लिए संगठित नागरिक अस्पताल किसी भी परिस्थिति में हमले का लक्ष्य नहीं हो सकते हैं, और संघर्ष में शामिल पक्षों द्वारा हर समय उनका सम्मान और संरक्षण किया जाना चाहिए। ह्न इसलिए कई बार नागरिक सुरक्षा के लिए अस्पतालों में जाने की कोशिश करते हैं। गाजा में गंभीर भीषण संकट है क्योंकि गाजावासियों तक मानवीय सहायता पहुंचने में कई बाधाएं हैं। डब्ल्यू एच ओ और यूनिसेफ ने बीमारियों में वृद्धि के बारे में चेतावनी दी है। निवासियों में पोलियो वायरस का पता चलने से चिकित्सा बिरादरी हिल गयी है। 40, 000 से ज्यादा लोगों की मौत 1948 के नकबा की पुनरावृत्ति है, जब दर्जनों नरसंहारों में फिलिस्तीनी अरबों को निशाना बनाया गया था और 500 से ज्यादा अरब-बहुल शहर, गांव और शहरी इलाके उजड़ गये थे, जिनमें से कई या तो पूरी तरह से नष्ट हो गये या यहूदियों ने उन्हें फिर से आबाद कर दिया और उन्हें नए हिब्रू नाम दिये।

हर गुजरते दिन के साथ युद्ध का क्षेत्र लेबनान की ओर बढ़ रहा है। यह एक गंभीर खतरा है क्योंकि ईरान और इजराइल के बीच तनाव बढ़ रहा है। इजराइल पहले से ही एक परमाणु हथियार रखने वाला देश है और ईरान के पास परमाणु शक्ति है। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की कैबिनेट के एक अति-दक्षिणपंथी सदस्य अमीचाई एलियाहू ने परमाणु हथियारों के इस्तेमाल से इंकार नहीं किया है। उनके बयान को पूरी तरह से नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यहां यह ध्यान देने वाली बात है कि इजराइल ने अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (आईसीजे) और अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (आईसीसी) के फैसलों को पूरी तरह से नजरअंदाज किया है। कोई आश्चर्य नहीं कि इजराइल को ऐसे मामलों में अमेरिका का समर्थन प्राप्त है।

यह सर्वविदित है कि युद्ध के समय मानव कल्याण के मुद्दे पीछे छूट जाते हैं। कई अफ्रीकी देशों में भूख, अभाव और बीमारियां आंतरिक कलह का कारण बन गयी हैं। इनमें बुर्किना फासो, कैमरून, मध्य अफ्रीकी गणराज्य (सीएआई), कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, इथियोपिया, माली, मोजाम्बिक, नाइजीरिया, नाइजर, सेनेगल, सोमालिया, दक्षिण सूडान और सूडान शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र के मंचों पर इन देशों में स्थिति को आसान बनाने के बारे में बहुत कम चर्चा होती है।

युद्धों का मतलब सैन्य औद्योगिक परिसरों के लिए बहुत बड़ा मुनाफा है। कहा जाता है कि वर्तमान सैन्य गतिविधि के कारण पर्यावरण को होने वाला नुकसान कुल पर्यावरणीय गिरावट का लगभग 5.4प्रतिशत है। परमाणु हथियारों की मौजूदगी ही एक बड़ा खतरा है। अगर इन हथियारों का इस्तेमाल नहीं भी किया जाता है, तो भी इनके रखरखाव में शामिल लागत का प्रभाव स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य सामाजिक जरूरतों पर किये जाने वाले निवेश पर पड़ता है। परमाणु हथियारों को खत्म करने के लिए अंतरराष्ट्रीय अभियान (आईसीएएन) ने इन हथियारों के उत्पादन और रखरखाव पर बर्बाद किये गये धन की उपयोगिता की तुलना करते हुए आंकड़े पेश किए हैं। आईसीएएन ने कहा कि दुनिया भर में स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियां लोगों की जरूरतों को पूरा करने में असमर्थ हैं, जबकि परमाणु हथियार संपन्न देशों ने 2023 में अपने परमाणु शास्त्रागार को आद्यतन करने पर 91.4अरब अमेरिकी डॉलर बर्बाद कर दिये। इसकी रिपोर्ट बताती है कि यह राशि संयुक्त राज्य अमेरिका में 718, 930 नर्सों के वार्षिक वेतन को कवर करने के लिए बेहतर तरीके से खर्च की जा सकती थी जबकि खसरा, कण्ठमाला और रूबेला के खिलाफ 5, 34, 35, 40, 72, 239 बच्चों का टीकाकरण; कोविड के खिलाफ 2, 28, 30, 27, 774 लोगों का टीकाकरण; एक साल के लिए अकाल से 58, 70, 64, 285 लोगों को बचाना; 6, 08, 80, 74, 06, 304 पेड़ लगाना; या 1, 39, 81, 01, 964 लोगों को एक साल का स्वच्छ जल प्रदान करना संभव था।

राष्ट्रीय दैनिक प्रातःकिरण
पटना, मंगलवार, 03 सितम्बर, 2024

संक्षिप्त खबरें

हर्षोल्लास पूर्वक संपन्न हुआ महावीरी झंडा मेला

लहलादपुरः प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत महावीरी अखाड़ा सह झंडा मेला काफी हर्षोल्लास एवं धूम-धाम के साथ संपन्न हुआ. इसमें हरपुर कोठी, दंदासपुर, शिव टोला, सेंदुआर, दयालपुर, सारण, लहलादपुर तथा पंडितपुर गाँवों ने अच्छा प्रदर्शन किया. अखाड़ा में भिन्न-भिन्न तरह के करतब दिखाए गये, जो आकर्षण का केंद्र बना रहा. सेंदुआर गांव के जुलुस में हाथी-घोड़ा तथा ऊंट भारी संख्या में दिखे.मेला नियंत्रण के लिये व्यापक संख्या में महिला-पुरुष पुलिस बल की व्यवस्था की गई थी. प्रशासन के साथ स्थानीय समाजसेवी भी भीड़ नियंत्रण में लगे हुए थे. मेला एवं अखाड़ा रविवार को देर संध्या से आरम्भ होकर देर रात में संपन्न हुआ.

कास्टभंडार में चोरों ने ई रिक्शा बैट्री उड़ाई

बगहा। नसीम खान क्या वाल्मीकिनगर स्थित गोलचौक के समीप चोरी की वारदात गत रात्रि हुई है।वाल्मीकिनगर पंचायत के वाड नम्बर 16 के कास्ट भंडार निवासी विजय विश्वास के घर पर खड़ी ई रिक्शा से दो बैट्री चोरों ने रात्रि पहर मे चुरा लिया।जब घर वाले को कुछ खटपट की आवाज मिली तो संदेह हुआ । धीरे से जब दरवाजा खोलकर देखा तो चोर अंधेरे का लाभ उठाकर भागने में कामयाब हो गया लेकिन बहाने के क्रम में चोर के हाथों से चोरी करने का औजार कटर छूट गया। हालांकि की इस तरहकी घटनाए पूर्व में भी होती रही है लेकिन अबतक चोर को पुलिस पकड़ने में कामयाब नहीं हो पाई है।

छठीहार के बाद श्रीकृष्ण के प्रतिमा का विसर्जन नारायणी नदी में किया गया

बगहा। नसीम खान क्या श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व छः दिन चलने के बाद श्रीकृष्ण के छठी कार्यक्रम समारोह के बाद सोमवार की शाम श्रीकृष्ण के प्रतिमा का विसर्जन कर दिया गया।बतादें की बगहा समेत इंडो नेपाल सीमा स्थित वाल्मीकिनगर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।वाल्मीकिनगर 3 आरडी शिव मंदिर और टंकी बाजार माता दुर्गा हनुमानगढ़ी मंदिर में श्रीकृष्ण की प्रतिमा स्थापित की गई थी। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के छठीहार कार्यक्रम समारोह के बाद पूणार्हुति के बाद श्रीकृष्ण के प्रतिमा का नारायणी गंडक नदी में पूरे धूमधाम के साथ विसर्जन कर दिया गया।

पूर्व मंत्री ने किया श्रीकृष्ण जन्मोत्सव सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन

गडखा प्रखंड के पंचपटिया पंचायत स्थित राधेकृष्ण मन्दिर छोटझौंवा मे चल रहे श्रीकृष्ण जन्मोत्सव छठिहार के सांथ संपन्न हो गया।रविवार को छठिहार के बाद रात्रिकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका विधिवत उद्घाटन बिहार सरकार के पूर्व श्रम संसाधन मंत्री सह स्थानीय विधायक सुरेन्द्र राम ने किया।उनके सांथ स्थानीय मुखिया खुशबू कुमारी के प्रतिनिधि अखिलेश राय,मौजमपुर मुखिया धर्म देव राय,मुसेपुर मुखिया बबलु कुमार,गड़ा बी.डी.सी.महफूज आलम,नयागांव के पूर्व जिलापार्षद चन्देश्वर राय,स्थानीय बी.डी.सी. राकेश राय,सरपंच मुखेश कुमार सिंह आदि दर्जनो गणमान्य जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। मंच उद्घाटन के बाद सभीं गणमान्य सदस्यों व कलाकारों को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया।ईस पावन अवसर पर उत्तर बिहार के सुप्रसिद्ध सुर्यमंदिर के पूजेरी विष्णु दास जी व सहायक पूजेरी अवध बिहारी दास जी महाराज राधेकृष्ण मन्दिर के पूजेरी चन्देश्वर मिश्र,झौंवा राम जानकी के मठाधीश पूजेरी जी भीं उपस्थित थे। इन महात्माओं को राधेकृष्ण धाम के रामकुमार राय व धर्मनाथ राय ने अंग वस्त्र देकर अपने समाज के तरफ से नंदन,वंदन व अभिनंदन किया।कार्यक्रम का संचालन सेवानिवृत शिक्षक अरविंद यादव ने किया। सिवान के प्रसिद्ध गायक सुखनंदन यादव व छपरा के पुलिस यादव के टीम द्वारा दुगोला सांस्कृतिक प्रस्तुति से रातभर श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मे चार चांद लगा रहा। विदित हो की छोटझौंवा मे 2007 मे श्रीराधेकृष्ण मन्दिर की स्थापना की गई तब से हर वर्ष श्रीकृष्ण जन्मोत्सव समारोह पूर्ववक मनाया जाता है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से लेकर छठिहार तक छः दिवसीय जन्मोत्सव समारोह चलता है जिसमे हर दिन भर पूजा पाठ व रात्री में जागरण सोहर के माध्यम से श्रीकृष्ण भक्त जन्मोत्सव मनाते हैं।सत्संग व भगवत कथा से छः दिनो तक वृन्दावन और मथुरा जैसा माहौल छोटझौंवा मे देखने को मिलता है।

आज से जिलास्तरीय खेल प्रतियोगिता का होगा आगाज

प्रात: किरण, संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)। खेल विभाग बिहार राज्य खेल प्राधिकरण बिहार पटना तथा जिला प्रशासन पश्चिम चंपारण के संयुक्त तत्वावधान में जिला स्तरीय विद्यालय खेल प्रतियोगिता 2024 दिनांक 3 सितंबर दिन मंगलवार से महाराजा स्टेडियम बेतिया में शुरू होगी। इस प्रतियोगिता में तीन आयु वर्ग अंडर 14, 17 ,19 कक्षा छठी से बारहवीं तक के सभी कोटि के विद्यालयों में नियमित रूप से अध्ययनरत बालक-बालिका खिलाड़ी पदक की प्राप्ति हेतु अपनी कला- कौशल का प्रदर्शन करेंगे । जिला खेल पदाधिकारी विजय कुमार पंडित ने बताया कि मुख्य समारोह स्थल महाराजा स्टेडियम बेतिया में होगी, जिसमें जिले के लगभग 432 से ज्यादा विद्यालयों के 3000 प्रतिभागियों के शामिल होने की संभावना है। सभी खेल विधाओं में निपुण तकनीकी पदाधिकारी, वरीय खिलाड़ियों, अनुभवी व्यक्तियों, खेल संघों के पदाधिकारी आदि को आयोजन हेतु लगाया गया है। उन्होंने बताया कि सभी खेल विधा की प्रतियोगिता पछाड़ पद्धति के आधार पर आयोजित की जाएगी। जिला स्तर पर विजेता, उप विजेता, प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को मेडल, ट्रॉफी, प्रमाण पत्र से जिला प्रशासन द्वारा नवाजा जाएगा। उद्घाटन कार्यक्रम के तहत दीप प्रज्वलन, झंडोतोलन, राष्ट्रीय स्तर पर मेडल प्राप्त खिलाड़ियों द्वारा मशाल दौड़, संत अगेंश बालिका विद्यालय चूड़ी चनपटिया द्वारा स्वागत गान के साथ ही साथ मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति, आलोक भारती शिक्षण संस्थान द्वारा कलर बैंड पार्टी तथा राज उच्चतर माध्यमिक विद्यालय द्वारा एनसीसी कैडेट के माध्यम से मार्च पास्ट का आयोजन किया गया है। साथ ही साथ शपथ ग्रहण समारोह की भी प्रस्तुति की तैयारी की गई है । उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन द्वारा सारी व्यवस्था यथा चिकित्सा व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था, पेयजल व साफ-सफाई आदि संगत व्यवस्थाएं पूरी कर ली गई है। मार्च पास्ट में उपस्थित खिलाड़ी तिरंगे झंडे के साथ महाराजा स्टेडियम बेतिया में शान-बान के साथ शोभा बढ़ाएंगे।

सभी खिलाड़ी खेल प्रतियोगिता व मार्च पास्ट में ड्रेस कोड सहित विद्यालय के बैनर के साथ भाग लेंगे। यह प्रतियोगिता दिनांक 3 सितंबर से 7 सितंबर 2024 तक जिला मुख्यालय बेतिया में आयोजित की जाएगी।

जिला खेल पदाधिकारी ने बताया कि मुख्य समारोह स्थल महाराजा स्टेडियम बेतिया उक्त खेल प्रतियोगिता के लिए दुल्हन की तरह सजा दिया गया है। सभी विभिन्न प्रतियोगिता स्थलों पर आवश्यकतानुकूल टेबल ,कुर्सी आदि अन्य संगत व्यवस्थाएं पूरी कर ली गई है। खेल में व्यवधान डालने वाले असामाजिक तत्वों पर भी पुलिस की पैनी नजर रहेगी ।

आज 3 सितंबर को इन खेलों की होगी प्रतियोगिता

खेल विधा एथलेटिक्स, कबड्डी, खो-खो, क्रिकेट, कराटे केवल आयु वर्ग अंडर 17 जबकि खेल विधा वॉलीबॉल आयु वर्ग अंडर 14 ,17, 19 के बालक- बालिका की प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी।

पांच स्थलों पर होगी प्रतियोगिता

जिला स्तरीय खेल प्रतियोगिता के तहत महाराजा स्टेडियम में एथलेटिक्स, कबड्डी, खो-खो, वॉलीबॉल, हैंडबॉल ,कुश्ती, फुटबॉल, भारोत्तोलन, योग एवं खेल भवन सह व्यायामशाला भवन में कराटे, वुशु, शतरंज तथा इंडोर बैडमिंटन स्टेडियम में बैडमिंटन और बड़ा रमना मैदान में क्रिकेट जबकि राम लखन सिंह यादव कॉलेज में खेल विधा बास्केटबॉल की प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में साप्ताहिक समन्वय बैठक

● मतदाता सूची के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम के तहत घर-घर सत्यापन कार्यक्रम को पूरी शुद्धता से सुनिश्चित करायें: डीएम

छपरा कार्यालय। जिलाधिकारी अमन समीर की अध्यक्षता में आज साप्ताहिक समन्वय बैठक आयोजित की गई। मतदाता सूची के जारी विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम को लेकर जिलाधिकारी ने सभी संबंधित अधिकारियों को महत्वपूर्ण दिशा निदेश दिया। मतदानकेन्द्र के युक्तिकरण के संबंध में जहाँ भी चलंत मतदानकेन्द्र है या मतदानकेन्द्र भवन जर्जर अवस्था में है एवं इसे पास के किसी निर्मित सरकारी भवन में स्थानांतरित किया जा सकता है, सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी संबंधित ईआरओ के माध्यम से प्रस्ताव देंगे। हाउस टू हाउस वेरिफिकेशन कार्य को पूरी शुद्धता के साथ सुनिश्चित करें।सभी एईआरओ एवं ईआरओ को बीएलओ के साथ बैठक कर सत्यापन कार्य को गति देने का निदेश दिया गया। हाउस टू हाउस सर्वे के आधार पर बीएलओ द्वारा शिफ्टेड एवं डेड मार्क किये गए मतदाताओं का रैंडम स्थलीय सत्यापन सभी ईआरओ एवं एईआरओ सुनिश्चित कर कार्यों के शुद्धता की परख करेंगे। न्यायालयों में लंबित केस के संदर्भ में सभी संबंधित पदाधिकारी समय से तथ्य विवरणी तैयार कर प्रस्तुत करें ताकि न्यायालय में ससमय शपथ पत्र दायर किया जा सके।

विभिन्न आपदा पीड़ितों से संबंधित मुआवजा भुगतान के सभी लंबित मामलों का निष्पादन प्राथमिकता से सुनिश्चित करने को कहा गया।इसके लिए प्रतिदिन 2-3 अंचलों के सहायकों को बुलाकर आपदा शाखा प्रभारी इसकी समीक्षा करेंगी।

राशनकार्ड के लंबित सभी आवेदनों में एक सप्ताह के अंतर्गत स्थलीय जाँच की प्रक्रिया संबंधित एसडीओ पूरा कराकर उसके अगले एक सप्ताह में सभी आवेदनों का निष्पादन सुनिश्चित करायेंगे।

बैठक में बंदोबस्त पदाधिकारी, विभिन्न विभागों के तकनीकी एवं गैर तकनीकी जिला स्तरीय पदाधिकारी तथा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी अनुमंडल पदाधिकारी, भूमि सुधार उपसमाहर्त्ता, प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचलाधिकारी आदि जुड़े थे।

कानून को हाथ में लेने वालों के विरूद्ध सारण पुलिस की बड़ी कार्रवाई

प्रात: किरण, संवाददाता

सारण पुलिस द्वारा कानून को हाथ में लेने वालें के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई की जा रही है, इसी क्रम में दिघवारा एवं दाउदपुर थानान्तर्गत कार्रवाई की गई। विगत-31अगस्त को दिघवारा थाना पुलिस टीम द्वारा ग्राम उन्हा चक में लंबित कांडों में वांछित अभियुक्तों के विरूद्ध विषेष छापामारी अभियान चलाया जा रहा था। इसी क्रम में वारंट में लंबित अभियुक्त धर्मेन्द्र कुमार को गिरफ्तार करने गई पुलिस टीम पर अभियुक्त के रिष्तेदारों एवं अन्य सहयोगियों द्वारा पुलिस टीम पर धक्का मुक्की कर हमला किया गया, जिसमें कुछ पुलिस कर्मी जख्मी हो गये। इस संबध में दिघवारा थाना कांड संख्या-313/24, दिनांक-01.09.2024, धारा-126(2)/115/118(1) /109/132/ 121(1) /121(2)/74 /351/351(2)/3(5) बि0एन0एस0 दर्ज कर त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम पर हमला में संलिप्त अभियुक्त सत्येन्द्र कुमार . धर्मेन्द्र कुमार, दोनों पिता सुदीष प्रसाद, सा0 उन्हाचक, थाना दिघवारा, जिला-सारण को गिरफ्तार किया गया।

विगत रविवार को दाउदपुर थाना के ई0आर0भी0-112 पर अश्विनी कुमार, पिता-स्व0 गंगा सागर प्रसाद, साकिन- बनियापुर, थाना- दाउदपुर, जिला-सारण के द्वारा फोन किया गया कि मेरे पड़ोसी जमीनी विवाद को लेकर मेरे साथ मार-पीट कर रहे हैं। उक्त सूचना के आलोक में ग्राम- बनियापुर पहुँच कर दोनों पक्षों को समझाने का प्रयास करने के क्रम में कुछ लोगों के द्वारा एक जुट हो कर पुलिस टीम पर हमला किया गया, जिसमें कुछ पुलिस कर्मी जख्मी हो गये। इस संबंध में दाउदपुर थाना कांड संख्या-201/24, दिनांक-01.09.2024 धारा-126 (2) /115 (2)/ 118 (1)/ 132/ 352 / 351(2) /3 (5) बि0 एन0 एस0 दर्ज कर त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस टीम पर हमला में संल्प्ति अभियुक्त . संतोष कुमार, पिता- रामजी प्रसाद राजकिषोर कुमार, पिता-लक्ष्मण प्रसाद . मिथलेश कुमार, पिता- रामजी प्रसाद गोलु कुमार, पिता- कमलेश्वर प्रसाद . कमलेश्वर प्रसाद, पिता- स्व0 सीताराम प्रसाद . बब्लू कुमार, पिता- रामजी प्रसाद रामजी प्रसाद, पिता- स्व0 सीताराम प्रसाद, सभी साकिन- बनियापुर, थाना- दाउदपुर, जिला- सारण को गिरफ्तार किया गया।

भाई की सकुशल घर वापसी के लिए व्यवसाई ने एस पी से लगाई गुहार

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा सदर। जिले के स्वर्ण व्यवसाई ने अपने छोटे भाई की सकुशल घर वापसी की गुहार लगाते हुए आवेदन दिया है कि गड़खा थाना काण्ड सं०-530/24 के तहत अपने भाई के लापता होने का मामला 15 दिन पहले दर्ज कराया था। लेकिन आज तक मेरे भाई का कोई पता नहीं चल पाया । उन्होंने एस पी के पास दिए आवेदन में लिखा है कि मैं राजेश कुमार पिता- स्व० द्वारिका प्रसाद पता साहेबगंज बुटनबाड़ी, थाना- नगर, जिला- सारण का निवासी हूँ। दिनांक 21.08.2024 को मेरा छोटा भाई सचिन कुमार पिता स्व० द्वारिका प्रसाद पता- साहेबगंज बुटनबाड़ी थाना नगर, जिला- सारण ने पटना से छपरा वापस लौटने के क्रम में गड़खा बाजार से लापता हो गया।हमलोग अपने स्तर से ढूढने के बाद असफल होने पर इस घटना की जानकारी गड़खा थाना को दिनांक 21.08.2024 को दी जो काण्ड सं0-530/24 में गड़खा थाना में दर्ज की गई। आज दो सप्ताह बीत जाने के बाद भी लापता सचिन कुमार के बारे में कोई जानकारी नहीं मिल पा रही है।

जन सुराज को उम्मीद और भरोसे के साथ देख रहा है मुस्लिम समाज- महासेठ

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा। जन-सुराज में मुस्लिम समाज की तेजी से बढ़ रही भागीदारी को लेकर राजद और जदयू की बेचैनी बढ़ गई है। मुस्लिम समाज जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर की गांधी वादी विचारधारा से प्रभावित हो उनके नेतृत्व में अपना राजनीतिक भविष्य देख रहे हैं। कल पटना के बापू सभागार में आयोजित मुस्लिम जलसे में उमड़ी भीड़ इस बात के गवाह है। उक्त बातें आज यहां जारी एक बयान में जन सुराज के जिला मुख्य प्रवक्ता कुलदीप महासेठ ने कही। उन्होंने कहा है कि इस विशाल जमावड़ा से राजद, जदयू और कांग्रेस के पसीने छूट गए हैं और उनकी बेचैनी बढ़ गई है। मुस्लिम समाज का रहनुमा बनने की ढोंग रचने वाले दलों व उनके नेताओ ने इस समाज को केवल और केवल ठगने का काम किया है। आज दलित समाज के बाद सबसे ज्यादा खराब,बदहाल स्थिति है तो वह मुस्लिम समुदाय की है। मुख्य प्रवक्ता महासेठ ने कहा कि जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने मुस्लिम समाज को आश्वस्त किया है कि अगर उन्होंने जन-सुराज का साथ दिया तो उन्हें जनसंख्या के हिसाब से न केवल राजनीतिक हिस्सेदारी मिलेगी बल्कि उनके बच्चों को राजनीति में आगे बढाने और उन्हें अपने खर्चे से चुनाव लड़ाने की जिम्मेवारी भी जन-सुराज संभालेगा. उन्होने वादा किया है कि जन-सुराज उनकी आबादी के हिसाब से न केवल उनको राजनीतिक भागेदारी दिलाएगा बल्कि उनके बच्चों को राजनीति की ट्रेनिंग देने से लेकर उनको चुनाव लड़ाने का सारा खर्च भी करेगा। तेजस्वी यादव और नीतीश कुमार दोनों पर मुस्लिम समाज को अबतक वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल किया है। जिस तरह से मुस्लिम समाज के बीच प्रशांत किशोर की स्वीकार्यता बढ़ रही है, मुस्लिम समाज उनकी तरफ उम्मीद और भरोसे के साथ देख रहे है।

छपरा के सर्जन डॉ. विशाल ने 72 वर्षीय बुजुर्ग का त्वचा कैंसर का सफल ऑपरेशन कर त्वचा ग्राफ्टिंग किया

नारायण मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के सर्जन है डॉक्टर विशाल

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा : 72 वर्षीय बुजुर्ग का त्वचा कैंसर का सफल ऑपरेशन कर त्वचा ग्राफ्टिंग किया गया। छपरा शहर के प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ अनिल कुमार एवं डॉ संजू प्रसाद के पुत्र डॉ विशाल कुमार सर्जन ने नारायण मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल सासाराम में त्वचा कैंसर का सफल ऑपरेशन कर त्वचा ग्राफ्टिंग किया गया। डॉ विशाल कुमार ने बताया कि 72 वर्षीय बुजुर्ग त्वचा कैंसर से ग्रसित था जिसका सफल ऑपरेशन किया गया। इसे मेडिकल भाषा में बेसल सेल कार्सिनोमा कहते है बेसल सेल कार्सिनोमा एक प्रकार का त्वचा कैंसर है। बेसल सेल कार्सिनोमा बेसल कोशिकाओं में शुरू होता है - त्वचा के अंदर एक प्रकार की कोशिका जो पुरानी कोशिकाओं के मरने पर नई त्वचा कोशिकाओं का निर्माण करती है। बेसल सेल कार्सिनोमा अक्सर त्वचा पर एक हल्के पारदर्शी उभार के रूप में दिखाई देता है, हालांकि यह अन्य रूप भी ले सकता है। बेसल सेल कार्सिनोमा अक्सर त्वचा के उन क्षेत्रों पर होता है जो सूरज के संपर्क में आते हैं, जैसे कि आपका सिर और गर्दन। माना जाता है कि ज्यादातर बेसल सेल कार्सिनोमा सूरज की रोशनी से निकलने वाली पराबैंगनी (वश) किरणों के लंबे समय तक संपर्क में रहने के कारण होते हैं। टीम बनाकर कर किया गया ऑपरेशन : डॉक्टर विशाल कुमार के नेतृत्व में एक मेडिकल टीम बनाकर ऑपरेशन किया गया जिसमें डॉ विशाल कुमार, डॉ पंकज एवं ओटी असिस्टेंट व अन्य शामिल थे। डॉ विशाल कुमार ने बताया कि इस त्वचा प्रत्यारोपण प्रक्रिया को ऑटोग्राफ्ट कहते हैं। इसमें खराब त्वचा को हटा कर आमतौर पर जांघ, से त्वचा लेकर त्वचा ग्राफ्टिंग किया गया। उन्होंने बताया कि बेसल सेल कार्सिनोमा तब होता है जब त्वचा की बेसल कोशिकाओं में से किसी एक के डीएनए में उत्परिवर्तन विकसित हो जाता है।बेसल कोशिकाएँ एपिडर्मिस के निचले भाग में पाई जाती हैं - जो त्वचा की सबसे बाहरी परत होती है। बेसल कोशिकाएँ नई त्वचा कोशिकाएँ बनाती हैं। जैसे-जैसे नई त्वचा कोशिकाएँ बनती हैं, वे पुरानी कोशिकाओं को त्वचा की सतह की ओर धकेलती हैं, जहाँ पुरानी कोशिकाएँ मर जाती हैं और बाहर निकल जाती हैं।

सांसद जनार्दन सिंह सीग्रीवाल ने पीड़ित परिजनों से की मुलाकात

प्रात: किरण, संवाददाता

माँझी। माँझी थाना क्षेत्र के फतेहपुर सरैया निवासी धर्मेन्द्र चौधरी के पुत्र रोहित कुमार चौधरी,तथा सकलदेव चौधरी के पुत्र अंकित कुमार चौधरी का रविवार की रात दाह संस्कार सम्पन्न हो गया। बताते चलें कि रविवार को सरयु नदी के छाड़न में नहाने के दौरान दोनों किशोरों की मौत हो गई थी। सोमवार को मृतकों के घर सांत्वना देने पहुँचे महाराजगंज के सांसद जनार्दन सिंह सीग्रीवाल ने पीड़ित परिजनों से मिलकर उन्हें ढाँढस बंधाया। मौके पर उन्होंने सारण के डीएम को फोन करके मृतक के परिजनों को तत्काल अनुग्रह राशि के भुगतान करने की बात कही। उन्होंने डीएम से पीड़ितों के मुहल्ले में पिछले तीन माह से खाद्यान्न वितरण नही किये जाने की शिकायत भी की। उधर घटना के दूसरे दिन भी घरों में चूल्हे नही जले। सांसद की मौजूदगी में भी परिजनों की सिसकियों से माहौल गमगीन हो गया। मौके पर हेम नारायण सिंह,धर्मेन्द्र सिंह समाज,प्रो शिवाजी सिंह,मकेश्वर सिंह,निरंजन सिंह,प्यारे अंगद तथा नागेन्द्र ठाकुर समेत बड़ी संख्या में ग्रामीण आदि मौजूद थे। इससे पहले रविवार की रात पहुँचे विधायक डॉ सत्येन्द्र यादव ने परिजनों को दुःख की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की अपील की।

जय मां नव दुर्गा पूजा समिति की बैठक सम्पन्न

रक्सौल। सोमवार को छोटा परेउवा ब्लॉक रोड स्थित संकट मोचन हनुमान मंदिर के सभागार में 28 वें वर्ष दुर्गा पूजा को लेकर बैठक सम्पन्न की गई। पूजा के संरक्षक मंटू गुप्ता, प्रोफेसर अखिलेश दयाल और उपेन्द्र साह उर्फ मुखिया जी ने कहा कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी हर्षोल्लास के साथ 28 वें वर्ष उड़ीसा के कोणार्क मंदिर के तर्ज पर भव्य पंडाल निर्माण लगभग 2 किलोमीटर तक लाइट सौन्दर्यीकरण और श्रद्धालु भक्तगणों के लिए विभिन्न सुविधाएं दी जायेगी। विगत 27 वर्षों से घोड़ासहन नहर कैनाल के प्रवाहित जल धारा के बीच भव्य पंडाल का निर्माण किया जाता है जो दोनों चम्पारण के मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहता है। सर्वसम्मति से अध्यक्ष राहुल रावत, शिवपूजन साह, संरक्षण कमेटी में प्रोफेसर अखिलेश दयाल, मंटू गुप्ता, उपेन्द्र साह उर्फ मुखिया जी,मंजू साह,सिकन्दर साह, नागेश पांडेय, धुरेन्द्र साह, मनोज साह, यमुना साह, मुख्य सदस्यों में विशाल रावत, प्रिंस चौहान, अनिकेत चौहान, रवि रावत, रवि कुमार, नितेश चौहान, मुन्ना कुमार, रिषभ रावत, धर्मेन्द्र चौहान, आयुष मिश्रा, छोटू दास, सुरज रावत, मुन्ना चौहान, वरुण रावत, सचिन पटेल,केशव पटेल, विवेक चौहान, अरमान अली, कलाम अली, आशिफ अली, समीर राज, शिवनारायण यादव शामिल थे।

दाउदपुर थाना पुलिस ने सात लोगों के विरुद्ध नामजद प्राथमिकी की दर्ज

माँझी सारण दाउदपुर क्षेत्र के बनियापुर गांव में जमीनी विवाद को लेकर मारपीट की सूचना पर पहुंची 112 की पुलिस टीम पर हमला कर तीन कर्मियों को जख्मी कर दिया गया है। इस मामले में दाउदपुर थाना पुलिस ने सात लोगों के विरुद्ध नामजद प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस ने इस मामले में त्वरित कारवाई करते हुए कुल सात नामजद आरोपियों को गिरफ्तार भी कर लिया है। गिरफ्तार सभी आरोपी थाना क्षेत्र के बनियापुर गांव के बताए जाते हैं। दाउदपुर थाने में पदस्थापित एएसआई योगेंद्र प्रसाद द्वारा दर्ज कराई गई प्राथमिकी में यह कहा गया है कि बनियापुर गांव के अश्वनी प्रसाद द्वारा 112 पर फोन पर दी गई सूचना में कहा गया की मेरे पड़ोसी जमीनी विवाद को लेकर मेरे साथ मारपीट कर रहे है। जिसके आलोक में डायल 112 की पुलिस द्वारा बनियापुर पहुंच कर दोनो पक्षों को समझाने बुझाने का प्रयास किया जा रहा था। इसी बीच एक जुट होकर कुछ लोग मेरे और सिपाही के साथ मारपीट करने लगे। जिसमें मेरे दाहिने हाथ की कलाई में चोट लग गया जबकि संतोष कुमार ने ईट चलाकर सिपाही पर हमला कर दिया। जिसमें सिपाही रामशंकर मांझी और अक्ष्यवार तिवारी भी चोटिल हो गए और सरकारी वाहन को जाने से रोकने लगे। तब विपरीत परिस्थिति को भांप कर एएसआई योगेंद्र प्रसाद ने दाउदपुर थाने पर सूचना देकर अन्य पुलिसकर्मियों को भी बुला लिया। फिर पुलिस के साथ मारपीट करने एवं सरकारी काम में बाधा पहुंचाने वाले सातों आरोपियों को गिरफ्तार कर पुलिस थाना पर लेकर आ गई। गिरफ्तार आरोपियों में संतोष कुमार, राज किशोर कुमार, मिथलेश कुमार, गोलू कुमार, कमलेश्वर प्रसाद, बबलू कुमार सहित रामजी प्रसाद शामिल है। इस दौरान किये गए हमले में सभी जख्मी जवानों का उपचार एकमा पीएचसी कराया गया। पूछे जाने पर थानाध्यक्ष नवलेश ने बताया पुलिस के साथ मारपीट के आरोप में सात लोगों के विरुद्ध नामजद प्राथमिकी दर्ज कराई गई है जिसमें सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

छात्र नेताओं ने कुलपति को दिया स्मार पत्र

छपरा कार्यालय। सोमवार को आर एस ए के संयोजक उज्जवल कुमार सिंह के नेतृत्व में जयप्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर पर्मेन्द्र कुमार बाजपेई से मुलाकात कर छात्र- हित में एक स्मार पत्र सोपा गया। जिसमें परीक्षा प्रपत्र भर चुके इ.एं के छात्र-छात्राओं का जल्द से जल्द परीक्षा लेने की मांग की गई। कुलपति जयप्रकाश विश्वविद्यालय ने बताया कि 15 सितंबर तक परीक्षा लेने की घोषणा कर दी जाएगी। कुलपति ने कहा कि मैं सत्र ठीक करने में लगा हूं। कुलपति से छात्र नेताओं ने कहा कि जयप्रकाश विश्वविद्यालय छपरा में जो पद पदाधिकारी के लिए सृजित नहीं है वैसे पद पर भी शैक्षणिक कार्य को ठप करते हुए रखना। यह बिहार विश्वविद्यालय अधिनियम 1976 का भर उल्लंघन है इस पर तुरंत रोक लगाई जाए। बिना सृजित पद पदाधिकारी की नियुक्ति नहीं की जाए। अन्यथा बाध्य होकर हम लोग पटना हाई कोर्ट के दरवाजा खटखटा आएंगे।

5 सितंबर तक होगा नियोजन कैम्प का आयोजन

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। नियोजन पदाधिकारी, अवर प्रादेशिक नियोजनालय, छपरा से प्राप्त जानकारी के अनुसार श्रम संसाधन विभाग के तत्वाधान में अवर प्रादेशिक नियोजनालय, छपरा (पता-बाजार समिति, साढ़ा, प्रेमनगर, काजरिया टाईल्स के सामने, रेडियेन्ट आई०टी०आई के बगल में) द्वारा कार्यालय परिसर में दिनांक 05 सितंबर तक लगातार अपराह्न 05:00 बजे तक नियोजन कैम्प का आयोजन किया जाएगा। शूट मेकर के लिए वेतन 25000 एवं शर्ट कमा पेंट मेकर के लिए 20000 के अलावे फूड अलाउंस एवं अन्य अनाउंस भी दे होगा। बताया गया कि नियोजन कैम्प में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों के लिए आवश्यक है कि उनका निबंधन नियोजनालय में हो। नियोजनालय में निबंधन की प्रक्रिया ऑनलाईन कर दी गयी है। जो कि भारत सरकार के पोर्टल के माध्यम से होता है। कोई भी अभ्यर्थी घर बैठे अपना निबंधन इस पोर्टल के माध्यम से कर सकता है। साथ ही अवर प्रादेशिक नियोजनालय, छपरा कार्यालय में भी ऑनलाईन निबंधन हेतु संपर्क किया जा सकता है। अतः अभ्यर्थी अपना नियोजनालय निबंधन इस पोर्टल पर आवश्यक रूप से करा लेंगे। नियोजन कैम्प में भी ऑनलाईन नियोजनालय निबंधन की व्यवस्था रहेगी।

खतियानी रिकॉर्ड को ले फरियादियों ने जिलाधिकारी से वैकल्पिक व्यवस्था करने का किया अनुरोध

छपरा । रिकॉर्ड रूम की लचर व्यवस्था के कारण आम लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, कार्यालय खुलते ही लंबी-लंबी कतारें लग जा रही है, लेकिन कार्यों का निष्पादन की गति काफी धीमी है ' फलस्वरूप सुदूर ग्रामीण क्षेत्र की जनता कार्यालय का चक्कर लगाने को विवश हैं ' खतियाणी रिकॉर्ड रूम के कतार में लगी फरियादियों ने नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया कि कई दिनों से दौड़ रहे हैं, रिकॉर्ड के लिए फाईलिंग भी कर दिया गया है, लेकिन कार्यों का निष्पादन नहीं हो पा रहा है ' ग्रामीण क्षेत्र से आए लोगों ने जिलाधिकारी से इस मामले में वैकल्पिक व्यवस्था करने का अनुरोध किया है, ताकि आम लोगों को खतियान का नकल प्राप्त करने में सुविधा मिल सके ' मिली जानकारी के अनुसार सिस्टम की गड़बड़ी के कारण आम लोगों को रिकॉर्ड रूम खतियान का नकल लेने में घोर परेशानियां हो रही है ' रिकॉर्ड रूम के कर्मी भी आम लोगों की समस्याओं को नजर अंदाज कर रहे हैं, जिससे लोगों की परेशानियां बढ़ गई है ' बता दें कि बिहार सरकार द्वारा विशेष सर्वेक्षण का काम जब से शुरू किया गया है, तभी से रिकॉर्ड रूम में खतियान नकल के लिए भीड़ बढ़ गई है ' कार्यालय का आलम यह है कि गेट को बंद कर दिया जा रहा है, और घंटों तक लाईन में खड़े होने के बाद भी उनकी समस्याओं पर विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा है ' ऐसी भी जानकारी मिल रही है कि खास लोगों को तरजीह दी जा रही है, और आम लोगों को नजर अंदाज किया जा रहा है ' प्राप्त जानकारी के अनुसार खतियानी नकल के लिए टिकट और पुलिया के साथ फाईलिंग करना पड़ता है, फाईलिंग के बाद रिकॉर्ड रजिस्टर निकलता है, उसके बाद पेज के हिसाब से फिर टिकट साटना पड़ता है, तब जाकर खाता और खेसरा के हिसाब से रिकॉर्डिंग कर्मी द्वारा लिखा जाता है, इसके बाद पदाधिकारी के समक्ष पेश किया जाता है ' इधर समय पर रिकॉर्ड नहीं मिलने और एक ही काम के लिए बार-बार कार्यालय का दौड़ लगाने से जनता परेशान है ' रिकॉर्ड रूम कार्यालय का आलम यह है कि कार्यालय खुलने से लेकर बंद होने तक लोगों की भीड़ जमी रह रही है ' जिला प्रशासन को इस दिशा में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है ' ताकि जनता की हो रही परेशानियां कम हो सके ' फिलहाल रिकॉर्ड रूम कार्यालय के बाहर अफरा -तफरी का माहौल बना रह रहा है '

पूर्व मुख्यमंत्री दरोगा प्रसाद राय के जयंती पर परसा में हुआ सांस्कृतिक कार्यक्रम

प्रात: किरण, संवाददाता

परसा। नगर पंचायत परसा बाजार में पूर्व मुख्यमंत्री स्व दरोगा प्रसाद राय की 102 वीं जयंती समारोह तीन स्थलों पर बड़े धूम धाम से मनाया गया।स्व दरोगा प्रसाद राय के पुत्र पूर्व मंत्री डॉ चंद्रिका राय के नेतृत्व में स्वराज आश्रम परसा,सुपौत्री डॉ करिश्मा राय के नेतृत्व में आदर्श माध्यम विद्यालय परसा तथा पीएन कॉलेज प्राचार्य डॉ पुष्प राज गौतम के नेतृत्व में प्रभु नाथ कॉलेज परसा में जयंती समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया।इस दौरान पूर्व मंत्री डॉ चंद्रिका राय द्वारा दरोगा प्रसाद राय चौक पर स्थापित प्रतिमा तथा पीएन कॉलेज में स्थापित आदम कद मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रधांजलि अर्पित किया।वही डॉ करिशमा राय,अमनौर विधायक कृष्ण कुमार मंटू सिंह द्वारा दरोगा राय चौक पर स्थापित प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रधांजलि दिया।वही प्रभु नाथ कॉलेज में स्थापित प्रतिमा पर डॉ पुष्प राज गौतम द्वारा पुष्पांजलि अर्पित किया।जयंती समारोह को संबोधित करते हुए डॉ चंद्रिका राय ने कहा कि दरोगा बाबू गरीबो के मसीहा थे।गरीबों के लिए रात दिन काम करते थे।सड़क से सदन तक विकास के लिए आवाज बुलंद करते थे।अपने मुख्यमंत्री काल में कई अहम कार्य किया जो आज भी बिहार की जनता के लिए यादगार बनी है।उन्होंने उनके अधूरे सपनो को पूरा करने के लिए उनके आदर्शों पर चलना ही उनके सच्ची जयंती होगी।वहीं विधायक कृष्ण कुमार मंटू ने कहा कि दरोगा बाबू एक महापुरूष थे।जिन्होंने ग्रामीण क्षेत्र से पैदल सफर कर सदन तक पहुँच परसा के नाम को देश के मानचित्र पर स्थापित किया।उन्होंने उनके नाम पर बने पुस्कालय को आधुनिक सुबिधा से लैस करने का आश्वसन दिया।जबकि डॉ करिश्मा राय ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री स्व दरोगा प्रसाद राय दादा जी के आदर्शों को धरातल पर उतारने की जरूरत है।उनके सपनों को साकार कर समाज को विकास के मुख्य धारा से जोड़ने के लिए मैं कृत संकल्पित होने की बातें कही।कार्यक्रम को पूर्व जीप सदस्य नंदू राय,पूर्व जीप अध्यक्ष राजेन्द्र राय,नप मुख्यपार्षद प्रतिनिधि करमुल्लाह,डॉ नागेश्वर प्रसाद राय, राज किशोर राय,महेश सिंह,जदयू अध्यक्ष ललन सिंह,पूर्व मुखिया लगन साह,,अम्बिका राय,लाल बहादुर राय समेत दर्जनों वक्ताओं ने पूर्व मुख्यमंत्री के जीवनी पर प्रकाश डाला और उनके आदर्शों पर चलने का निर्णय लिया।वही स्वराज आश्रम तथा मध्य विद्यालय में भोजपुरी व्यास द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

त्रिमूर्ति दुर्गा पूजा समिति, रामजी चौक स्टेशन रोड की बैठक आयोजित

रक्सौल। प्रत्येक साल की भांति इस बार भी के रामजी चौक, त्रिमर्ति दुर्गा पूजा समिति की बैठक का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष सम्भु साह ने की। बैठक की शुरूआत देवी-देवता की जयकार से हुआ। उसके बाद गत वर्ष 2023 में प्राप्त सहयोग राशि एवं खर्च का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया, तत्पश्चात इस साल 2024 में पूजा की तैयारी पर चर्चा करते हुए इस साल भी धूमधाम से पूजा करने का निर्णय लिया गया। बैठक में समिति के पदाधिकारियों समेत सदस्य एवं आमजनों की उपस्थिति रही। समिति में मुख्य रूप से अध्यक्ष शम्भु साह, महासचिव दीपक कुमार,सचिव बिष्णु कुमार,कोषाध्यक्ष शेषनाथ गुप्त, चंद्रमोहन गुप्ता, नीरज कुमार, श्री भगवान,मनोज कुमार,अमर साह, राजेश कुमार,रिंकी अग्रहरी, सुरेश ,श्याम,अभिनाश मिश्रा, शामिल हैं। इस बार भी संरक्षक में उम्मा साह, जयराम प्रसाद,चित्तरंजन प्रसाद,अमर साह की भूमिका रहेगी मौके पर कृष कुमार मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

पुलिस ने जब्त किया 535 लीटर शराब, धंधेबाज हुआ फरार

दिनारा(रोहतास) पुलिस ने देशी व अंग्रेजी शराब बरामद किया है लेकिन मामले में संलिप्त धंधेबाज मौके वारदात पुलिस की गिरफ्त से भाग निकला। जानकारी देते हुए दिनारा थानाध्यक्ष विनय कुमार ने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि थाना क्षेत्र के बिचली भेलारी गांव में शराब की बिक्री धड़ल्ले से की जा रही है । सूचना मिलते ही मामले में त्वरित संज्ञान में लेते हुए चिन्हित स्थल पर पहुंच पुलिस ने छापेमारी शुरू कर दी ।जिस क्रम में उक्त गांव के रहने वाले भैयालाल पासवान के घर से करीब 535 लीटर देशी और अंग्रेजी शराब बरामद किया गया है ।उन्होंने कहा कि पुलिस की भनक लगते ही धंधेबाज भागने में सफल रहा।उन्हों ने बताया कि फरार धंधेबाज को बहुत जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

ऑटो सवार महिला से मोबाइल छीन उचक्के हुए फरार

काराकाट (रोहतास) काराकाट थाना क्षेत्र में उचक्कों की सक्रियता बढ़ती जा रही है ।सोमवार की सुबह बाइक सवार उचक्कों ने थाना क्षेत्र में ऑटो पर सवार महिला का मोबाइल फोन झपट लिया।इस दौरान महिला ऑटो से उच्चको को पकड़ने की भरपूर कोशिश की लेकिन बाइक सवार सातिर उच्चके भाग निकले।महिला ने बताया कि थाना क्षेत्र के विशुनपुर गांव से बगनाहा अपनी बच्ची की इलाज कराने के लिए निकली थी। महिला इटीम्हां बाजार से ऑटो पकड़ कर बगनाहा जा रही थी की रास्ते में किसुआडी और दहियाडी के बीच चिमनी भट्ठा के समीप सवारी ऑटो के पीछे से बाइक पर सवार दो उच्चके महिला के हाथ से मोबाइल फोन झपटा मार लिया।जिसे महिला द्वार पकड़ने की कोशिश की गई, लेकिन दोनों बाइक सवार उच्चके मोबाइल लेकर मौके से फरार हो गए।

10 किलों 500 ग्राम गांजा के साथ एक तस्कर गिरफ्तार

दुर्गावती (कैमूर) दुर्गावती पुलिस ने रविवार की देर शाम राष्ट्रीय राजमार्ग थाना के ठीक सामने एक बस यात्री से 10किलो 500 ग्राम गांजा के साथ गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। गुप्त सूचना के मुताबिक पुलिस को सूचना मिली की एक बस से एक यात्री बस में गांजा लेकर जा रहा है जिस पर पुलिस ने तुरंत सक्रियता दिखाते हुए बस को रोका और तलाशी लेना प्रारंभ की।तलाशी के क्रम में एक बैग से 10 किलो 500 ग्राम गांजा के साथ कुदरा थाना क्षेत्र के ग्राम भेलमा निवासी आलोक रंजन कुमार और कल्लू को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। इस मामले में पुलिस ने थाने में प्राथमिकी दर्ज कर अनुसंधान में जुट गई और पूछ ताछ के बाद आलोक रंजन कुमार उर्फ कल्लू को जेल भेज दिया।

अनियंत्रित बाइक सवार नहर पुल में गिरा, मौत

करगहर (रोहतास) थाना क्षेत्र के जलालपुर गांव के समीप रविवार की देर रात एक बाइक सवार युवक नहर पुल के गहरे पानी में जा गिरा।जिस नहर में डूबने से उसकी मौत हो गई। सोमवार की सुबह ग्रामीणों ने शव को देख पुलिस को सूचना दी। घटना के संबंध में बताया जाता है कि कोचस थाना क्षेत्र के नारायणपुर निवासी जनार्दन भगत का 22 वर्षीय पुत्र गोल्डन कुमार थाना क्षेत्र के समरडीहां स्थित अपने ननिहाल में आया था। जहां से देर शाम वह घर लौटने लगा तो उसके मामा जगन भगत ने उसे मना किया लेकिन वह कार्य का बहाना बनाकर निकल गया ।जलालपुर गांव के समीप तीखा मोड पर बाइक अनियंत्रित होकर पुल से नीचे गहरे पानी में गिर गई। फल स्वरुप बाइक से दबकर पानी में उसकी मौत हो गई।पुलिस ने शव को कब्जे में ले पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल सासाराम भेज दिया।

जमीनी विवाद के मारपीट में चार जख्मी

करगहर (रोहतास) थाना क्षेत्र के सहवलिया गांव मे पहले चली आ रही जमीनी विवाद मे जमकर लाठिया चली जिसमे एक पक्ष से चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए सभी घायलो का ईलाज कोचस पीएचसी मे कराया जा रहा है।जख्मी में मोहन सिंह , विपिन सिंह, रोशन सिंह, मुनिलाल सिंह गंभीर चोट आई है।

जमीनी विवाद में दो पक्षों में हुए मारपीट,चार घायल

कोचस (रोहतास) कोचस थाना क्षेत्र के सोहवलिया गांव मे सोमवार को दो पाटीदारो मे पूर्व से चली आ रही रास्ते की जमीनी विवाद को लेकर जम कर मारपीट हो गई जिसमे एक पक्ष के चार लोग बुरी तरह घायल हो गए। घायलों में एक पक्ष के विपिन सिंह त्रिभुवन सिंह रौशन सिंह तथा मोहन सिंह शामिल है।घटना के बारे में बताया जाता है कि रास्ते की जमीन को लेकर दो पक्षों में पूर्व से ही विवाद चली आ रही थी जिसमें दूसरे पक्ष के लोगो के द्वारा एक पक्ष के चार लोगों को मारपीट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। वही परिवार वालों की सहायता से सभी घायलों को कोचस के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया।

प्रशांत किशोर एक दिवसीय दौरे पर पहुँचे भोजपुर

तेजस्वी और नीतीश दोनों पर किया तीखा प्रहार

प्रात: किरण संवाददाता

भोजपुर। जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर 2 सितंबर को एकदिवसीय दौरे पर भोजपुर जिले के मुख्यालय आरा पहुँचे। जहाँ बड़ी संख्या में लोगों ने भव्य तरीके से ढोल नगाड़ों के साथ उनका स्वागत किया। सबसे पहले प्रशांत ने आरा के सर्किट हाउस में प्रेस वार्ता की जिसमें उन्होंने तेजस्वी यादव को खुली चुनौती देते हुए कहा कि तेजस्वी 5 मिनट भी समाजवाद पर बोल नहीं सकते। यदि वह 10 दिन ट्यूशन कर लें फिर भी कैमरे पर नहीं बता सकते की समाजवाद क्या है? बिहार का यह दुर्भाग्य है की पिछले 30 वर्षो से उनको नेता बनाए रखा है जिनको न तो भाषा का ज्ञान है और न ही विषय की कोई समझ है। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि उन्हें ही आप जमीनी नेता

बताते हैं। नीतीश कुमार इंजिनियर है तो हमने यह मान लिया की वहीं सबसे ज्यादा समझदार व्यक्ति है पूरे बिहार में पर यह सच नहीं है। जहाँ बुद्ध–महावीर पैदा हुए, वहाँ हर गाँव में नीतीश कुमार से ज्यादा पढ़े लिखे और समझदार लोग रहते हैं इसलिए जरुरत है की हमें गाँव–गाँव से समझदार व्यक्ति को ढूंढ कर उन्हें राजनीति में आने का मौका देना चाहिए।

प्रेस वार्ता के बाद प्रशांत किशोर के दिनचर्या का विवरण इस प्रकार है। वह ग्रीन हेवन रिसॉर्ट में जन सुराज के संस्थापक सदस्यों के साथ बैठक करेंगे जिसमें जिले के विभिन्न मुद्दों पर उनसे चर्चा करेंगे। उसके बाद प्रशांत पीरो प्रखण्ड में जनता से मिल कर उनकी समस्यों से रूबरू होंगे और उनकी समस्याओं को दूर करने के लिए अपने सुझाव देंगे। रात्रि में वह आरा के प्रबुद्ध और बुद्धिजीवियों के साथ विचार विमर्श करेंगे।

विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के 60वां स्थापना दिवस पर किया गया विचार गोष्ठी

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल के 60वा स्थापना दिवस पर आरा नगर के मीरगंज में एक निजी होटल में कार्यकर्म आयोजित हुआ जिसमे मुख्य अतिथि के रूप में अम्बरीष जी केंद्रीय मंत्री विश्व हिंदू परिषद और प्रांत संगठन मंत्री चितरंजन जी उपस्थित रहे।

दीप प्रज्वलित कर कार्यकर्म को प्रारंभ किया गया वही केंद्रीय मंत्री जी ने संगठन के कार्यो कोश्रीकृष्ण जन्माष्टमी 1964 को स्वामी चिन्मयानंद के आश्रम पवई मुम्बई में स्थापित विश्व हिन्दू परिषद विश्व भर में निवास कर रहे संपूर्ण हिन्दू समाज को जाति ,मत ,पंथ,भाषा भौगोलिक सीमा से ऊपर उठकर आग्रही,संगठित,सशक्त श्रद्धालु अपने पूर्वज परम्परा,मान्यता, मानबिन्दुओं पर गौरव रखने वाले तथा इनकी पुनर्प्रतिष्ठा करने के लिये सर्वस्व न्योछावर करने का संकल्प लेने वाले हिन्दू को खड़ा करने का संकल्प ले विश्व हिन्दू परिषद जैसा महान संगठन स्थापित हुआ

जिला अध्यक्ष राजीव रंजन ने जिला के संगठन के विस्तार को लेकर अपनी बात रखी। जिला सह मंत्री अभिषेक चौरसिया ने संबोधन में कहा विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल 60 वर्ष पूरा हुआ ये हमारे पूर्वजों की कठिन परिश्रम से संभव हुआ वही बजरंग दल जिला संयोजक अमित पाण्डेय ने बताया की आज संगठन इतने मजबूत इस्तिथि में ये सब हमारे कार्यकताओं का देन है वही जिला कोषध्यक्ष विमल पाठक नगर अध्यक्ष ओम प्रकाश दुबे जी और नगर मंत्री श्याम किशोर पाठक ने आए सभी सम्मानित व्यक्तियों को बधाई दिया उपस्थित रजनीश राजन,जतिन गोस्वामी,जतिन,रितिक अर्चना सिंह शंभू चौरसिया आलोक अंजन उर्फ छोटे उपस्थित रहे।

आरा रेलवे स्टेशन पर कुश्ती चैंपियन का लोगों ने किया भव्य स्वागत

नेपाल के काठमांडू में अर्चना और अनुपम ने विभिन्न भार वर्ग में देश के लिए जीता सिल्वर

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। नेपाल की राजधानी काठमांडू में 30 अगस्त से एक सितंबर तक चली कॉम्बैट साउथ एशिया चैंपियनशिप कुश्ती में भोजपुर की राधा कुमारी ने 69 किलोग्राम भार वर्ग में और जिले के डाककर्मी मूंजी पासवान ने 70 किलोग्राम भार वर्ग में देश के लिए गोल्ड जीता। वहीं सहोदर भाई बहन अर्चना कुमारी आर्या ने 57 किलोग्राम भार वर्ग में व अनुपम कुमार आर्य ने 86 किलोग्राम भार वर्ग में सिल्वर मेडल देश के नाम किया। यह देश, राज्य और जिले के लिए गौरव की बात है। इनकी जीत पर विभिन्न खेल संगठनों से जुड़े लोग और खेल प्रेमियों ने इन्हें देश के लिए मेडल जीतने पर बधाइयां दी है। इस प्रतियोगिता में भारत समेत आठ देशों के महिला–पुरुष पहलवानों ने भाग लिया। जिले की राधा पहलवान आरा शहर के श्री टोला मुहल्ले के दिवंगत योगेंद्र शर्मा की पुत्री है। वहीं भाई बहन अर्चना और अनुपम कोईलवर के कायमनगर के रहने वाले हैं। इनके पिता रंजन पासवान गांव के सरकारी स्कूल में शिक्षक हैं। इस प्रतियोगिता में बिहार के 37 पहलवान भाग लिए थे। देश की झोली में बिहार के कई महिला–पुरुष पहलवानों ने मेडल दिया है। इसमें आठ महिला व 29 मंडल

के साथ डाककर्मी मूंजी पासवान।

आज वतन लौटें पहलवान: संघ के प्रदेश सचिव ने बताया कि मेडल वितरण कार्यक्रम के बाद पहलवानों की टीम रविवार की देर शाम बस से देश के लिए रवाना हुई। सोमवार की सुबह अपने देश के बॉर्डर पर बिहार राज्य के रक्सौल पहुंची। यहीं से पटना समेत अन्य राज्यों के पहलवान अपने जिलों के लिए प्रस्थान किया। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए टीम 29 सितंबर को नेपाल के काठमांडू के लिए रवाना हुई थी।

पुरुष पहलवान अपने दमखम का लोहा मनवाये है। रविवार की शाम में मेडल देने का कार्यक्रम हुआ। विजेता महिला पुरुष पहलवानों को आयोजन समिति की ओर से मेडल के साथ राधा, अर्चना और अनुपम पहलवान। मेडल जीतने वाले पहलवानों को आरा रेलवे स्टेशन पर भव्य स्वागत किया गया मेडल जीतने पर बधाई देने वालों में संघ की राज्य सचिव दीपाली नदी, पीटीआई यशवंत सिंह, कन्हैया सिंह, परशुराम पांडेय, लोजपा रामविलास जिलाध्यक्ष राजेश्वर पासवान, भाजपा के अशोक शर्मा, कुश्ती कोच काशीनाथ पांडेय शामिल हैं।

डीएम, भोजपुर ने मेडल व सर्टिफिकेट दिया गया। इसकी जानकारी संघ की प्रदेश सचिव व वेट लिफ्टिंग की गोल्ड मेडलिस्ट दिपाली नंदी ने दी। बताया कि पहलवान मेडल से देश और साउथ एशिया चैंपियनशिप कुश्ती में भोजपुर जिले की राधा और डाककर्मी मूंजी पासवान पहलवान ने देश के लिए गोल्ड और अर्चना और अनुपम ने सिल्वर मेडल जीतकर मान बढ़ाया है। जिलेवासियों की तरफ से इन्हें ढेर सारी बधाइयां दी। राज्य का डंका विदेशों में बजाए हैं। इससे देश व राज्य का सीना गर्व से चौड़ा हो गया है। प्रतियोगिता में भारत के अलावा आठ देशों के पहलवान शामिल हुए। स्वागत करने में लोजपा रामविलास भोजपुर जिला अध्यक्ष राजेश्वर पासवान ,सोनू सिंह जिला अध्यक्ष किसान प्रकोष्ठ,विकास सिंह,संतोष पासवान,अरविंद ओझा,राजेश साहू,काकू सिंह,प्रमोद पासवान,संजय प्रसाद ,अविनाश सिसोदिया,आशीष सिसोदिया,अरविंद कुमार आदि सैकड़ों लोगो ने आरा स्टेशन पर गर्म जोशी के साथ स्वागत किया। जिला अध्यक्ष राजेश्वर पासवान ने कहा कि तीनो खिलाड़ियों द्वारा जो मेडल मिला भोजपुर ही नही पूरा देश गर्वानित हुआ है ।आज सच मुच में तीनों खिलाड़ियों साबित कर दिया कि प्रतिभा के सामने गरीबी भी बौना पड़ गया ।जो कोई लक्षण ठान लेगा वह जरूर कामयाब होगा।

जनसुराज के संस्थापक का कोइलवर में नगर अध्यक्ष सरताज आलम ने किया जोरदार स्वागत

आरा। जनसुराज के संस्थापक और राष्ट्रीय संयोजक प्रशांत किशोर का आरा और पीरो जाने के क्रम में शाहाबाद के प्रवेश द्वार पर कोइलवर में भव्य और जोरदार स्वागत किया गया। नगर पंचायत कोईलवर के मुख्य पार्षद सरताज आलम उर्फ सोनू खान के नेतृत्व में हजारों की भीड़ ने ढोल नगाड़े और गाजे बाजे के साथ उनका स्वागत किया। सोमवार की सुबह पटना से आरा जाने के क्रम में वे जैसे ही कोईलवर पहुंचे उन्हें फूल मालाओं से लाद दिया गया। हजारों की भीड़ ने प्रशांत किशोर जिंदाबाद और जय बिहार जय जय बिहार के जयघोष के साथ उनका जोरदार स्वागत किया। इस दौरान काफी संख्या में जिले के अन्य इलाकों से आये जनप्रतिनिधि भी थे। कोईलवर में गाजे बाजे ढोल नगाड़े और फूल माला से स्वागत के बाद सैकड़ो गाड़ियों की काफिले के साथ मुख्य पार्षद सरताज आलम उनकी आगवानी कर उन्हें आरा के सर्किट हाउस तक ले गए ।इस मौके पर मुख्य पार्षद सरताज आलम उर्फ सोनू खान ने के बताया कि प्रशांत किशोर जी का विजन बिहार के भविष्य के लिए एकदम स्पष्ट है। वे वर्षो से जकड़े बिहार के तकदीर को बदलना चाहते हैं।

अपडेट रजिस्टर 02 के सुधार बिना ही सर्वे का काम शुरू, लोग परेशान

प्रात: किरण संवाददाता

भभुआ (कैमूर) बिहार सरकार के द्वारा जनता की जमीन और सरकारी जमीन के दस्तावेज को ऑनलाइन कर दिया गया। लेकिन उसमें जो अशुद्धियां थी उसका सुधार भी पूर्ण रूप से नहीं हो पाया की बिहार में बिहार सरकार के आदेश के बाद सर्वे काम शुरू कर दिया गया। सरकार के द्वारा सरकारी जमीन को ऑनलाइन करते समय दस्तावेज में आम जनता के किसे के जमीन का खाता नंबर सही नहीं है तो किसी का प्लांट नंबर सही नहीं है। किसान के द्वारा दिए गए आवेदन के बाद परिमार्जन के द्वारा कुछ अशुद्धियां दूर हुई तो कुछ अशुद्धियों को दूर करने में कर्मचारी आना–कानी करते रहे जिसका नतीजा रहा की आज तक पूर्ण रूप से ऑनलाइन किए गए जनता की जमीन का दस्तावेज पूर्ण रूप से शुद्ध नहीं हो पाया। किसी किसी गांव का चकबंदी के द्वारा जमीन का चकबंदी करके मौज संपुष्ट कर दिया गया है।

लेकिन आज तक न उन किसानों को नक्शा मिला न खतियान लेकिन सरकार के द्वारा जमीन का लगान सरकारी रेट से आज भी लिया जा रहा है। 34 वर्षो से बंद चकबंदी विभाग को नीतीश सरकार में चालू किया गया तो वह भी आंशिक रूप से न ऑफिस में पूर्ण रूप से कर्मचारी हैं न कोई कार्य प्रगति पर है। सर्वे विभाग के द्वारा अधिसूचना जारी कर दी गई है लेकिन एक कर्मचारी के जिम्मे 10 से 15 गांव दे दिए गए हैं।

जिससे कर्मचारी के साथ आमजन भी उलझन में पड़ गए हैं। यदि सरकार द्वारा सर्वे करना ही है तो एक गांव में कम से कम पांच कर्मचारी एक सप्ताह कैंप करके किसानो की जमीन को उनके दस्तावेज के द्वारा देखकर कंप्यूटर में लोड कर देते तो कितनी अच्छी बातें होती। सरकार के द्वारा अपलोड किए गए सरकारी दस्तावेज यदि मूल रूप से सही होते तो किसानों के जमीन का सर्वे करते समय वह रामबाण की तरफ सहायक होते जिससे सर्वे कर रहे कर्मचारियों को आसानी होती है। सर्वे विभाग के द्वारा सारे युवाओं को लाकर सर्वे के काम में लगा दिया गया है लेकिन उनकी देखरेख में एक भी अनुभवी उम्र के कर्मचारियों को नहीं रखा गया है जिससे अनेकों समस्या उत्पन्न हो रही है। अब देखना यह है कि चुनावी रणनीति के लिए सर्वे के काम वीणा जो नीतीश सरकार ने उठाया है उससे चुनाव में कितना फायदा होता है।

बिहिया में किया गया डॉक्टर महावीर प्रसाद को अंग वस्त्र से सम्मानित

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। (भोजपुर) हरखेकेन कुमार धर्मशाला प्रांगण में बाबा गणिनाथ गोविंद जी महाराज का जयंती एवं पूजन समारोह बड़े धूमधाम से अखिल भारतीय मध्यदेशीय वैश्य सभा आरा द्वारा धूमधाम से मनाई गई। जयंती समारोह का उद्घाटन आर सांसद सुदामा प्रसाद ने किया सबसे पहले झंडा तोलन भोजपुर बक्सर एमएलसी राधाचरण शाह हकीम प्रसाद शत्रुघ्न प्रसाद ने की इस जयंती समारोह में डॉ विजय गुप्ता डॉक्टर महावीर प्रसाद डॉ नरेश प्रसाद कन्हैया प्रसाद परमेश्वर प्रसाद मदन साह मुखिया

वही मुख्य अतिथि के रूप में विधान पार्षद राधाचरण साह उर्फ सेठ जी आरा नगर निगम कि मेयर इंदु देवी समाजसेवी अलोक कुमार अंजन शंभू चोरसिया राजकिशोर शर्मा ओम प्रकाश मुन्ना अमरेंद्र प्रताप सिंह नगर विधायक आरा वआरा सांसद सुदामा प्रसाद उपस्थित थे सभी अतिथियों को स्वागत व प्रसाद ग्रहण कराया। उद्घाटन के बाद पूजा कमिटी

के द्वारा सभी अतिथियों को गमछा व फूलमाला देकर सम्मानित भी किया गया। समारोह की अध्यक्षता रूपेश कुमार ने की एमएलसी राधाचरण साह ने कहा कि यह पूजन समारोह शांति और आपसी भाईचारे का संदेश देता हैं व बिगड़े रिश्ते को भी अपना बनाने में अहम भूमिका रखता है। बाबा गणीनाथ को जो सचे मन से पूजा पाठ करेगा उनका कल्याण जरूर होगा। वही आरा सांसद ने भी गणीनाथ पूजा में आये सभी भक्तों को बहुत बहुत बधाई दिया और कहा कि ऐसे ही आपलोग आरा में बाबा गणीनाथ जी महाराज का पूजा पाठ करते रहे मेरा सहयोग हमेशा रहेगा। बता दे कि प्रखण्ड में मात्र आरा में ही गणीनाथ महाराज की पूजा धूमधाम से किया जाता है। पूरे जिले से महिला, पुरुष भक्तों की भीड़ पूजा करने व प्रसाद चढ़ाने को ले जुटती है। पूजा अर्चना के बाद साम में बच्चों द्वारा संस्कृतिक कार्यक्रम भी किया गया शांतिपूर्ण पूजा कराने में पूजा कमिटी के कार्यकताओं का भरपूर सहयोग रहा। इस पूजा समारोह में प्रभु प्रसाद पुजारी के रूप में बिहारी गुप्ता कृष्ण कुमार उत्तम कुमार दीपक कुमार गुप्ता मदन जी राजकुमार कामेश्वर जी का भरपूर सहयोग रहा।

भाजपा युवा मोर्चा के जिला महामंत्री सह अधिवक्ता राहुल सिंह ने बार एसोसिएशन का किया सदस्यता ग्रहण

आरा। भाजपा युवा मोर्चा के जिला महामंत्री सह अधिवक्ता राहुल सिंह ने बार एसोसिएशन आरा का सदस्यता ग्रहण किया, सदस्यता बार एसोसिएशन आरा के अध्यक्ष अधिवक्ता राकेश मिश्रा ,और उपाध्यक्ष चंडेश्वर राय द्वारा दिलाया गया साथ में आरा सिविल कोर्ट के पी .पी. विद्वान और वरिष्ठ अधिवक्ता नागेश्वर

दुबे, अधिवक्ता विजेता वर्धन,द्वारा मिठाई खिलाकर आशीर्वाद और बधाई दिया गया इस मौके पर युवा मोर्चा विधि प्रकोष्ठ के अधिवक्ता अंजनी कुमार अधिवक्ता विनीता सिंह अधिवक्ता सुशील टाइगर बीजेपी बिहार प्रदेश के कार्य समिति सदस्य राजेंद्र तिवारी भाजपा युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष विशुद्ध विभु जैन जी , महामंत्री अंकित सिंह चंद्रवंशी, जिला उपाध्यक्ष राकेश सिंह, अंकित तिवारी, धर्मेंद्र पांडे, आदि सिंह आदि, मुकेश कुशवाहा, सरवन कुमार, रवि केशरी, जिला मंत्री कुमार प्रतीक, मनोरंजन तिवारी, पल्लवी प्रियदर्शी,कुणाल सिंह, आशोतोश मिश्रा, राजीव कुमार ऋषि, अंकित कुमार, अभय सिंह, राजीव सिंह,राहुल सिंह,जी, अंकित प्रियदर्शी, सौरभ सिंह, विशाल सिंह, अमलेश यादव कई लोगों द्वारा शुभकामनाएं और बधाई दिया गया।

नारायण वर्ल्ड स्कूल को मिली एनसीसी उप ईकाई केंद्र की मान्यता

सासाराम (रोहतास) बिहार बटालियन 42 एनसीसी के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल डीएस मल्लिक ने जिला के जमुहार स्थित नारायण वर्ल्ड स्कूल को एनसीसी की उप ईकाई केंद्र का दिया मान्यता। एनसीसी की विस्तार योजना के अंतर्गत स्वीकृत इस उप–ईकाई केंद्र का स्वीकृति पत्र कर्नल डीएस मलिक ने शैल फाउंडेशन के सचिव गोविन्द नारायण सिंह एवं संस्थान की निदेशक मैडम मोनिका सिंह को संयुक्त रुप से प्रदान किया। विदित हो कि 100 रिक्तियां वाली इस उप ईकाई में विद्यार्थियों का प्रशिक्षण 2024–25 के इसी शैक्षणिक सत्र से शुरू हो जाएगा। जो एकता और अनुशासन के मूल मंत्र से संचालित राष्ट्रीय कैडेट कोर एनसीसी 15 जुलाई 1948 से देश की भावी पीढ़ी में अनुशासन के नए मानक गढ़ने का परिचायक रहा है। गोविन्द नारायण सिंह ने कर्नल डीएस मलिक को अंग वस्त्र एवं पुष्पगुच्छ देकर विद्यालय के प्रति उनके विश्वास के लिए अपना आभार व्यक्त किया। उन्होंने उम्मीद जताई की इससे स्कूल के विद्यार्थियों को एक नई दिशा मिलेगी। विद्यालय की निदेशक महोदया ने इस स्वीकृति पर विद्यालय परिवार की ओर से हर्ष व्यक्त किया। उनका मानना है कि एनसीसी प्रशिक्षण प्राप्त कर स्कूल के विद्यार्थियों में नई ऊर्जा का संचार होगा। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढ़ी को सकारात्मक एवं सक्रिय कार्य में कार्यरत रखना प्रतिभा उन्नयन का एक बेहतर तरीका है। उन्होंने आशा व्यक्त किया कि यह इकाई विद्यार्थियों के लिए एक उत्तम मंच प्रदान करेगा और साथ ही साथ उनमें रोजगार सृजन की भी दक्षता विकसित करेगा।

कॉम्बैट साउथ एशिया चैंपियनशिप में सिल्वर मेडल विजेता कुश्ती खिलाड़ी का कायमनगर में भव्य स्वागत

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। नेपाल की राजधानी काठमांडू में आयोजित कॉम्बैट साउथ एशिया चैंपियनशिप कुश्ती में सिल्वर मेडल जीतकर आने के बाद कोईलवर के कायमनगर में कुश्ती खिलाड़ी और सहोदर भाई बहन अनुपम कुमार आर्य और अर्चना कुमारी आर्य का भव्य स्वागत किया गया। पदक जीतकर सोमवार की शाम अपने घर कायमनगर लौटे दोनों भाई बहनों का स्वागत ग्रामीणों और परिजनों

ने तिलक लगाकर और फूल माला पहनाकर किया। इस स्वागत से दोनों भाई बहन अभिभूत दिखे ।कायमनगर पहुँचते ही उच्च माध्यमिक विद्यालय कायमनगर के शिक्षक शिक्षिकाओं ने अपने दोनों पूर्ववर्ती छात्र छात्राओं का स्वागत माला पहनाकर किया। इसके बाद घर पहुचने पर परिजनों ने तिलक लगाकर और आरती कर दोनों का स्वागत किया। इस मौके पर कुश्ती में सिल्वर मेडल जीतने वाले भाई बहनों ने कहा कि इतना प्यार पाकर अभिभूत हूँ। यह स्नेह हमे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता रहेगा ।उन्होंने बताया कि कॉम्बैट साउथ एशिया चैंपियनशिप में आठ देशों के महिला पुरुष पहलवानों ने भाग लिया था जिसमे भारत के अलावा पाकिस्तान, उज्बेकिस्तान, श्रीलंका,कजाकिस्तान, अफगानिस्तान और मेजबान नेपाल ने भाग लिया था।आठ देशों के पहलवानों के बीच हुए प्रतियोगिता में दोनों भाई बहनों ने सिल्वर मेडल पर अपना कब्जा जमाया।दोनों पहलवानों में से बहन अर्चना आर्य ने57किलो भारवर्ग जबकि भाई अनुपम आर्या ने 86किलो भारवर्ग में यह पदक अपने नाम किया है ।बच्चों की सफलता से आह्लादित पिता रंजन ने उनकी सफलता का श्रेय उनकी मेहनत को दिया है।

बहुजन समाज पार्टी की कमेटी का हुआ विस्तार

कुर्था। प्रखंड स्थित कन्या उच्च विद्यालय कुर्था में बहुजन समाज पार्टी की बैठक हुई, जिसकी अध्यक्षता प्रखंड अध्यक्ष अनिल दास ने की। बैठक में सर्वसम्मति से संगठन का विस्तार किया गया जिसमें आर्यन राज को कुर्था विधानसभा अध्यक्ष पद पर निर्वाचित किया गया। विधानसभा संयोजक के रूप में डॉक्टर सुजीत कुमार शास्त्री, विधानसभा महासचिव के पद पर चंदन कुमार, कुर्था प्रखंड के प्रखंड उपाध्यक्ष पद पर अनुज कुमार मांझी, प्रखंड महासचिव पद पर धर्मपाल कुमार भीम, प्रखंड सचिव रंजन कुमार, कोषाध्यक्ष के पद पर संतोष कुमार को निर्वाचित किया गया। बैठक में यह तय किया गया कि सभी पदाधिकारी समन्वय बनाते हुए बूथ कमिटी बनाने का कार्य करेंगे। बैठक में जिलाध्यक्ष मनोज सिंह यादव, एवं वंशी प्रखंड अध्यक्ष कामेश्वर राम एवं जिला सचिव दिलीप कुमार उपस्थित रहे।

5 दिवसीय जिलास्तरीय विधालय खेल प्रतियोगिता का किया गया उद्घाटन

भोजपुर। खेल विभाग बिहार सरकार, बिहार राज्य खेल प्राधिकरण एवं जिला प्रशासन भोजपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 5 दिवसीय जिलास्तरीय विधालय खेल प्रतियोगिता का उद्घाटन ए डी एम भोजपुर एवं जिला खेल पदाधिकारी संजीव कुमार सिंह ने दिप प्रज्वलित कर किया। जिला स्तरीय विधालय खेल में 21 खेल विधा में भोजपुर जिला के विधालय के खिलाड़ी हिस्सा लिया। विधालय खेल में तीन वर्गो में आयोजित प्रतियोगिता अण्डर 14,17,19 बालक बालिका है।इस प्रतियोगिता में भोजपुर जिला के 150 विधालय के कुल 4500 खिलाड़ी हिस्सा लिया। जिसमें बालक 3000 और बालिका 1500 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। मार्च पास्ट के दौरान कहथु मसौढ़ी उच्च विद्यालय कि छात्राओं द्वारा बैण्ड बजा कर शुरू किया गया। संस्कृति कार्यक्रम दक्ष कैरियर पब्लिक विद्यालय के छात्रों द्वारा प्रस्तुत किया गया। आज महाराजा महाविद्यालय के खेल मैदान पर एथलेटिक्स का प्रतियोगिता कराया गया ।चर्च मैदान पर कबड्डी का प्रतियोगिता, वीर कुंवर सिंह स्टेडियम में खो खो का प्रतियोगिता कराया गया।

मंत्री से उद्योगपति ने बिहार को कृषि उद्योग दर्जा दिलाने की मांग किया

नावानगर (बक्सर) भारत प्लस एथेनॉल कंपनी के सीएमडी सह उद्योगपति अजय कुमार सिंह ने बिहार के पर्यटन एवं उद्योग मंत्री नीतीश मिश्रा से मिलकर एक तरफ बिहार में और अधिक उद्योग लगाने पर चर्चा किया तो दूसरी तरफ किसानों की खेती व कृषि को उद्योग का दर्जा मिला इस पर विस्तृत चर्चा की गई ।जहां श्री सिंह ने मंत्री से कृषि को बताते कहा कि किसान अपने खेतों से धान,गेहूं,चना, मसूर,मसाला सहित अन्य चीजों का उत्पादन करते हैं फिर इन्हें उद्योग का दर्जा क्यों नहीं,उद्योग पर वार्ता करते कहा कि किसी चीज का निर्माण या उत्पादन ही उद्योग है ।फिर किसानों द्वारा किए जा रहे इस उत्पादन कार्य को उद्योग का दर्जा नहीं मिलना सोचनीय विषय है ।श्री सिंह ने मंत्री से आगे कहा कि कृषि को उद्योग का दर्जा मिलने से किसानों द्वारा किए गए उत्पादन में भारी बढ़ोतरी होगी और किसान और अधिक खुशहाल होंगे ।कृषि को उद्योग का दर्जा मिलने से किसान आर्थिक समृद्ध बनेंगे और अपने द्वारा प्रत्येक उत्पादन को बढ़ावा देंगे।आगे श्री सिंह ने बक्सर के नावानगर में औद्योगिक क्षेत्र को एक्सपोर्ट जोन बनाने के लिए धन्यवाद भी दिया जहां श्री सिंह ने भोजपुर में उद्योग लगाने की बात कह उद्योग का विस्तार करने की बात मंत्री से कही ।किसान के खेती को उद्योग का दर्जा दिया जाना चाहिए इस संबंध में वार्ता करते कहा कि कृषि को उद्योग का दर्जा मिल जाने से एक तरफ किसान आर्थिक समृद्धता को पाएंगे तो दूसरी तरफ किसान खेती से जो पीछे भागने लगे है और खेती को घाटा का सौदा बताने लगे है उनमें भारी इजाफा होगा और किसान बढ़ चढ़कर खेती के कार्य में जुटेंगे। मंत्री से मुलाकात के दौरान श्री सिंह ने मंत्री को भगवा अंग वस्त्र तथा भागवत गीता भेंट किया।

मदर टेरेसा सेवाकर्मी के सयुक्त तत्वाधान में 102वां अंजान अज्ञात लवारिस शव के रुप में किया गया दाह संस्कार

आरा:संत रविदास जनसेवा संगठन भोजपुर एवं टीम मदर टेरेसा सेवाकर्मी भोजपुर आरा के सयुक्त तत्वाधान में 102वां अंजान अज्ञात लवारिस शव के रुप में दाह संस्कार किया गया। बताते चले की लगभग 50वर्षिय अज्ञात लवारिस हालात में मृत पुरूष का शव बिहिया थाना द्वारा दिनांक 30अगस्त को पोस्मार्टम कराने के बाद सामाजिक संस्था को भोजपुर बिहिया थाना के (रक) सब इंस्पेक्टर मिना कुमारी एवं चकुदार राजेन्द्र सिंह द्वारा प्राप्त हुआ सदर अस्पताल परिसर आरा के पुराना ईमरजेंशी वार्ड में बहुत ही खराब हालात

में पड़ा जख्मी भर्ती असहाय अज्ञात हिन्दू लवारिस मरिज का इलाज के दौरान दिनांक 30अगस्त की सुबह में हुई मौत जिसको बाद में पोस्मार्टम करवाकर पहचान हेतु नियमानुसार 72घंटे के लिए सुरक्षित रखा गया। अज्ञात लवारिस मानव शव का विधिवत अपना परिजन वारिस बनकर निस्वार्थ भाव से आरा गांगी शमशान मानव मोक्ष घाट पर अंतिम क्रियाक्रम के रुप में हिन्दू रितीरिवाज के अनुसार संस्था संस्थापक महासचिव सह समाजसेवी अमरदीप कुमार जय ने 102वीं अज्ञात लवारिस शव के रूप में मुखाग्नी देकर दाह संस्कार कराने का बखूबी कार्य किया संस्था के नियमित मंथली सक्रिय सदस्य पकड़ी आरा निवासी रिटायर बैंककर्मी अशोक कुमार श्रीवास्त्व संग संस्था के मुख्य संरक्षक मिश्रीलाल वी जैन के आर्थिक सहयोग के बल पर मानव मोक्ष दिलाया गया। दाह संस्कार कराने से पूर्व में सिविल सर्जन कार्यलय के बाहर ही संस्थापक महासचिव के कर कमलो द्वारा मृत आत्मा के शांति हेतु एक मिनत का मौनव्रत धारन कर संस्था के सभी सक्रिय सेवाकर्मी एवं सेवादार सदस्यो के तरफ से पुस्प चढ़ा कर श्रद्धांजली अर्पित कर गांगी शमशान घाट आरा के लिए शव को रवाना किया गया । दाह संस्कार के इस पुनित नेक कार्य में हौसला बढ़ाने से लेकर प्रेरणास्रोत के रुप में मिश्रीलाल वी जैन , अशोक कुमार श्रीवास्त्व , लकड़ी विक्रेता पवन कुमार यादव , जुगली राम आदि के साथ गांगी शमशान घाट के सभी उपस्थित घटवार सबो ने भी सक्रिय योगदान दिया रहा है।

संक्षिप्त खबरें

समाज में हर शिक्षक है बस आप में सीखने की ललक हो

गया। गया शहर के रेडक्रास भवन रोटरी गया सिटी के सदस्यों ने रक्तदान किया है ब्लड बैंक में रक्त की कमी है इसे दुर करने के लिए हम सभी आगे बढ़कर रक्तदान करना चाहिए इस रक्तदान करने वालो में पूर्व अध्यक्ष विजय भलोटिया, अमित कुमार सिंह, पुनित खेतान, के अलावा क्लब के अध्यक्ष राय आनंदवर्धन, सचिव डॉ अमिता सिन्हा, डा रतन कुमार, अमरेश कुमार, राजकुमार दुबे, विपेन्द्र अग्रवाल, डॉ पी के अग्रवाल लोग शामिल रहे थे वही शाम में एपीआई भवन शिक्षकों को किया सम्मानित इस मौके पर शिक्षको ने कहा कि जो शिक्षक स्कूल एवं कॉलेज में पढ़ाते हैं वह शिक्षक है लोगों के अंदर सिखने की भावना होनी चाहिए हर कोई कुछ न कुछ हमे सीख देता है जिसे हमे समझने की जरूरत है इस मौके पर गया कॉलेज के प्राचार्य डॉ प्रो सतीश सिंह चन्द्र, महादेव प्रसाद, वंदना दफ्तार, सिस्टर रीना, ई अवधेश कुमार, रश्मि रानी, डॉ उमेश प्रसाद को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। आगे वेसे जो सदस्य जो कही ना कही शिक्षक है उन्हें भी मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया है। इस क्लब के अध्यक्ष एवं सचिव और पदाधिकारी के अलावा काफी संख्या में लोगों उपस्थिति थे।

दक्षिण-पश्चिम रेलवे में ट्रैक पर पानी आ जाने के कारण संघमित्रा एवं दानापुर-बेंगलुरु स्पेशल ट्रेन का परिचालन रदद

हाजीपुर। दक्षिण-पश्चिम रेलवे के रायनपाडु स्टेशन पर पानी के तेज बहाव तथा विजयवाड़ा-निडदवोलु रेलखंड पर रेल ट्रैक में ब्रीच आ जाने के कारण निम्नलिखित ट्रेनों का परिचालन रद्द किया गया है - 02.सितंबर को दानापुर से खुलने वाली गाड़ी सं. 12296 दानापुर-एसएमभीटी बेंगलुरु संघमित्रा एक्सप्रेस 02 सितंबर को एसएमभीटी, बेंगलुरु से खुलने वाली गाड़ी सं. 12295 एसएमभीटी-दानापुर संघमित्रा एक्सप्रेस 02 सितंबर को बेंगलुरु से खुलने वाली गाड़ी सं. 06509 बेंगलुरु-दानापुर स्पेशल 04 सितंबर को दानापुर से खुलने वाली गाड़ी सं. 06510 दानापुर-बेंगलुरु स्पेशल

सेवानिवृत्त 22 रेलकर्मियों का किया गया समापक भुगतान

दानापुर : पूर्व मध्य रेल, दानापुर रेल मंडल द्वारा सेवानिवृत्त हुए 22 रेलकर्मियों को दानापुर, सभागार में समापक भुगतान एवं विदाई दिया गया। इसमें रेलसेवा से सेवानिवृत्त उपस्थित रेलकर्मचारियों को मंडल रेल प्रबंधक, दानापुर श्री जयंत कुमार चौधरी द्वारा अंगवस्त्र एवं डायरी देकर सम्मानित करते हुए भावभीनी विदाई दी गई। कार्यक्रम की शुरुआत वरीय मंडल कार्मिक अधिकारी द्वारा किया गया; जिन्होंने आज के समापक भुगतान का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया। मंडल रेल प्रबंधक, दानापुर ने अपने संबोधन में उपस्थित सेवानिवृत्त होने वाले रेल कर्मचारियों के सुखद, स्वस्थ एवं समृद्ध भविष्य की कामना करते हुए कहा कि अपने ह्लसमापक भुगतानह्न की राशि को असुरक्षित जगहों पर निवेश ना करें। जीवन में आनंदमय रहने के लिए स्वस्थ रहना जरूरी है, साथ ही साथ सामाजिक रूप से भी सक्रिय रहना है। सेवानिवृत्त होने वाले रेल कर्मियों को एक्युप्रेशर, होमियोपैथ एवं आयुर्वेदिक के डॉक्टरों द्वारा स्वस्थ तथा दीघार्यु जीवन जीने के तरीके को विस्तारपुर्वक बताया गया। इस मौके पर मंडल के अन्य अधिकारी एवं ई. सी. आर. के. यू. तथा एस.सी.& एस.टी. एसोसिएशन के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहें।

आईआईएम ने पंचायती राज्य संस्थानों के निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए मैनेजमेंट डेवलपमेंट प्रोग्राम का किया आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

गया। आईआईएम बोधगया ने 2 सितंबर को पंचायती राज मंत्रालय के सहयोग से पांच दिवसीय आवासीय मैनेजमेंट डेवलपमेंट प्रोग्राम एमडीपी की शुरुआत की जिसमें बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल सहित सात भारतीय राज्यों से आए पंचायती राज संस्थानों के 35 निर्वाचित प्रतिनिधियों एवं पदाधिकारियों ने भाग लिया। इस प्रोग्राम का उद्देश्य स्थानीय नेताओं को राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए पंचायती स्तर पर प्रभावी शासन के लिए आवश्यक कौशल से लैस करना है इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम की शुरुआत आईआईएम बोधगया निदेशक डॉ. विनीता एस सहाय और पंचायती राज मंत्रालय के निदेशक क्षमता निर्माण विपुल उज्जवल द्वारा दीप प्रज्वलन समारोह के साथ हुई है। विपुल उज्जवल 2009 बैच, पंजाब कैडर के एक आईएएस अधिकारी हैं, जिन्होंने पहले पंजाब सरकार के लिए सामाजिक सुरक्षा, महिला और बाल विकास निदेशक के रूप में काम किया है उपस्थित सभी को सम्बोधित करते हुए डॉ. विनीता एस. सहाय ने बताया कि युवा पीढ़ी सीखने के लिए उत्सुक है, और शिक्षकों के रूप में, यह हमारी जिम्मेदारी है कि वे आवश्यक कौशल से लैस हों। इस दिशा में कोई संभव चूक होने का दोष भी शिक्षकों पर ही आता है, अतः उन्हें भविष्य के लिए युवाओं को कुशल बनाने के साथ ही उनकी क्षमता को बढ़ाने को भी प्राथमिकता देनी चाहिए। विपुल उज्जवल ने अपने सम्बोधन में कहा कि सक्षम प्रशासन ही विकसित भारत की कुंजी है। इस कार्यक्रम में उनकी उपस्थिति पंचायती राज संस्थानों के माध्यम से ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने में शिक्षण संस्थानों और सरकार के बीच महत्वपूर्ण सहयोग को उजागर करती है। भारत के ग्रामीण स्वशासन का एक महत्वपूर्ण भाग, पंचायती राज संस्थाएँ पीआरआई, 1992 में 73वें संवैधानिक संशोधन द्वारा स्थापित की गयी। इससे जुड़े अधिकारी सत्ता के विकेंद्रीकरण, स्थानीय समुदायों को स्वशासन में सक्षम बनाने एवं उनकी विशिष्ट विकास आवश्यकताओं को संबोधित करने पर जोर देते हैं। स्थानीय नेताओं को निर्णय लेने का अधिकार देकर, पीआरआई जवाबदेही बढ़ाने के साथ-साथ यह सुनिश्चित करते हैं कि ग्रामीण विकास कार्यक्रम इन समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों के अनुरूप अधिक प्रभावी ढंग से तैयार किए जाएं। एमडीपी ने सिद्धांत-केंद्रित नेतृत्व, मिशन, विजन एवं लक्ष्य सरेखण, सतत विकास लक्ष्य एसडीजी, ग्राम पंचायत एवं ग्रामीण नवाचार जैसे प्रमुख विषयों पर चर्चा की गई है। इस ज्ञान के साथ, पीआरआई सदस्य उभरती चुनौतियों से निपटने में अपने समुदायों का नेतृत्व करने के साथ ही यह सुनिश्चित करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होंगे कि विकास से जुड़े सभी कदम संधारणीय होने के साथ-साथ दीर्घकालिक सफलता की ओर अग्रसर हैं। आईआईएम बोधगया लीडरशिप और प्रबंधन क्षमता विकसित करने में पंचायती राज मंत्रालय का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है एवं पहले भी बिहार सरकार के विभिन्न विभागों, जैसे जल संसाधन विभाग, राज्य स्वास्थ्य सोसायटी, बिहार पुलिस अकादमी, बिपार्ड और उद्योग विभाग को इन क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रदान करने में सक्रिय रूप से शामिल रहा है।

इनर व्हील क्लब ऑफ गया के बैनर तले सोनू लाल बरनवाल स्कूल में आयोजित किए गए दो कार्यक्रम

प्रात : किरण संवाददाता

गया इनर व्हील क्लब ऑफ गया द्वारा एक वाटर कूलर स्कूल में लगवाया गया और साथ ही इसमें फिल्टर की भी व्यवस्था की गई है जिससे की शुद्ध और साफ पानी लड़कियां को मुहैया कराया जा सके। जिसे देखकर लड़कियां बहुत खुश हुई है। अध्यक्ष। तृप्ति गुप्ता ने बताया कि सोनू लाल बरनवाल स्कूल को इनर व्हील क्लब ऑफ गया द्वारा गोद लिया गया है। समय-समय पर स्कूल मे अनेक कार्यक्रम किए जाएंगे इसी दौरान आज वाटर कूलर यहां लगाया गया है। महिला सुरक्षा - एक ज्वलंत मुद्दा विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया है। सबसे पहले इस परिचर्चा को आरंभ करते हुए पी पी सीमा भदानी ने बताया कि इतने संघर्ष के बाद भी महिलाएं अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं करती है इसकी वजहों पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि इस का मुख्य कारण शिक्षा का अभाव, पितृसत्तात्मक समाज, महिलाओं के लिए समाज की नकारात्मक सोच, महिलाओं का आत्मनिर्भर ना होना और आज भी महिला और पुरुषों के बीच भेदभाव की मानसिकता आदि मुख्य है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार संस्कार बेटियों को दिया जाता है इस तरह का संस्कार लड़कों को भी देने की जरूरत है जिससे कि वह एक आदर के भाव से अपने आसपास की महिलाओं को देखें गुड टच और बेड टच के बारे में भी बताया और कहा कि अपने आसपास के परिवेश में ही लड़कियों को ज्यादा चौकना चौकन्ना रहने की जरूरत है। इसी परिचर्चा के दौरान निर्भया कांड का मुद्दा उठाते हुए लड़कियों ने कहा कि जिस केस पर सभी तरह के साक्ष्य मौजूद थे उसके न्याय में 7 वर्ष का लंबा समय लग गया तो किस तरह से अपने आप को महिलाएं प्रोत्साहित महसूस करेंगे और आगे आएंगे? इस पर उन्होंने एक प्रश्न चिन्ह लगाया न्याय व्यवस्था में भी सुधार की आवश्यकता पर लड़कियों ने जोर दिया गया है। इस परिचर्चा में प्रकृति कुमारी, सलेहा परवीन, वैष्णवी कुमारी ने बढ़ चढ़ के हिस्सा लिया है। शिक्षिकाओं ने भी इस परिचर्चा में अपने विचार व्यक्त किया तथा इनर व्हील क्लब ऑफ गया को विशेष आभार प्रदान किया है।

जीबीएम कॉलेज में पोषण माह के तहत टेबल से परे विषय पर एक-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

गया। गौतम बुद्ध महिला कॉलेज में गृहविज्ञान विभाग, राष्ट्रीय सेवा योजना एवं सेहत केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में 1 सितंबर से 30 सितंबर तक चलने वाले पोषण माह के तहत वक्ताओं ने ह्लटेबल से परेह्न विषय पर एक-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। संगोष्ठी का शुभारंभ मंचासीन प्रभारी प्रधानाचार्य डॉ. सहदेब बाउरी, कार्यक्रम संयोजक गृहविज्ञान विभागाध्यक्ष-सह-एनएसएस पदाधिकारी डॉ. प्रियंका कुमारी, यूनिसेफ से आये मुख्य वक्ता संजय कुमार सिंह, राजनीति विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ शगुफ्ता अंसारी, अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ कुमारी रश्मि प्रियदर्शनी एवं अन्य प्रोफेसर्स ने दीप प्रज्वलन करके किया है। डॉ प्रियंका कुमारी ने पोषण माह मनाये जाने के पीछे निहित उद्देश्यों एवं ह्लटेबल से परेह्न विषय पर प्रकाश डाला है। कहा कि हमारा आहार संतुलित होना चाहिए, जिसमें सभी कार्बोहाईड्रेट, प्रोटीन, वसा, विटामिन, मिनरल, रेशेदार सब्जियों आदि पोषक तत्वों की संतुलित मात्रा में उपस्थिति होनी चाहिए। मुख्य वक्ता संजय कुमार सिंह ने कुपोषण जनित रोगों के कारणों और निदान पर प्रकाश डाला है। उन्होंने छात्राओं को हरी सब्जियाँ, फल, दूध-दही एवं आयरन युक्त आहार लेने कहा है। फास्ट फूड की जगह घर में निर्मित पौष्टिक भोजन लेने की सलाह दी है। चाय का अत्यधिक सेवन करने से परहेज करने कहा है। उन्होंने राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि टी एवं कॉफी नाश्ते के एक घंटे के बाद ही लेना चाहिए। प्रभारी प्रधानाचार्य डॉ. सहदेब बाउरी ने एक अत्यंत लाभप्रद संगोष्ठी के आयोजन हेतु डॉ. प्रियंका एवं छात्राओं को शुभकामनाएं दीं है। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रश्मि प्रियदर्शनी ने किया है। उन्होंने कहा कि स्वस्थ एवं सशक्त तन, मन एवं आत्मा के लिए पोषणयुक्त भोजन जरूरी है। हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हमारा आहार संतुलित होने के साथ सात्विक भी हो।संगोष्ठी में छात्रा अन्या, हर्षिता, चंचल, ब्यूटी, समता, गुलसबा, फूलन, बिंदु, स्वाति, खुशी, संगम एवं काजल आदि ने प्रदर्शनी में सजाये गये विभिन्न खाद्य-पदार्थों में उपस्थित पोषक तत्वों के बारे में बारी-बारी से बतलाया है। इस कार्यक्रम में हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ प्यारे माँझी, मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष प्रीति शेखर, वनस्पति विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ रुखसाना परवीन, मनोविज्ञान विज्ञान की नव नियुक्त असिस्टेंट प्रोफेसर्स डॉ सुचि सिन्हा, डॉ प्रमिला कुमारी एवं डॉ. सीता तथा दर्शन शास्त्र विभाग के नवनियुक्त असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. आशुतोष कुमार पांडेय की उपस्थिति रही है।

भारतीय जीवन बीमा निगम की 68वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में बीमा सप्ताह का उद्घाटन

प्रात : किरण संवाददाता

गया शाखा 1 में भारतीय जीवन बीमा निगम की 68वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में ह्लबीमा सप्ताहह्न का उद्घाटन हर्षोल्लास के साथ किया गया है। इस उद्घाटन समारोह का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ है । निगम गीत के पश्चात मुख्य प्रबंधक लक्ष्मण सिंह ने उपस्थित कर्मियों को कर्तव्य और निष्ठा पूर्वक कार्य करने का शपथ दिलाया है । उन्होंने अपने स्वागत भाषण में निगम की उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला और बताया कि भारतीय जीवन बीमा निगम देश का सर्वोत्तम वित्तीय संस्थान ही नहीं है बल्कि विश्व स्तर पर अपनी अलग पहचान रखता है। इस अवसर पर सबसे वरिष्ठ कर्मचारी अनिल कुमार सिंह, विकास अधिकारी एवं वरिष्ठ अभिकर्ता जनाब अहसन मजहरी को सम्मानित किया गया है।प्रशासनिक प्रबंधक रवीन्द्र पासवान, सहायक शाखा प्रबंधक विक्रय रामानंद कुमार, विकास अधिकारी श्री अनिल कुमार सिंह, श्री राजेश कुमार सिन्हा, अभिकर्ता की ओर से राम नरेश शर्मा, वरुण सिंह रामाश्रय एवं वरुण सिंह ने सभा को संबोधित करते हुए अपना उद्गार प्रकट किया है। सहायक प्रशासनिक पदाधिकारी अश्विनी कुमार एवं रूपेश कुमार ने कार्यक्रम के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । महिला कर्मचारियों द्वारा बनाई गई मनमोहक रंगोली की प्रशंसा सभी उपस्थित लोगों ने किया है। सप्ताह भर चलने वाले ह्लबीमा सप्ताहह्न में चित्रकला प्रतियोगिता, स्वास्थ्य जांच, गुरु दिवस, अभिकर्ता दिवस के साथ पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा । इस कार्यक्रम का संचालन विकास अधिकारी डा. तनवीर उस्मानी ने किया है। सहायक प्रशासनिक अधिकारी मीनाक्षी गुप्ता के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ है।

मुस्लिम युवक ने श्री कृष्ण की छठी पर किया चावल व कढ़ी का वितरण

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। पैगाम ए इंसानियत मुस्लिम समुदाय के सदस्यों ने शहर के पठान टोली में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी छठी के मौके पर चावल, कढ़ी, पापड़, सलाद एवं प्रसाद का वितरण किया। हिंदू भाइयों को गुलाब का फूल देकर उन्हें जन्माष्टमी छठी की शुभकामनाएं दी। नेतृत्व पैगाम ए इंसानियत के अध्यक्ष मो. शाहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान ने लोगों के बीच प्रसाद वितरण करते हुए नजर आए। हिंदू मुस्लिम समुदाय के लोगों ने पूजन के बाद साथ रहकर प्रसाद का वितरण किया गया। सदभावना का संदेश दे गया। प्रेम व भाईचारे के साथ हर पर्व मिल जुलकर मनाया जाना चाहिए। मुस्लिम समुदाय के जिलाध्यक्ष सल्लू खान ने कृष्ण के बारे में चर्चा की। कहा कि कृष्ण जन्माष्टमी पर सिर्फ प्रसाद वितरण से ही नहीं बल्कि उनके मार्गो पर चलना होगा। साथ ही कहा कि कृष्ण की तरह हर धर्म में ईश्वर, महापुरुष व संत हैं। जिनके मार्गों पर चला जाए तो निश्चित ही देश व समाज का विकास संभव हो सकेगा, सभी पर्व को आपसी भाईचारा के साथ मनाने का संकल्प लिया गया। बता दे की मुस्लिम समुदाय के लोग जन्माष्टमी पर के मौके पर आपसी भाईचारा के साथ सद्भावना मार्च भी निकाला था। मुस्लिम समुदाय के लोग औरंगाबाद में हमेशा एक दूसरे का सहयोग करते हैं। हर त्यौहार में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। शहर हमेशा शांति का मिसाल कायम रखते हुए संदेश देने का काम किया है। अमन खान, छोटे खान, गौहर अली खान, दानिश खान, मो. निजामुद्दीन, मो. यासिर खान, भोलू खान, मो. सद्दाम, मो. कमाल सहित ने कहा कि यह कार्यक्रम हर वर्ष चलता रहेगा। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पैगाम ए इंसानियत के जिलाध्यक्ष सल्लू खान को सभी लोगों ने आभार व्यक्त किया।

चालू वित्तीय वर्ष में अप्रैल से अगस्त माह तक पूर्व मध्य रेल द्वारा 83 मिलियन टन से अधिक का किया गया लदान तथा 13 हजार 469 करोड़ रुपए से अधिक की हुई प्रारंभिक आय

प्रात : किरण संवाददाता

हाजीपुर । पूर्व मध्य रेल को चालू वित्त वर्ष 2024-25 के अप्रैल से अगस्त माह तक माल ढुलाई सहित अन्य सभी स्त्रोतों से प्राप्त होने वाले आय में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ कुल 13 हजार 469 करोड़ रूपए की प्रारंभिक आय प्राप्त हुई है । यह आय पिछले वर्ष के समान अवधि में प्राप्त प्रारंभिक आय 12 हजार 737 करोड़ रुपए के तुलना में 5.75 प्रतिशत अधिक है। चालू वित्तीय वित्त वर्ष 2024-25 के अप्रैल से अगस्त माह तक पूर्व मध्य रेल द्वारा 83.28 मिलियन टन का माल लदान किया गया जो पिछले वित्तीय वर्ष के इसी अवधि में किये गये माल लदान 81.28 मिलियन टन की तुलना में 2.46 प्रतिशत अधिक है। इस प्रकार अप्रैल से अगस्त माह तक किये गये कुल माल लदान से पूर्व मध्य रेल को कुल 11 हजार 151 करोड़ रूपए की आय प्राप्त हुई जो पिछले वित्तीय वर्ष के इसी अवधि के दौरान किये गये माल लदान से प्राप्त आय 10 हजार 741 करोड़ रुपए की तुलना में 3.82 प्रतिशत अधिक है । अप्रैल से अगस्त के दौरान मक्का, गेहूं एवं बॉक्साइट के लोडिंग में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गयी है । पिछले वर्ष 2023 में मक्का के 218 रेक की तुलना में अगस्त, 2024 तक मक्का के 368 रेक लोड किए गए, जो 68.81 प्रतिशत की वृद्धि है। पिछले वर्ष गेहूं के 19 रेक की तुलना में अगस्त, 2024 तक गेहूं के 38 रेक लोड किए गए, जो 100 प्रतिशत की वृद्धि है। इसी तरह पिछले वर्ष 104 रेक की तुलना में अगस्त, 2024 तक बॉक्साइट के 124 रेक लोड किए गए, जो 19.23 प्रतिशत की वृद्धि है। इसी तरह चालू वित्तीय वित्त वर्ष 2024-25 के अप्रैल से अगस्त माह तक पूर्व मध्य रेल क्षेत्राधिकार से लगभग 102 मिलियन यात्रियों ने यात्रा की जिससे लगभग 2059 करोड़ रूपए का राजस्व प्राप्त हुआ जो पिछले वित्तीय वर्ष के इसी अवधि में यात्री यातायात से प्राप्त राजस्व 1761 करोड़ रुपए की तुलना में 16.91 प्रतिशत अधिक है ।

प्राचार्य प्रोफेसर विजय कुमार सिंह को सम्मानित किया

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद के समाहरणालय के समीप अवस्थित अनुग्रह नारायण सिंह स्मारक समिति के प्रांगण में जवाहरलाल नेहरू कॉलेज डेहरी के प्राचार्य प्रोफेसर विजय कुमार सिंह के कॉलेज के प्राचार्य बनने पर समिति के सदस्यों द्वारा सम्मानित किया गया।सम्मान समारोह की अध्यक्षता वरीय कांग्रेसी नेता अरविंद शर्मा ने किया जबकि संचालन की जिम्मेवारी पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष अरविंद कुमार सिंह ने निभाई। सर्वप्रथम समिति के सदस्यों ने प्रोफेसर विजय कुमार सिंह को पुष्प गुच्छ पुष्पहार अंग वस्त्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया एवं कॉलेज में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए शुभकामनाएं दीं ।पृथ्वीराज ट्रस्ट के अध्यक्ष पूर्व जिला परिषद अध्यक्ष राघवेंद्र प्रताप नारायण सिंह ने संबोधन के क्रम में कहा कि प्राचार्य बनने से पूरे औरंगाबाद जिला का मान बढा है और उनसे जिले के लोगों के लिए बहुत ही अपेक्षा है। जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डा सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह ने कहा कि जब घर का कोई व्यक्ति उच्च पद पर पहुंचता है तो लोगों की संभावना बढ़ जाती हैं। समाजसेवी देवी दयाल सिंह, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष मृत्युंजय कुमार सिंह, श्याम बिहारी सिंह, ट्रस्ट के वरीय सदस्य रामप्रवेश सिंह, जगदीश सिंह सरपंच मधेश्वर सिंह ने प्रोफेसर विजय सिंह को बधाई एवं प्राचार्य के बाद उससे भी बड़ा उच्च पद पर आसान होने की कामना की। प्राचार्य विजय कुमार सिंह ने कहा कि रोहतास औरंगाबाद की सीमा पर जवाहरलाल नेहरू कॉलेज डेहरी के होने के कारण औरंगाबाद जिले से सटे दो तीन प्रखंड के विद्यार्थी भी वहां पढ़ने जाते हैं। यह भी कहा कि कॉलेज के विकास के लिए वे तत्पर हैं एवं नैक से मान्यता दिलाने के लिए प्रयासरत हैं ।कॉलेज के शिलान्यास के समय नेहरू जी के उद्बोधन की भी चर्चा की। सम्मान समारोह का धन्यवाद ज्ञापन स्मारक समिति के सचिव चुलबुल सिंह ने किया।

सदस्यता अभियान कि शुरूआत किया गया सौ से भी ज्यादा लोगों को बनाया गया सदस्य : डॉ मनीष पंकज

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।भारतीय जनता पार्टी के संगठन पर्व के तहत के 2024 में राष्ट्रीय स्तर पर अपना सदस्यता अभियान आरंभ भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के द्वारा देश को ओजस्वी प्रधानमंत्री से नरेंद्र भाई मोदी को सदस्य बनाकर आरंभ किया गया और पूरे भारत में सदस्यता अभियान आरंभ की गई इसी सदस्यता के क्रम में भाजपा किसान मोर्चा के बागवानी प्रकोष्ठ के सह संयोजक डॉ मनीष पंकज मिश्रा सहित भाजपा के जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता जिला मीडिया प्रभारी संतोष ठाकुर के द्वारा सदस्यता अभियान चलाया गया और लगातार सदस्य बनाने का निर्णय लिया है। आज दर्जनों लोगों को सदस्य बनाकर आरंभ किया गया है ।इस अवसर पर डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा ने कहा यह अभियान पार्टी के संगठन को मजबूत करने और अधिक से अधिक लोगों को भाजपा की विचारधारा से जोड़ने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। 2024 के सदस्यता अभियान का उद्देश्य पार्टी के आधार को व्यापक बनाना और हर वर्ग, जाति, और समुदाय के लोगों को पार्टी की मुख्यधारा में शामिल करना है। भाजपा इस अभियान के माध्यम से अपने कार्यकताओं की संख्या में वृद्धि करना चाहती है ताकि आगामी चुनावों में पार्टी का समर्थन और अधिक सशक्त हो सके ।सदस्यता अभियान के दौरान भाजपा का यह अभियान न केवल पार्टी की जड़ों को मजबूत करेगा बल्कि नई ऊर्जा और उत्साह के साथ अधिक से अधिक नागरिकों को भाजपा के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित करेगा जो पार्टी के दीर्घकालिक उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक सिद्ध होगा। आज के सदस्यता अभियान में भाजपा के जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता जिला मीडिया प्रभारी संतोष ठाकुर बबलू गुप्ता सहित भाजपा कार्यकताओं के द्वारा सदस्यता बनाया जा रहा है।

पूर्व मध्य रेल के 10 प्रमुख स्टेशनों पर पैकेज्ड पेयजल रेल नीर की बिक्री अनिवार्य

प्रात : किरण संवाददाता

हाजीपुर। पूर्व मध्य रेल द्वारा स्टेशनों एवं ट्रेनों में यात्रियों को स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त कदम उठाए गए हैं ।सीमित उत्पादन और आपूर्ति के मद्देनजर पूर्व मध्य रेल के प्रमुख 10 स्टेशनों पर पैकेज्ड पेयजल ह्यह्यरेल नीरह्यह्य की बिक्री अनिवार्य है। इनमें पटना, राजेंद्र नगर टर्मिनल, पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, गया, धनबाद, हाजीपुर, मुजफ्फरपुर, बरौनी, समस्तीपुर और दरभंगा स्टेशन शामिल है । पूर्व मध्य रेल के अन्य स्टेशनों पर भी पैकेज्ड पेयजल की उपलब्धता निरंतर बनी रहे इसके लिए बिसलेरी, किनले, किंगफिशर प्रीमियम, किंग रॉयल, बेली, डाभ एक्वा, अदास एक्वा प्लस, जीवनधारा, नेस्टी, रेडियंस केम्प्टी, मंगलम नीर, रॉयल चैलेंज सहित कुल 12 ब्रांड के बीआईएस प्रमाणित पैकेज्ड पेयजल ब्रांडों को रेलवे द्वारा सूचीबद्ध किया गया है । इसके अतिरिक्त पूर्व मध्य रेल ने यात्रियों को शुद्ध और स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए 66 स्टेशनों पर वाटर वेंडिंग मशीनों की 206 इकाइयाँ चालू की हैं। ये सुविधाएं यात्रियों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने की प्रतिबद्धता के रूप में, पानी के नल के माध्यम से प्रदान किए जाने वाले सुरक्षित पेयजल के प्रावधान के अतिरिक्त हैं।

राष्ट्रीय सदस्यता अभियान 2024 का शुभारंभ

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 2 सितम्बर को शाम 5 बजे भाजपा के राष्ट्रीय सदस्यता अभियान 2024 का शुभारंभ किए। भाजपा नेता सह पूर्व सांसद सुशील कुमार सिंह के आवासीय कार्यालय सिंह कोठी पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का शुरूआत वन्दे मातरम एवं डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दिनदयाल उपाध्याय एवं भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के तैलचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित एवं दीप प्रज्वलित कर किया गया ।कार्यक्रम का अध्यक्षता जिलाध्यक्ष मुकेश शर्मा एवं संचालन जिला महामंत्री मुकेश सिंह ने किया ।इस मौके पर पूर्व सांसद सुशील कुमार सिंह ने कहा कि आज भाजपा का सदस्यता अभियान का शुरूआत किया गया है ।इसके तहत बिहार में एक करोड़ से ज्यादा सदस्य एवं औरंगाबाद जिला और लोकसभा क्षेत्र में पाँच लाख से अधिक सदस्य बनाए जाएँगे ।पाँच तरह से लोग भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर सकते हैं ।सभी लोग 8800002024 पर मिस्ड कॉल करके सदस्य बनेंगे और आया हुआ लिंक पर क्लिक करके मांगी गई सूचना को भरकर पूर्ण करेंगे। समाज के सभी वर्गों तक हम पहुंचेंगे और सबको सदस्य बनाएंगे ।अभियान का शुरूआत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा किया गया है ।सदस्य बनकर करेंगे ।भाजपा एकमात्र ऐसी पार्टी है जो संपूर्ण लोकतांत्रिक प्रक्रिया से चलती है ।इसके तहत छह वर्षों में पुराने सदस्य भी नए सदस्यों के साथ पुनः सदस्यता ग्रहण करते हैं ।प्रदेश स्तर और जिला स्तर पर तीन सितंबर को बड़े पैमाने पर इसकी शुरूआत की जाएगी ।चार सितंबर को बिहार के सभी 9 प्रमंडल और जिला में शुरू किया जाएगा ।पाँच सितंबर को सभी जिला मुख्यालयों पर सदस्यता अभियान का शुरूआत किया जाएगा सदस्यता अभियान तीन चरण में चलाया जाएगा इसमें हर वर्ग, हर क्षेत्र, हर समुदाय के लोगों को सदस्य बनाया जाएगा ।अभियान के जरीय पार्टी शिक्षाविद, ब्यापारी, चिकित्सक, अधिवक्ता, साहित्यकार, चित्रकार , कलाकर, खिलाड़ी, पूर्व सैनिक सहित समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचेगी ।इस कार्यक्रम में जिलाउपाध्यक्ष सह जिला सदस्यता प्रभारी सतीश सिंह, सांसद प्रतिनिधि अश्विनी सिंह, पूर्व जिलाध्यक्ष अवध किशोर प्रसाद सिंह, इन्द्रदेव यादव, पुरषोत्तम सिंह, मनोज शर्मा, देव के पूर्व उप प्रमुख मनीष पाठक, विधानसभा प्रभारी उदय प्रताप सिंह, जिला मंत्री धर्मेन्द्र शर्मा, जिला परिषद सदस्य धनंजय सिंह, वार्ड सदस्य अशोक सिंह, राजेश कुमार, इलताफ कुरैशी, मंडल अध्यक्ष अरुण सिंह, भरत सिंह, जितेन्द्र गुप्ता, सुबोध सिंह, प्रवीण गुप्ता, मुखिया प्रतिनिधि बिनोद सिंह, प्रफुल्ल सिंह, जिला मीडिया प्रभारी मितेन्द्र कुमार सिंह, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष अनिता सिंह, जुलेखा खातून, सोनम भारती, रेखा पासवान, पूजा सिंह, स्वीटी गुप्ता, शोभा सिन्हा, बबिता सिंह, पूर्व वार्ड सदस्य दिपक सिंह, भाजपा नेता सुनील शर्मा, अखिलेश मेहता, पिन्टू गुप्ता, दिपक कुमार सिंह, लल्लू सिंह, कवि सिंह, जिला कोषाध्यक्ष आलोक सिंह, रघुनाथ राम, अमरेन्द्र सिंह, अन्टू सिंह, संगेश सिंह, उपस्थित रहे।

14 सितंबर हिंदी दिवस पाक्षिक पूर्व कार्यक्रम के दूसरे दिन कामता प्रसाद सिंह को याद किए गए

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद की महत्वपूर्ण साहित्यिक संस्था जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में 14 सितंबर हिंदी दिवस पाक्षिक पूर्व कार्यक्रम के निमित दूसरे दिन औरंगाबाद जिले के भवानीपुर के प्रसिद्ध साहित्यकार कामता प्रसाद सिंह काम को याद किया गया ।संस्था के अध्यक्ष डॉ सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह, उपाध्यक्ष डॉ सुरेंद्र प्रसाद मिश्र, महामंत्री धनंजय जयपुरी के आह्वान पर संस्था के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी ने कामता प्रसाद सिंह काम के साहित्य पर आधारित गद्य संवाद के क्रम में कहा कि कामता प्रसाद सिंह काम ग्रामीण संवेदना के रचनाकार थे। राजनीतिक अभिरुचि और सहृदयता उनके व्यक्तित्व की मुखर पहचान थी। उनके लेखन और शैली में अभिव्यक्ति की सहजता दिखाई पड़ती है। गद्य शिल्प कला में उन्हें महारत हासिल थी। संस्मरण साहित्य के वे पुरोधा थे। पूरे दक्षिण बिहार की उन्होंने यात्रा की ।छोटानागपुर की बहुरंगी जिंदगियों के बारे में अपने गद्य साहित्य में चर्चा किया ।अपने गांव घर के लोगों तथा ग्रामीण परिदृश्य का बड़े ही मार्मिक और सहृदयता के साथ उन्होंने मनमोहक शैली में चित्रण किया। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक मैं छोटा नागपुर मेंहूं, घर गांव और देहात, घुमक्कड़ की डायरी उनकी प्रसिद्ध कृति है। हिंदी साहित्य को उन्होने विशेष योगदान दिया। उनके साहित्य हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने में मील के पत्थर साबित हो रहे हैं ।मौके पर प्रफुल्ल तिवारी, अभिषेक कुमार, उज्जवल कुमार, संतोष कुमार सहित अन्य उपस्थित थे।

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातः किरण
पटना, मंगलवार,03 सितंबर, 2024

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com

संक्षिप्त खबरें

10 लीटर देशी शराब के साथ एक महिला गिरफ्तार

तरैया। थाना क्षेत्र के गवांढ़ी गांव में पुलिस ने छापेमारी कर 10 लीटर देशी शराब के साथ एक शराब कारोबारी महिला को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार महिला उक्त गांव के संगीता देवी है। इस संबंध में पी. टी.सी.सुनील कुमार राय ने थाने में एक प्राथमिकी दर्ज कराई है जिसमे उक्त महिला को आरोपित किया है। दर्ज प्राथमिकी में कहा गया है कि गुप्त सूचना के आधार पर महिला के घर पर छापेमारी करने पर महिला दो बाल्टी में शराब लेकर जा रही थी। पुलिस के देखते ही भागने लगी। महिला पुलिस बल के सहयोग से उक्त महिला को गिरफ्तार कर लिया गया। बाल्टी को जांच करने पर बाल्टी से शराब की दुर्गंध आ रही थी। बाल्टी को जांच करने पर एक बाल्टी से 200 एमएल के 24 पैकेट व दूसरे बाल्टी से 200 एमएल के 26 पैकेट कुल 10 लीटर देशी शराब बरामद किया गया। पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कार्रवाई कर रही है।

प्रखंड मुख्यालय से बाइक चोरी

तरैया। प्रखंड के अंचल कार्यालय के अभिलेखागार भवन के पास से अज्ञात चोरों के द्वारा एक बाइक चोरी कर लेने का मामला प्रकाश में आया है इस संबंध मशरक थाना क्षेत्र के मशरख गोपालबाड़ी गांव निवासी सौराज आलम ने तरैया थाने में शिकायत आवेदन दिया है। उक्त आवेदन में कहा गया है कि मैं एक निजी काम से तरैया प्रखंड कार्यालय आए थे। अभिलेखागार भवन के पास गाड़ी लगाकर कार्य कर रहे थे। कुछ ही देर बाद जब हम अपने बाइक के पास आए तो मेरा बाइक वहा नही था। काफी खोजबीन करने के बाद भी नही मिला तो थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ आवेदन दिया। पुलिस प्राप्त आवेदन के आधार पर आगे की कार्रवाई कर रही है।

पटना जिला स्तरीय विद्यालय खेल प्रतियोगिता 2024-25 का रंगारंग शुभारंभ

पटना। पटना जिला स्तरीय विद्यालय खेल प्रतियोगिता 2024-25 का रंगारंग शुभारंभ सोमवार को स्थानीय पाटलिपुत्र खेल परिसर, कंकड़बाग में धनेश्वरी देवनंदन कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय की बैण्ड की धुन पर लगभग 7,000 बालक/बालिका प्रतिभागियों के आकर्षक मार्च पास्ट के साथ हुआ। खेल विभाग एवं बिहार राज्य खेल प्राधिकरण, पटना के तत्वाधान में वार्षिक खेल कार्यक्रम 2024-25 के अन्तर्गत जिला प्रशासन, पटना द्वारा पाँच दिवसीय पटना जिला विद्यालय खेल प्रतियोगिता का विधिवत उद्घाटन डॉ० चन्द्रशेखर सिंह (भा.प्र. से.), जिला पदाधिकारी, पटना ने प्रतियोगिता का ध्वजारोहण एवं गुब्बारा उड़ाकर किया। उन्होंने अपने संबोधन में खिलाड़ियों को खेल की महत्ता बताते हुए कहा कि इससे न सिर्फ शारीरिक बल्कि मानसिक विकास भी होता है। जीवन में खेल भावना का बहुत महत्व है इसलिए हार-जीत की चिंता को छोड़कर खेलों में खेल भावना के साथ भाग लेने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार लगातार खेलों के बढ़ावा देने हेतु खेल संसाधनों के विकास के साथ-साथ खिलाड़ियों के प्रोत्साहन व सुविधा हेतु लगातार कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि इसके लिए सरकार ने स्वतंत्र रूप से खेल विभाग का गठन किया है तथा हाल ही में राजगीर में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का खेल अकादमी व खेल विश्वविद्यालय का लोकार्पण किया गया है। उन्होंने अपने संबोधन में प्रतिभागियों को कहा कि आप सभी देश के भविष्य हैं और आप ही में से कल कोई एशियाड एवं ओलम्पिक में देश का प्रतिनिधित्व कर सकता है, इसलिए पूरी मेहनत करें।

जिला प्रशासन एवं मीडिया प्रतिनिधियों को सकारात्मकता के साथ एक साथ मिलकर करना होगा कार्य

बेतिया(घनश्याम)। जिला सूचना एवं जनसम्पर्क पदाधिकारी, श्रीमती रोचना माद्री आज सूचना भवन के सभागार में पश्चिम चम्पारण जिले के प्रिन्ट, इलेक्ट्रोनिक एवं डिजिटल मीडिया के जिला संवाददाता, ब्यूरो आदि से शिष्टाचार मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने कहा कि सरकार की विकासात्मक एवं कल्याणकारी योजनाओं, कार्यक्रमों से आमजनों को लाभान्वित करने में सभी प्रकार के मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। सरकार की योजनाओं को अच्छे तरीके से समाज के अंतिम व्यक्ति को लाभान्वित करने हेतु जिला प्रशासन एवं मीडिया प्रतिनिधियों को एक साथ मिलकर कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में अगर कहीं कुछ कमी रह जाती है तो उसे भी मीडिया जिला प्रशासन को अवगत कराये, अविलंब उसे ठीक कराने की दिशा में कारगर कार्रवाई की जायेगी इस दौरान दर्जनों मीडिया प्रतिनिधियों द्वारा कार्यक्षेत्र में उत्पन्न हो रही विभिन्न समस्याओं से जिला सूचना एवं जनसम्पर्क पदाधिकारी को अवगत कराया। इस पर जिला जनसम्पर्क पदाधिकारी द्वारा कहा गया कि जिला प्रशासन का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराया जायेगा।

इसुआपुर में झंडा मेला आज, प्रशासनिक व्यवस्था चाक चौबंद

प्रात: किरण संवाददाता

इसुआपुर । प्रखंड मुख्यालय बाजार इसुआपुर पर 3 सितंबर को मनाए जाने वाले महावीरी अखाड़ा सह झंडा मेला की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं ।मेले को शांति व सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न कराने को लेकर प्रशासनिक व्यवस्था भी चाक चौबंद है। ड्रोन कैमरे से जहां मिले की निगरानी होगी। वहीं अचितपुर, इसुआपुर ,बिशुनपुरा, आता नगर तथा पुरसौली के सांस्कृतिक मंचों पर सीसीटीवी कैमरा लगाने के निर्देश दिए गए हैं। 14 लाइसेंसी अखाड़े जुलूस के लिए रूट चार्ट भी बनाए गए हैं। वहीं प्रत्येक अखाड़े के साथ पांच पुलिस बल के साथ एक मजिस्ट्रेट की प्रतिनियुक्ति की गई है। स्थानीय प्रशासनिक व पुलिस पदाधिकारीयों के अलावे जिला से 20 मजिस्ट्रेट 50 महिला पुलिस बल तथा 200 पुरुष बल मंगाए गए हैं। प्रत्येक सांस्कृतिक मंच के पास पुलिस प्वांइट बनाए गए हैं। जहां 20 पुलिस बल के साथ दो मजिस्ट्रेट तैनात रहेंगे। मेले में प्रशासनिक शिविर, सूचना केंद्र, दंगा निरोधक वाहन, फायर ब्रिगेड की गड़ियां, एम्बुलेंस, प्राथमिक स्वास्थ्य शिविर, चलंत शौचालयों ,डस्टबिन, शीतल पेयजल की भी व्यवस्था की गई है। प्रत्येक अखाड़े द्वारा 20-20 वॉलिंटियर की तैनाती की गई है। जो आई कार्ड के साथ प्रशासन द्वारा चिन्हित किए गए होंगे।

मेले में वाहनों का प्रवेश वर्जित, बनाए गए रूट चार्ट: मेले में रेलम पेल भीड़ के मद्देनजर वाहनों का प्रवेश वर्जित रहेगा। छपरा की तरफ से आने वाले भारी वाहन कृष्णा मोड़ खैरा से मढ़ौरा की तरफ रूट बदल लेंगे । वहीं मलमलिया तथा सतरघाट से आने वाले भारी वाहन मसरख से तरैया की तरफ रूट बदल लेंगे। जबकि छपरा की ओर से आने वाले छोटे वाहन भकुरा भिट्ठी बाजार से तथा मसरख की ओर से आने वाले छोटे वाहन चहपुरा देवी स्थान से बेला, अमरदह गांवों की तरफ रूट बदल लेंगे। मेले में साइकिल, मोटरसाइकिल के प्रवेश पर भी रोक रहेगा।

इसुआपुर में बिजली रहेगी गुल: झंडा मेला के दौरान बिजली सेवा बाधित रहेगी। विभागीय जेई मनोज कुमार वर्मा ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि अखाड़े तथा मेले में प्रयुक्त कच्चे बांस के झंडे, मेटल के पाइप, सामानों व अन्य हथियारों के प्रदर्शन को लेकर सुरक्षा के मध्य मद्देनजर टाउन फीडर की बिजली दिन के 2 बजे से अगले दिन 4 सितंबर के 7 बजे सुबह तक बाधित रहेगी। जिसमें आता नगर, इसुआपुर, बिशुनपुरा, तथा डटरा पुरसौली के ग्रामीणों को असुविधा होगी। वहीं बाकी चार फीडरों शामकौड़िया, मुड़वां, पिपरहियां तथा निपनिया फीडर की बिजली 3 सितंबर के दिन के 2 बजे से रात के 10 बजे तक बाधित रहेगी। जिससे इन फीडरों से संबंधित ग्रामीणों को असुविधा होगी। उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा है कि बिजली से सबंधित किसी भी दुर्घटना की आशंका होने पर उनके विभागीय मोबाइल नंबर 7763818721 पर शीघ्र सूचित करेंगे। साथ ही उपभोक्ताओं से यह भी आग्रह किया है कि वे समय रहते बिजली मोटर से संबंधित पानी की टंकी भरने जैसे कार्य कर लेंगे।

जहां कृष्णा है वहा सत्य और विजय है: श्रीधर बाबा

प्रात: किरण संवाददाता

भेल्दी। भगवान कृष्ण ने मनुष्यों को धर्म की रक्षार्थ, अपने एवं जगत कल्याण के लिए सत्य धर्म की राह पर चलते हुए बिना फल की इच्छा किए कर्म करने की शिक्षा दी है। जहां सत्य वहां कृष्ण और जहां कृष्ण वहां विजय है। उक्त बातें संत श्रीधर दास जी महाराज ने सराय बक्स स्थित महर्षि श्रीधर बाबा नयन ज्योति अस्पताल परिसर में चल रही कृष्ण जन्माष्टमी से चल रही नौ दिवसीय अखण्ड अष्टयाम में कही। उन्होंने ने कहाकि कृष्ण के शरण में जाने से मानव के कष्ट दूर होते है ।सोमवार को सुबह से ही राधे कृष्णा, शिव परिवार हनुमान मंदिर में पूजन के पुरुषों की भीड़ लगी रही। पूजन के बाद लोग हरे राम हरे कृष्ण महामंत्र का जाप और मंडप का परिक्रमा कर रहे हैं। श्रद्धालुओं के लिए 24 घंटा भंडारा और प्रसाद वितरण चल रही है ।माहौल भक्तिमय बनी हुई है ।श्रीधर बाबा के शिष्य मुरारी स्वामी ने बताया कि मंदिर की स्थापना काल से ही श्री कृष्ण जन्माष्टमी से अष्टयाम होता है। इस वर्ष 27 अगस्त से 5 सितंबर तक होगी। पूर्णाहुति पर व्यास श्रीरोमणि सुख नन्दन यादव का सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन की गई है।

ट्रैफिक डीएसपी बसंती टुड्डू के नेतृत्व में चला अभियान पुलिस एक्ट 34 के तहत शुरू हुई कर्रवाई

प्रात: किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। छपरा शहर में यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने को लेकर सारण पुलिस प्रतिबद्ध है यातायात बाधित होने की गंभीर समस्या का मुख्य कारण स्थानीय दुकानदारों द्वारा दुकान के बाहर सड़क, नाला, फुटपाथ पर सामग्री रख विक्री करना, अस्थायी ठेला लगाना, फुटकर विक्रेता द्वारा प्रत्येक दिन नियमित रूप से सड़क का अतिक्रमण कर यातायात का गंभीर समस्या उत्पन्न किया जाता है। इस सम्बन्ध में अनुमंडल पदाधिकारी सदर-1 से विचार विमर्श कर पुलिस अधीक्षक सारण के निदेशानुसार

पुलिस उपाधीक्षक, यातायात द्वारा पुलिस एक्ट-34 का क्रियान्वयन हेतु उप-नगर आयुक्त, छपरा नगर, अंचलाधिकारी, सदर छपरा एवं पुलिस निरीक्षक-सह-थानाध्यक्ष नगर, भगवान बाजार एवं छपरा मुफ्फसिल से समन्वय स्थापित कर अपेक्षित कार्रवाई शुरू की गई है । इस संबंध में आम जनता एवं दुकानदारों से अपील भी किया गया है कि अपने दुकान के बाहर सडक, नाला, फुटपाथ पर सामग्री रख विक्री करना, अस्थायी ठेला लगाना वर्जित है। जिसके तहत ये करवाई शुरू कर दी गई है तत्पश्चात उल्लंघन करने वाले के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जायेंगी जिसमें दोषियों को आर्थिक दण्ड एवं कारावास तक की सजा निहित है। वही जिनकी दुकानें हटाई गई नाराज दुजनदारो ने कैमरे के सामने अपना दुःख व्यक्त किया सड़क किनारे दुकानदरों ने कहा कि आखिर हम जाते तो कहां जाय इनका कहना है कि लगभग सभी ने प्रधानमंत्री स्वरोजगार योजना के तहत बैंकों से लोन ले रखा है अब दुकानें नही रही तो लोन कैसे जमा होगा।

मढ़ौरा के माधोपुर मुख्य सड़क पर डंपर की चपेट ने आने से एक युवक की हुई मौत

नगरा ।मढ़ौरा थाना क्षेत्र के माधोपुर गांव के समीप डंपर की चपेट में आने से बाइक सवार युवक की मौत हो गई ,उक्त युवक नगरा थाना क्षेत्र के कादीपुर गांव के वार्ड नंबर चार निवासी स्व . महमूद अंसारी के पुत्र मो. मंसूर आलम उर्फ टिंकू (30 वर्ष) की सड़क दुर्घटना में दर्दनाक मौत हो गई.यह हादसा सोमवार की देर संध्या माधोपुर मुख्य सड़क पर हुआ,जब मंसूर आलम अपने बाइक से पैगा बाजार स्थित अपने दुकान जा रहे थे.उसी दौरान तेज गति से आ रहे डंपर की चपेट में आकर टक्कर मार दी,जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई.इस हादसे में उनके साथ एक अन्य युवक भी था,जो घायल हो गया.मंसूर आलम की मौत की खबर मिलते ही पूरे गांव में मातम पसर गया.परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है. मृतक मंसूर आलम की शादी करीब पांच वर्ष पहले हुई थी और उनकी एक साल की बेटी भी है.वह अपने परिवार के एकमात्र कमाऊ सदस्य थे और पैगा चौक पर स्थित अपनी मुर्गा दुकान से अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे.मंसूर आलम के परिवार में एक भाई और एक बहन भी हैं,सबसे बड़े थे ,और उनके निधन से पूरा परिवार सदमे में है.घटना की सूचना पर कादीपुर के पंचायत के सरपंच तमन्ना आलम सहित अन्य लोगो ने घटना स्थल पर पहुंचे. वहीं स्थानीय लोगों ने डंपर चालक को पकर लिया।

छह नाबालिग लड़कियों को पुलिस ने रेस्क्यू किया, चार संचालक गिरफ्तार

प्रात: किरण संवाददाता

नगरा ।थाना क्षेत्र में तीन अलग-अलग स्थानों पर आर्केस्ट्रा कार्यक्रमों के नाम पर नाबालिग लड़कियों से जबरन नृत्य करवाने का गंभीर मामला सामने आया है.नगरा पुलिस ने रविवार की रात छापेमारी करते हुए छह नाबालिग लड़कियों को रेस्क्यू किया और चार आर्केस्ट्रा संचालकों को गिरफ्तार किया।

यह रेस्क्यू ऑपरेशन राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग दिल्ली के निर्देश पर किया गया. इस छापेमारी में मिशन मुक्ति फाउंडेशन दिल्ली के डायरेक्टर और रेस्क्यू फाउंडेशन दिल्ली के जांच अधिकारी भी शामिल थे. वहीं इस संबंध में नगरा थानाध्यक्ष विजय कुमार रंजन ने बताया कि सबसे पहले अरवा कोठी, रौजा मसिहन टोला,नगरा में छापेमारी की गई.वहां से बरामद की गई सभी लड़कियों से पूछताछ की गई,जिसमें उन्होंने बताया कि उन्हें जबरन नृत्य के लिए मजबूर किया जा रहा था और प्रताड़ित भी किया जा रहा था. सभी बंगाल सहित अन्य जगहों के रहने वाली है ,वहीं गिरफ्तार आर्केस्ट्रा संचालकों पर संबंधित धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज कर जेल भेज दिया गया है.छापेमारी टीम में नगरा थाना के अन्य पुलिस कर्मी भी शामिल थे।

नौटंकी' ने छपरा के रंगकर्म के इतिहास में जोड़े सुनहरे वरक

प्रात: किरण संवाददाता

छपरा सदर। छपरा इप्टा की नवीनतम नाट्य प्रस्तुति 'नौटंकी ऊर्फ कमलनाथ मजदूर, के मंचन के साथ छपरा के रंगमंच में एक सुनहरा वरक जुड़ गया। रविवार की शाम भिखारी ठाकुर प्रेक्षागृह में इप्टा छपरा द्वारा कविवर कन्हैया जन्मशती वर्ष पर इप्टा के 81 वें साल में आयोजित लोक रंग उत्सव में इप्टा कलाकारों ने एक से बढ़ कर एक उत्कृष्ट कला का प्रदर्शन किया। लोक रंग उत्सव का आगाज करते हुए विद्वान जिला एवं सत्र न्यायाधीश पुनीत कुमार गर्ग, जिला कला संस्कृति पदाधिकारी डॉ० विभा कुमारी, एडीजे अतुल वीर सिंह, एडीजे प्रभात कुमार श्रीवास्तव, सचिव डालसा सह एसीजेएम धर्मेन्द्र पाण्डेय और इप्टा अध्यक्ष प्रो० (डॉ०) वीरेन्द्र नारायण यादव ने संयुक्त रुप से दीप प्रज्वलित कर किया। उद्घाटन सत्र में बिपिन बिहारी श्रीवास्तव, प्रो० लाल बाबू यादव, डॉ० शालिग्राम

विश्वकर्मा, सुरेन्द्र नाथ त्रिपाठी, मुंबई से आए फिल्म निर्देशक द्वय अनिकेत मिश्रा और धनंजय चौबे मौजूद रहे।

लोक रंग उत्सव में बहुचर्चित नाटक "नौटंकी ऊर्फ कमलनाथ मजदूर" के मंचन ने छपरा में रंगमंच को एक नया उत्कर्ष प्रदान किया और एक अमीट छाप छोड़ी। नौटंकी और बिदेसिया शैली में प्रस्तुत नाटक में बिहारी मजदूरों के पलायन, पलायन की परिस्थितियों, महाजनी सभ्यता के बदले स्वरुपों-शोषण और परदेश उनके शोषण दमन फजीहतों की कारुणिक अभिव्यंजना लोक राग रागिनियों और नौटंकी के हास्य व्यंग्य में की गयी।35 साल पूर्व बिपिन बिहारी श्रीवास्तव लिखित और निर्देशित इस नाटक का संगीत कंचन बाला- विनय कुमार, नृत्य कुमारी अनिशा और रंग परिकल्पना डॉ0 अमित रंजन ने की। 81 साल के लेखक बिपिन बिहारी श्रीवास्तव ने लाबार की भूमिका में अपने अभिनय गायन और नृत्य से न सिर्फ अभिनय का चरमोत्कर्ष पेश किया बल्कि धाकड़ अभिनेताओं को भी अभिनय का पाठ पढ़ा गये। लाबार 2 की भूमिका में रंजीत भोजपुरिया ने कलात्मक उत्कर्ष प्रदान किया। नायक कमलनाथ की भूमिका में रंजीत गिरि ने अपने गायन नृत्य और अभिनय से शमां बांधा तो बतौर अभिनेत्री डेब्यू कर रही लक्ष्मी कुमारी अपने अभिनय गायन और नृत्य से न सिर्फ रोमांचित किया बल्कि निर्देशक की उपलब्धि साबित हुई। अमित रंजन ने नायक के पिता और खलनायक की भूमिका में श्रेष्ठ अभिनय प्रस्तुत किया। सूत्रधार की भूमिका में शैलेन्द्र कुमार शाही, किशुन की भूमिका में जीतेन्द्र कुमार राम, जज की भूमिका में प्रो० लाल बाबू यादव, फैक्ट्री मालिक की भूमिका में सुरेन्द्रनाथ त्रिपाठी ने अपनी भूमिकाओं के साथ न्याय किया। प्रियंका कुमारी, कुमारी अनिशा, मान, जयप्रकाश मांझी, कुमार गौरव, रौनक कुमार जमे। नाटक की उपलब्धि इसका रंग संगीत रही, जिसे बड़ी खुबसूरती और दक्षता के साथ कंचन बाला, प्रियंका कुमारी, विनय कुमार, प्रिया कुमारी, शरद आनन्द, राम जतन राम (नाल), जंग बहादूर राम (नगाड़ा), रामजी पासवान (झाल) शैलेश कुमार शाही (विविध वाद्ययंत्र) ने नाटक को उत्कर्ष प्रदान किया।

लोक रंग उत्सव के सांस्कृतिक सत्र में कंचन बाला, रंजीत गिरि, लक्ष्मी कुमारी, जीतेन्द्र कुमार राम, रंजीत भोजपुरिया, शरद आनन्द, प्रियंका कुमारी, प्रिया कुमारी आदि ने करीब आधा दर्जन जन गीतों की प्रस्तुति की। कुमारी अनिशा ने शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत किया। प्रियंका कुमारी, लक्ष्मी कुमारी, जीतेन्द्र कुमार राम, रंजीत गिरि और कंचन बाला ने अपने गीतों गजलों से दर्शकों को झुमाया।

बच्चों की पढ़ाई जारी रखने में मदद करेंगे टोला सेवक

प्रात: किरण संवाददाता

गिद्धौर। शिक्षा सेवक के रूप में कार्य करने वाले टोला सेवक व तालिमी मरकज स्वयंसेवक अब बच्चों की पढ़ाई को जारी रखने में मदद करेंगे। ये दोनों ही अब मैट्रिक और इंटर की अनुत्तीर्ण छात्रों को चिन्हित करने का कार्य भी करेंगे। अनुत्तीर्ण छात्रों को यह बिहार मुक्त विद्यालयी शिक्षण एवं परीक्षा बोर्ड में पंजीकृत कराने का कार्य करेंगे ।शिक्षा विभाग की ओर से टोला सेवकों और तालिमी मरकज स्वयंसेवकों को एक नई जिम्मेदारी दी गई है। कोई भी ऐसा विद्यार्थी जो मैट्रिक और इंटर की परीक्षा में पास हुआ है वह आगे की पढ़ाई ना छोड़े इसके लिए शिक्षा विभाग की ओर से यह पहल की गई है। टोला सेवक अब तक बच्चों को उनके घर से स्कूल तक पहुंचाने का काम करते थे।

अब तक ये गांव के विभिन्न टोलों में जाकर यह देखते थे कि हर घर के स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे स्कूल जा रहे या नहीं। जो बच्चे स्कूल में नामांकन लेने के बावजूद भी रोजाना स्कूल नहीं जाते उन्हें नियमित स्कूल पहुंचाने और स्कूलों में उनकी उपस्थिति बढ़ाने की जिम्मेदारी टोला सेवकों की होती थी। तो वहीं अति पिछड़े मुस्लिम समुदाय के बच्चों की शिक्षा सुनिश्चित करने का काम तालिमी मरकज द्वारा किया जाता है। मालूम हो कि राज्य में करीब 27 हजार टोला सेवक है, जिनकी मदद से रोजाना बच्चों को स्कूल पहुंचा जाता है। एक गांव में एक टोला सेवक पर पांच-पांच छात्रों की जिम्मेदारी दी गई है। एक टोला सेवक पांच छात्रों को चिन्हित करने का कार्य करेंगे। उन्हें बी-बॉस के माध्यम से पंजीकृत कराया जाएगा।

बनियापुर के निवासी पटोरी थाना मे पदास्थापित दरोगा की संदेहस्पद स्थिति मे हुई मौत

बनियापुर। समस्तीपुर के पटोरी थाना में पदस्थापित दारोगा शैलेश कुमार सिंह (55) की मौत संदेहास्पद अवस्था में रविवार की देर रात हो गई। पटोरी थाना के समीप स्थित डेरे से अचेतावस्था में रविवार की देर शाम निकला गया था। उनके मुंह से झाग भी आ रहा था। उन्हें पटोरी के अनुमंडलीय अस्पताल में लाया गया जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद पटना रेफर कर दिया। परिवार वालों को सूचना दी गई। पटना में रह रहे उनके संबंधियों ने उन्हें एक निजी अस्पताल में दाखिला के लिए ले गए किंतु रास्ते में ही उनकी मौत हो गई। चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। सोमवार की दोपहर पटना में उनका पोस्टमार्टम कराया गया। दारोगा शैलेश कुमार सिंह छपरा स्थित बनियापुर थाना के पिपरपट्टी निवासी रामलैश सिंह के पुत्र थे। उनका अंतिम संस्कार छपरा जिले के सिमरिया गंगा घाट पर होगा ।मृतक शैलेश अपने पीछे पत्नी अनु देवी, तीन पुत्री तथा दो पुत्र से भरा पूरा परिवार छोड़ गए।

जिला गंगा समिति भोजपुर के द्वारा महुली गंगा घाट पर किया गया भव्य गंगा आरती का आयोजन

प्रात: किरण संवाददाता

आरा :जिला गंगा समिति भोजपुर के द्वारा महुली गंगा घाट पर भव्य गंगा आरती का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में उप विकास आयुक्त भोजपुर उपस्थित रहे। उप विकास आयुक्त भोजपुर ने कहा कि मां गंगा हम सभी के लिए जीवन दायिनी है, और आस्था और विश्वास का यह ही देन है की हम कि बनारस की झलक महुली गंगा घाट पर देखने को हम सभी को मिला। में स्थानीय युवाओं और जिला गंगा समिति भोजपुर के सदस्यों का आभार व्यक्त करता हु की उन्होंने इतने कम समय में इतनी सुंदर कार्यक्रम की व्यवस्था किया । गंगा आरती आस्था के साथ-साथ जिकोपर्जन के भी साधन है हम सभी को नियमित और सायमित तरीके से प्रतिदिन आरती करते हैं तो हजारों लोगों देखने के लिए आयेगे जो रोजगार का साधन बनेगा। पूजा और आस्था के साथ-साथ लोगों को स्वच्छता एवं एक विकसित विकल्प के रूप में इस घाट को एक अलग पहचान मिलेगी। इस मौके पर जिला ग्रामीण अभिकरण के डायरेक्टर मनोरंजन कुमार पांडे प्रभारी पदाधिकारी विकास शाखा आसमा खातून सह परियोजना निदेशक शालिनी प्रज्ञा, जिला एवं जल स्वच्छता के समन्वयक रंजन बैठा उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम का संचालन जिला परियोजना अधिकारी अमित कुमार सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन आईटीसी के जिला समन्वय भीम कुमार ने किया। मैं बता दूं कि आज जो गंगा आरती की गई है वह गंगा ग्राम पंचायत के कुदारिया गांव के युवाओं के द्वारा किया गया है।

परिवार नियोजन पर स्वास्थ्य कर्मियों का हुआ एकदिवसीय प्रशिक्षण

बेतिया। जिले के सभी 18 प्रखंडों में परिवार नियोजन से सम्बन्धित कार्यक्रम के सफल संचालन को लेकर बेतिया के बरवत सेन के एक निजी होटल में अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ रमेश चंद्रा की अध्यक्षता में स्वास्थ्य कर्मियों का एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में सभी संस्थान के उपाधीक्षक, प्रभारी चिकित्सा पदाधिकरी एवं प्रखण्ड स्वास्थ्य प्रबंधक, प्रखण्ड समुदायिक उत्प्रेरक व अन्य स्वास्थ्य कर्मी मौजूद थे। इस अवसर पर डीसीएम राजेश कुमार, अनुश्रवण पदाधिकारी विनय कुमार सिंह एवं पीएसआई संस्था के जिला प्रतिनिधि प्रताप कोश्यारी, राकेश कुमार द्वारा पीपीटी के माध्यम से प्रशिक्षण कराया गया जिसमें परिवार नियोजन, गर्भनिरोधक समाग्रियों से संबंधित चर्चा भी की गयी।

जिला स्तरीय प्रशिक्षण में एफपीएलएमआईएस पोर्टल आधारित प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस सम्बन्ध में डीसीएम राजेश कुमार, डीएमएनई विनय कुमार सिंह ने बताया कि परिवार नियोजन संबंधित गर्भनिरोधक सामग्री को पूर्ण ऑनलाइन मांग और पूर्ति होना है, जिसमें जिला स्तर से ब्लॉक स्तर तक पीएचसी, मेडिकल कॉलेज उप स्वास्थ्य केंद्र तथा आशा सभी को यूजर आईडी एवं पासवर्ड दिया गया। मौके पर एसीएमओ डॉ रमेश चंद्रा ने कि सभी 554 उप स्वास्थ्य केंद्र, 18 पीएससी की ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से इंडेंट करना है तभी जिलास्तर से भौतिक रूप से सामग्री प्राप्त होगी। डीसीएम राजेश कुमार ने बताया कि जिले की सभी 3400 आशा अपने ब्लॉक स्तर पर परिवार नियोजन सामग्री का मासिक आधार पर इंडेंट करेगी तथा ब्लॉक से भौतिक रूप से प्राप्त करेगी। मौके पर अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉ रमेश चंद्रा, डॉ आर एस मुन्ना, डीसीएम राजेश कुमार, ब्लॉक स्तर से सभी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी बीसीएम परिवार नियोजन, भंडारपाल, पीएसआई इंडिया के राकेश कुमार सिंह एवं प्रताप सिंह कोशियारी, पिरामल स्वास्थ्य से राजेश झा उपस्थित थे।

पूर्व सांसद ने भोजपुर जिला भ्रमण कार्यक्रम

प्रात: किरण संवाददाता

आराः पूर्व केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री सह पूर्व आरा लोकसभा सांसद आर के सिंह जिला के विभिन्न कार्यक्रम मे शामिल होने पर पहुंचे।

पूर्व मंत्री आरा विधानसभा के सनदिया मे खेल समारोह का उद्घाटन किए ।उसके बाद आरा परिसदन मे कार्यकताओं और समर्थकों के साथ मुलाकात किया ।उस दौरान कार्यकताओं ने विभिन्न समस्याओं से पूर्व सांसद को अवगत कराया,जिसको ध्यानपूर्वक सुन कर समाधान करने की बात कही। उस दौरान उन्होंने कहा कि बिहार मे जनता सुशासन और सबका साथ,सबका विकास वाली सरकार ही चाहती है,जिसे नीतीश कुमार के नेतृत्व मे ही 2025 का एनडीए सरकार बनेगी ।राजद के युवराज द्वारा यात्रा करने का मतलब यहाँ की जनता समझती है ।उनके पास कैई योग्यता नही है ।केवल अपने पिताजी के नाम पर राजनीति करना है। वहीं पूर्व मंत्री दलीपपुर में बॉक्स कलभ्रट का और शाहपुर के सेमरिया ओझा पट्टी मे छठ घाट का उदघाटन किया। पूर्व मंत्री आर के सिंह का विभिन्न जगहो पर भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम मे भाजपा सहित एनडीए गठबंधन के सैकडों कार्यकर्ता और समर्थक तथा आम जनता शामिल हुए।

सोलह कार्टून विस्की शराब की बरामदगी हुई

मकेर(सारण), शराब की बिक्री करने के उद्देश्य से एक वाहन से मकेर पुलिस ने भारी मात्रा में शराब बरामद करने में सफलता प्राप्त किया है । थाना अध्यक्ष रवि रंजन कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना मिलने पर एक वाहन को रात्रि गस्ती दल द्वारा एक गाड़ी को रोक कर पूछताछ शुरू किया गया एवम तलासी ली गई जिसमें 16 कार्टून विस्की की बोतलें बरामद की गई ,एक कार्टून में 48 बोतले थी जो 250 लीटर शराब थी । गाड़ी पर सवार सभी लोगो से पूछताछ कर उनके विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर जेल भेज दिया गया है । गाड़ी महराष्ट्र नम्बर की थी लेकिन पकड़े गए लोग सिवान जिला के पचरुखी निवासी बताये जाते हैं । एक तरफ सरकार जहाँ सभी कार्यो को छोड़ शाराब बन्दी को सफल बनाने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रही है दूसरी तरफ शराब कारोबारी इस धंधा को बदस्तूर जारी रखते हुए सरकार की इस योजना पर पलीता लगा रहे हैं ।

रेल परिचालन को बाधित करने वाले असामाजिक तत्वों के विरुद्ध रेलवे सुरक्षा बल की सख्त कार्यवाही जारी

प्रात: किरण संवाददाता

दानापुर मंडल में रेलवे सुरक्षा बल द्वारा रेल परिचालन को बाधित करने का प्रयास करने वाले असामाजिक तत्वों के विरुद्ध वर्ष 2024 में वर्तमान तक रेल अधिनियम की धारा 174/सी में कुल 47 व्यक्तियों की गिरफ्तारी की गई है। इसके अलावा रेल अधिनियम की धारा 153 के तहत कुल 19 व्यक्तियों की गिरफ्तारी की गई है एवं पकड़े गये सभी व्यक्तियों से भारी मात्रा में न्यायालय द्वारा जुमार्ना वसूल किया गया एवं न्यायिक हिरासत में भी भेजा गया है। इसी क्रम में दिनांक 31.08.2024 को मोकामा एवं बाढ स्टेशनों के बीच शहरी हॉल्ट के पास स्थित रेलवे प्वाईट 51एटी को किसी अज्ञात अपराधी द्वारा क्षतिग्रस्त कर दिया गया था. इस सम्बन्ध में रेलवे सुरक्षा बाल पोस्ट/मोकामा पर मुकदमा अपराध सं० 1808/2024 दिनांक 31.08.2024 अंतर्गत धारा 174/सी, 147 रेल अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर अज्ञात अपराधियों की धड़ पकड़ हेतु रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट/ मोकामा द्वारा खोज-बीन एवं सूचना एकत्र की जा रही थी। इसी क्रम में उप निरीक्षक/प्रदीप कुमार झा एवं उसके टीम द्वारा गुप्त रूप से दविस देकर उक्त घटना में संलिप्त अपराधी अंगद साव पि.स्व. महेन्द्रसाव वार्ड सं० 12. सिमरिया घाट बिंदटोली, था० चकिया, जिला- बेगूसराय को गिरफ़्तार किया गया, जहां पर आवश्यक कानूनी प्रकिया कर उक्त अभियुक्त को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। रेल अधिनियम की धारा 174/सी के तहत अगर कोई व्यक्ति रेल यातायात में बाधा डालता है तो उसके खिलाफ गैर जमानती धारा के तहत मामला दर्ज किया जा सकता है। इस मामले में दोषी को 02 वर्ष तक की जेल हो सकती है या 2000/- रु० जुमार्ना या दोनों ही सकती है। रेल अधिनियम की धारा 153 के मुताबिक, अगर कोई व्यक्ति जानबुझकर या चुक से ट्रेन में सफर करने वाले लोगों की सुरक्षा को खतरे में डाले, तो 05 वर्ष तक की जेल हो सकती है। यह प्रावधान रेल अधिनियम 1989 में है। इस धारा के तहत, अगर कोई व्यक्ति ट्रेन में सफर करने वाले किसी व्यक्ति की सुरक्षा को खतरे में डाले, तो वह रेलवे की ओर से दंडनीय होगा इसके लिए ये काम करना अपराध माना जाता है। गैरकानूनी काम करना जानबूझकर चूक करना उपेक्षा करना बाधा डालना रोलिंग स्टॉक को बाधित करने की कोशिश करना। दानापुर मंडल में इस प्रकार की घटनाओं पर अंकुश लगाने हेतु वरीय मंडल सुरक्षा आयुक्त, पूर्व मध्य रेल दानापुर द्वारा सम्बधित रेल सुरक्षा बल पोस्ट को आवश्यक सतर्कता बरतने हेतु निर्देशित किया गया है। वैसे चिन्हित स्थानों पर विशेष निगरानी रखी जा रही है ताकि रेल परिचालन पर किसी प्रकार का प्रतिकुल प्रभाव न पड़े।

बेतिया छावनी स्थित लेवल क्रासिंग सं.-02 पर निर्माणाधीन आरओबी सितम्बर के अंत तक पूरा होने की संभावना

हाजीपुर। बेतिया छावनी स्थित लेवल क्रॉसिंग संख्या 02 के स्थान पर आरओबी का निर्माण किया जा रहा है । इस आरओबी की महत्ता इस बात से समझी जा सकती है कि एक ओर जहां यह एनएच-727 से जुड़ता है वहीं दूसरी ओर यह मैनाटांड तथा नरकटियागंज के लिए सुगम कनेक्टिविटी प्रदान करेगा । एनएच-727 से नरकटियागंज और मैनाटांड की ओर जाने वाले भारी वाहनों के कारण लेवल क्रॉसिंग पर हमेशा भारी जाम लगा रहता है। सड़क उपयोगकताओं के लिए ट्रैफिक जाम की समस्या को दूर करने तथा रेलवे ट्रैक की संरक्षा के मद्देनजर रेलवे बोर्ड द्वारा लेवल क्रॉसिंग संख्या 02 के स्थान पर रोड ओवर ब्रिज के निर्माण को मंजूरी दी गई थी। इस आरओबी में तीन लेन हैं - बेतिया-लौरिया लेन (700 मीटर), मैनाटांड लेन (398 मीटर) तथा नरकटियागंज लेन (390 मीटर) जिनकी कुल लंबाई 1488 मीटर है। बेतिया-लौरिया लेन का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 06.03.2024 को किया जा चुका है और इसे सड़क यातायात के लिए खोल दिया गया है। इसके साथ ही मैनाटांड़-नरकटियागंज लेन को भी 17.05.2024 को सड़क यातायात के लिए खोल दिया गया है। इन लेनों के चालू हो जाने से लोगों को ट्रैफिक जाम से काफी राहत मिली है।

संक्षिप्त समाचार

पैरालंपिक 2024

योगेश कथुनिया ने डिस्कस थ्रो एफ-56 स्पर्धा में लगातार दूसरी बार जीता सिल्वर मेडल

पेरिस (एजेंसी)। भारत के योगेश कथुनिया ने सोमवार को यहां चल रहे खेलों में पुरुषों की डिस्कस थ्रो एफ-56 स्पर्धा में सीजन का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए अपना लगातार दूसरा पैरालंपिक रजत पदक जीता।

29 वर्षीय ने अपने पहले ही प्रयास में 42.22 मीटर तक डिस्कस फेंका, जो उन्होंने तीन साल पहले टोक्यो पैरालिंपिक में जीते रजत में शामिल है। ब्राजील के क्लॉडनी बतिस्ता डॉस सैंटोस ने अपने पांचवें प्रयास में 46.86 मीटर के प्रयास के साथ नया खेलों का रिकॉर्ड बनाते हुए पैरालंपिक स्वर्ण पदकों की हैट्रिक दर्ज की। ग्रीस के कोंस्टेंटिनोस त्ज़ोनिस ने 41.32 मीटर के साथ कांस्य पदक जीता।

एफ-56 दिव्यांग एथलीटों के लिए एक सीटिंग फील्ड इवेंट वर्ग है। इस वर्गीकरण में अंग विच्छेदन और रीढ़ की हड्डी की चोट वाले लोग भाग लेते हैं।

श्रीलंका पर जीत के साथ इंग्लैंड को डब्ल्यूटीसी अकों में फायदा, लेकिन अभी भी अपने स्थान पर बरकरार

लंदन (एजेंसी)। जो रूट के दोहरे शतक और गस एटकिंसन के ऑल-राउंड प्रदर्शन की मदद से इंग्लैंड ने लॉर्ड्स में श्रीलंका पर 190 रनों की जीत दर्ज की। इस जीत के साथ उनके खाते में 81 डब्ल्यूटीसी अंक हो गए हैं और उनका डब्ल्यूटीसी अंक प्रतिशत 45 हो गया है। वे भारत, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बाद चौथे स्थान पर बने हुए हैं। दूसरी ओर श्रीलंका की हार ने उनके अंक प्रतिशत को 40 से गिराकर 33.33त्न तक ला दिया है और एशियाई टीम अब दक्षिण अफ्रीका और बांग्लादेश के बाद सातवें स्थान पर है।

एटकिंसन के शानदार प्रदर्शन ने चौथे दिन ही इंग्लैंड की जीत सुनिश्चित कर दी। उन्होंने बल्ले से 118 और 14 रन बनाए, और गेंद से 2/40 और 5/62 रन बनाए। इससे वे फरवरी 2024 में रवींद्र जडेजा के बाद एक ही टेस्ट में पांच विकेट लेने और शतक बनाने वाले पहले पुरुष खिलाड़ी बन गए। एटकिंसन टेस्ट में यह उपलब्धि हासिल करने वाले इंग्लैंड के तीसरे पुरुष खिलाड़ी हैं। इयान बॉथम (जिन्होंने इसे पांच मौकों पर किया था) और टोनी ग्रेग (एक बार) अन्य दो हैं।

आईसीसी की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि एटकिंसन 1984 के बाद से ऐसा करने वाले इंग्लैंड के पहले खिलाड़ी बन गए हैं। यह मौजूदा सत्र में घर पर इंग्लैंड की लगातार पांचवीं जीत थी, 2004 के बाद से एक ही सीजन में पहली बार जब माइकल वॉन की टीम न्यूजीलैंड और वेस्टइंडीज पर क्रमशः 3-0 और 4-0 से श्रृंखला जीत के साथ अपराजित रही थी। यह भी पहली बार था जब श्रीलंका ने 1991 के बाद से लॉर्ड्स में टेस्ट गंवाया था, जिससे इस स्थल पर लगातार पांच ड्रॉ मैचों का सिलसिला समाप्त हो गया। 31 अगस्त को जो रूट ने दूसरी पारी में अपना 34वां टेस्ट शतक जड़ा था।

साइना नेहवाल इस गंभीर बीमारी से पीड़ित, संन्यास लेने पर कर रही विचार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की दिग्गज शटलर और पूर्व ओलंपिक कांस्य पदक विजेता साइना नेहवाल ने खुलासा किया है कि वह गठिया की समस्या से जूझ रही हैं और इस साल के अंत तक उन्हें बैडमिंटन में अपने भविष्य के बारे में फैसला करना होगा, क्योंकि इस बीमारी के कारण उनके लिए सामान्य घंटों तक प्रशिक्षण लेना असंभव हो गया है। 34 वर्षीय पूर्व विश्व नंबर 1 खिलाड़ी, जो लंदन 2012 में कांस्य पदक के साथ ओलंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय शटलर थीं, ने चोटों से परेशान होने से पहले खेलों के तीन संस्करणों में भाग लिया था।

2010 और 2018 राष्ट्रमंडल खेलों की स्वर्ण पदक विजेता ने कहा कि वह अब इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं कर सकतीं कि उनका करियर अपने अंतिम चरण में है। नेहवाल ने हाल ही में पेरिस ओलंपिक में भारत के शेफ-डी-मिशन रहे निशानेबाज़ गगन नारंग द्वारा होस्ट किए गए 'हाउस ऑफ ग्लोरी' पॉडकास्ट पर कहा, घुटना बहुत अच्छा नहीं है। मुझे गठिया है। मेरी कार्टिलेज बहुत खराब स्थिति में है। 8-9 घंटे तक जोर लगाना बहुत मुश्किल है। आप ऐसी स्थिति में दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को कैसे चुनौती देंगे? मुझे लगता है कि मुझे कहीं न कहीं इसे स्वीकार करना ही होगा। क्योंकि दो घंटे की ट्रेनिंग उच्चतम स्तर के खिलाड़ियों के साथ खेलने और वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

नेहवाल ने कहा कि वह अभी भी इस बात पर विचार कर रही हैं कि रिटायरमेंट का उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा, लेकिन उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें अंततः निर्णय लेना ही होगा। अग्रणी स्टार, जो अब भाजपा की सदस्य भी हैं, को आखिरी बार एक साल से अधिक समय पहले सिंगापुर ओपन में एक्शन में देखा गया था, जहां वह शुरुआती दौर में हार गई थीं। उन्होंने कहा, %मैं इसके

(संन्यास) बारे में भी सोच रही हूं। यह दुखद होगा क्योंकि यह एक सामान्य व्यक्ति द्वारा की जाने वाली नौकरी की तरह है। जाहिर है, एक खिलाड़ी का करियर हमेशा छोटा होता है। मैंने 9 साल की उम्र में शुरुआत की थी। अगले साल मैं 35 साल की हो जाऊंगी।

नेहवाल ने कहा, मेरा करियर भी लंबा रहा है और मुझे इस पर बहुत गर्व है। मैंने अपने शरीर को काफी हद तक तोड़ दिया है। मैंने जो किया है और जो कुछ भी दिया है, उससे मैं खुश हूं। (मैं) इस साल के अंत तक आकलन करूंगी कि मैं कैसा महसूस कर रही हूं।% पद्म श्री पुरस्कार विजेता ने कहा कि ओलंपिक में भाग लेना उनका बचपन का सपना था और लगातार दो संस्करणों में पदक से चूकना दुखद है। उन्होंने कहा, ओलंपिक में भाग लेना सभी के लिए बचपन का सपना होता है। आप उस स्तर तक पहुंचने के लिए सालों तक तैयारी करते हैं। इसलिए, कई बार जब आपको लगता है कि आप इसे हासिल नहीं कर पाएंगे तो यह बहुत दुख देता है। क्योंकि ऐसा नहीं है कि आप खेलना नहीं चाहते हैं, लेकिन आपका शरीर बता रहा है कि आप अच्छा नहीं कर रहे हैं और आपको चोटें लगी हैं।

नेहवाल ने कहा कि वह खेलों में अपने प्रदर्शन को गर्व के साथ याद करेंगी। उन्होंने कहा, लेकिन मैंने बहुत मेहनत की है। मैंने तीन ओलंपिक में हिस्सा लिया। मैंने उन सभी में अपना 100 प्रतिशत दिया। मैं इस पर गर्व कर सकती हूं और इससे खुश हूं। नेहवाल ने अपेक्षाओं के दबाव के बारे में भी बात की और कहा कि एक शीर्ष एथलीट के रूप में उन्होंने न केवल खेल के पर्यवेक्षकों से बल्कि प्रियजनों से भी इसका सामना किया है।

उन्होंने कहा, जब आप एक बड़े खिलाड़ी बन जाते हैं, तो आपके दोस्त, परिवार, कोच, प्रायोजक, हर कोई चाहता है कि आप अच्छा प्रदर्शन करें। इसमें बहुत सारे हितधारक शामिल होते हैं। उन्होंने कहा, पहले से ही छोटे करियर के साथ, एथलीट चार साल का ब्रेक नहीं ले सकते और उन्हें लगातार अच्छा प्रदर्शन करना पड़ता है। अगर आप एक अंतरराष्ट्रीय चैंपियन बनना चाहते हैं, तो आपको कठिन निर्णय लेने के लिए मजबूत होना होगा।

सुमित नागल स्वीडन के खिलाफ डेविस कप मुकाबले से हटे

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के शीर्ष एकल खिलाड़ी सुमित नागल पीठ की चोट के कारण स्वीडन के खिलाफ आगामी डेविस कप मुकाबले से सोमवार को हट गए। नागल हाल ही में अमेरिकी ओपन में अपने पहले दौर के एकल मुकाबले में टालोन ग्रिक्सपुर से हार गए थे। भारत और स्वीडन के बीच स्टॉकहोम में इनडोर हार्ड-कोर्ट प्रतियोगिता 14-15 सितंबर को खेली जाएगी।

नागल ने सोशल मीडिया पर लिखा, 'मैं स्वीडन के खिलाफ आगामी डेविस कप मुकाबले में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए वास्तव में उत्सुक था। उन्होंने कहा, 'मुझे हालांकि पीठ में दर्द की समस्या पिछले कुछ सप्ताह से परेशान कर रही है। डॉक्टरों ने मुझे अगले दो सप्ताह तक आराम करने की सलाह दी है, जिससे मेरे पास तैयारी करने और स्वीडन में प्रतिस्पर्धा करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है।

उन्होंने कहा, 'मैंने इसी समस्या के कारण अमेरिकी ओपन में युगल मुकाबलों से अपना नाम वापस ले लिया था। मैं डेविस कप मुकाबले से चूकने को लेकर बहुत निराश हूं, लेकिन पीठ की स्थिति को और खराब होने से बचाने के लिए मुझे अपने शरीर के मुताबिक काम करना होगा ताकि मैं सीजन को मजबूत और स्वस्थ तरीके से समाप्त कर सकूं। भारतीय टीम को शुभकामनाएं। मैं घर से आप सभी की हौसला अफजाई करुंगा।

नागल जुलाई में अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग 68 पर पहुंच गए थे लेकिन नवीनतम रैंकिंग में गिरकर 82 पर आ गए हैं। भारत के सर्वोच्च रैंकिंग वाले एकल खिलाड़ी का डेविस कप मुकाबले का हिस्सा नहीं होना टीम के लिए बड़ा झटका है। पूर्व राष्ट्रीय चैंपियन आशुतोष सिंह को राष्ट्रीय टीम का नया कोच नियुक्त किया गया है।

गस एटकिंसन ने लॉर्ड्स में तीसरी बार झटके पांच विकेट, शीर्ष खिलाड़ियों की सूची में हुए शामिल

लंदन (एजेंसी)। लॉर्ड्स में श्रीलंका के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच के दौरान इंग्लैंड के तेज गेंदबाज गस एटकिंसन उन इंग्लिश खिलाड़ियों की सूची में शामिल हो गए जिन्होंने टेस्ट में पहले पांच मैचों में सबसे अधिक विकेट लिए हैं। एटकिंसन ने दूसरे टेस्ट में बल्ले और गेंद दोनों से शानदार प्रदर्शन किया। पहली पारी में उन्होंने 102.61 की स्ट्राइक रेट से 115 गेंदों पर 118 रन बनाए। उन्होंने क्रीज पर अपने समय के दौरान 14 चौके और 4 छक्के लगाए। श्रीलंका की दूसरी पारी में एटकिंसन ने 3.90 की इकॉनमी रेट से पांच विकेट लिए और इंग्लैंड को मेहमान टीम पर 190 रनों से जीत दिलाने में मदद की।

26 वर्षीय तेज गेंदबाज पहले पांच टेस्ट में सबसे अधिक विकेट लेने वाले चौथे इंग्लिश खिलाड़ी बन गए। वेस्टइंडीज के खिलाफ 2024 में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने के बाद एटकिंसन ने पांच मैच खेले हैं और 4.07 की इकॉनमी रेट से 33 विकेट लिए हैं। पूर्व इंग्लिश क्रिकेटर

निकोलस कुक ने अपने पहले पांच टेस्ट मैचों में 34 विकेट लेकर इस सूची में शीर्ष स्थान पर हैं। इंग्लैंड के अन्य पूर्व क्रिकेटर फ्रेड ट्रूमैन और थॉमस रिचर्डसन क्रमशः सूची में दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं। ट्रूमैन और रिचर्डसन दोनों ने अपने पदार्पण के बाद अपने पहले पांच टेस्ट मैचों में 33 विकेट लिए थे।

इंग्लैंड और श्रीलंका के बीच दूसरे टेस्ट मैच की बात करें तो मेहमान टीम ने टॉस जीतकर पहले क्षेत्ररक्षण करने का फैसला किया। इंग्लैंड ने पहली पारी में 427 रन बनाए जिसमें रूट (206 गेंदों में 18 चौकों की मदद से 143 रन) और गस एटकिंसन (115 गेंदों में 118 रन, 14 चौकों और चार छक्कों की मदद से) ने शतक जड़कर इंग्लैंड को विशाल स्कोर तक पहुंचाया।

श्रीलंका के लिए असिथा फर्नांडो (5/102) शीर्ष गेंदबाज रहीं। मिलन रथनायके और लाहिरू कुमारा ने दो-दो विकेट लिए। अपनी पहली पारी में कामिंडू मेंडिस के 120 गेंदों में आठ चौकों और तीन छक्कों की मदद से 74 रनों की जुझारू पारी के बावजूद श्रीलंका सिर्फ 196 रन ही बना सका क्योंकि शीर्ष क्रम ने टीम को फिर से निराश किया। क्रिस वोक्स, ओली स्टोन्स, गस एटकिंसन और मैथ्यू पॉट्स को दो-दो विकेट मिले, जबकि शोएब बशीर को एक विकेट मिला। इंग्लैंड ने 231 रनों की बढ़त हासिल की।

श्रीलंका ने इंग्लैंड की दूसरी पारी में गेंद पर बेहतर नियंत्रण दिखाया और उन्हें 251 रनों पर समेट दिया। रूट के 121 गेंदों में 10 चौकों की मदद से 103 रनों के बाद दूसरा सबसे बड़ा योगदान हैरी ब्रूक (36 गेंदों में 37 रन, चार चौकों और एक छक्के की मदद से) ने दिया। असिथा फर्नांडो (3/52) और लाहिरू कुमारा (3/53) श्रीलंका के लिए सबसे ज़्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज रहे।

483 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए श्रीलंका ने तीन अर्धशतकों के साथ संघर्ष किया जिसमें दिमुथ करुणारत्ने (129 गेंदों में 55 रन, सात चौके), दिनेश चांदीमल (62 गेंदों में 58 रन, 11 चौके) और कप्तान धनंजय डी सिल्वा (71 गेंदों में 50 रन, सात चौके) शामिल थे। लेकिन इसके बावजूद श्रीलंका 292 रनों पर ढेर हो गई और 190 रनों से हार गई। एटकिंसन (5/62) इंग्लैंड के लिए सबसे बेहतरीन गेंदबाज रहे जिन्होंने लॉर्ड्स में अपना तीसरा पांच विकेट लिया। ओली स्टोन और क्रिस वोक्स ने भी दो-दो विकेट लिए। एटकिंसन ने अपने हरफनमौला प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार हासिल किया।

गत चैंपियन कोको गॉफ अमेरिकी ओपन से बाहर

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। गत चैंपियन कोको गॉफ का अमेरिकी ओपन टेनिस टूर्नामेंट के महिला एकल में अपने खिताब का बचाव करने का अभियान चौथे दौर में ही थम गया। तीसरी वरीयता प्राप्त गॉफ ने 19 डबल फॉल्ट किए जिसका आखिर में उन्हें खामियाजा भुगतना पड़ा और वह एम्मा नवारो से 6-3, 4-6, 6-3 से हार गईं।

गॉफ का पिछली कुछ प्रतियोगिताओं में प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। वह पेरिस ओलंपिक के तीसरे दौर में हार गई थी जबकि अमेरिकी ओपन की तैयारी के सिलसिले में खेले गए टूर्नामेंट में भी वह अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई थी। उन्होंने हालांकि इसे सकारात्मक रूप में लिया। गॉफ ने कहा, 'भले ही कुछ परिणाम अनुकूल नहीं रहे लेकिन मैंने इस सत्र में अच्छा प्रदर्शन किया। कितने ही खिलाड़ी हैं जो चौथे दौर में पहुंचाना चाहते हैं और ओलंपिक का हिस्सा बनना चाहते हैं। कई खिलाड़ी हैं जो ध्वजवाहक बनना चाहते हैं। यह इस परिप्रेक्ष्य में है।

यह परिणाम शुक्रवार को मौजूदा पुरुष चैंपियन नोवाक जोकोविच की तीसरे दौर में हार के बाद आया है। इसका मतलब है कि अमेरिकी ओपन में अपने खिताब का बचाव करने में असफल रहने का पिछले कुछ वर्षों से चला आ रहा सिलसिला जारी रहेगा। महिला एकल में ऐसा करने वाली आखिरी खिलाड़ी सेरेना विलियम्स थी जिन्होंने 2012 से 2014 तक खिताब जीते थे। पुरुष वर्ग में ऐसा कारनामा रोजर फेडरर ने 2004 से 2008 तक किया था।

जोकोविच को हराने वाले 28 वरीयता प्राप्त एलेक्सी पोपिरिन का सफर भी लंबा नहीं चल पाया और वह फ्रांसिस टियाफो से 6-4, 7-6 (3), 2-6, 6-3 से हारकर बाहर हो गए। टियाफो का अगला मुकाबला ग्रिगोर दिमित्रोव से होगा जिन्होंने एंड्री रुबलेव को 6-3, 7-6 (3), 1-6, 3-6, 6-3 से हराया। टेलर फ्रिट्ज भी आगे बढ़ने में सफल रहे। उन्होंने तीन बार के ग्रैंड स्लैम फाइनलिस्ट कैस्पर रूड को 3-6, 6-4, 6-3, 6-2 से हराया। फ्रिट्ज के क्वार्टरफाइनल में प्रतिद्वंद्वी अलेक्जेंडर ज्वेरेव होंगे, जिन्होंने ब्रैंडन नकाशिमा को 3-6, 6-1, 6-2, 6-2 से पराजित किया। महिला वर्ग में नवारो का अगला मुकाबला पाउला बडोसा से होगा, जिन्होंने वांग याफान के खिलाफ 6-1, 6-2 से जीत दर्ज की। दूसरी वरीयता प्राप्त आर्यना सबालेंका भी क्वार्टर फाइनल में पहुंच गई हैं। उन्होंने एलिस मर्टेंस को 6-2, 6-4 से हराया।

प्रीति पाल ने रचा इतिहास, पैरा ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली पहली महिला पैरा एथलीट बनी

पेरिस (एजेंसी)। भारतीय धाविका प्रीति पाल ने पेरिस पैरालंपिक खेलों में महिलाओं की 200 मीटर टी20 दौड़ में व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ कांस्य पदक जीता है। रविवार रात हुये मुकाबले में प्रीति पाल ने महिलाओं की 200 मीटर टी35 दौड़ में अपने सर्वश्रेष्ठ 30.01 सेकंड के साथ कांस्य पदक अपने नाम किया।

इस जीत के साथ वह पैरालंपिक में दो पदक जीतने वाली पहली ट्रैक और फील्ड भारतीय महिला पैरा एथलीट बन गई हैं। प्रीति पाल एक से ज्यादा पैरालंपिक मेडल जीतने वाली सिर्फ सातवीं भारतीय बनी हैं। इससे पहले शुक्रवार को उन्होंने पैरालंपिक ट्रैक स्पर्धा में भारत का पहला एथलेटिक्स पदक जीता था। उन्होंने महिलाओं की टी35 100 मीटर प्रतियोगिता में 14.21 सेकंड के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय के साथ कांस्य पदक जीता था।

गौतम गंभीर की परफेक्ट प्लेइंग 11 से रोहित और बुमराह बाहर

धोनी-कोहली सहित इन प्लेयर्स को मिली जगह

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारतीय कोच गौतम गंभीर ने ऑल टाइम भारतीय इलेवन का चयन किया है जिसमें सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़ और वीरेंद्र सहवाग सहित भारतीय क्रिकेट के कुछ महान खिलाड़ी शामिल हैं। हैरानी की बात यह है कि गंभीर ने अपनी इलेवन में विराट कोहली और एमएस धोनी को भी शामिल किया है, ये दो खिलाड़ी हैं जिनके बारे में उन्हें अक्सर चिंता रहती है, लेकिन रोहित शर्मा और जसप्रीत बुमराह को टीम से बाहर रखा है। एक यूट्यूब चैनल पर पोस्ट किए गए वीडियो में गंभीर ने खुद को और वीरेंद्र सहवाग को ऑल-टाइम इंडिया इलेवन में सलामी बल्लेबाज के रूप में सूचीबद्ध किया। इस बीच राहुल द्रविड़ और सचिन तेंदुलकर को क्रमशः नंबर 3 और 4 पर जगह मिली। विराट कोहली को नंबर 5 पर टीम में शामिल किया गया है जबकि युवराज सिंह, जो ऑलराउंडर की भूमिका निभाते हैं, को नंबर 6 पर जगह मिली है। इसके अलावा एमएस धोनी नंबर 7 पर विकेटकीपर की भूमिका दी गई है। अनिल कुंबले और रविचंद्रन अश्विन क्रमशः नंबर 8 और 9 पर टीम में दो स्पिनर हैं। दिलचस्प बात यह है कि जसप्रीत बुमराह को गंभीर की ऑल-टाइम इलेवन में शामिल नहीं किया गया है जबकि इरफान पठान और जहीर खान दो तेज गेंदबाज हैं। बल्लेबाजी में योगदान देने की पठान की क्षमता ने बुमराह और अन्य तेज गेंदबाजों से आगे उनके चयन में भूमिका निभाई है जो गंभीर द्वारा अब तक भारतीय टीम को प्रबंधित करने के तरीके के अनुरूप है।

सचिन तेंदुलकर ने प्रीति पाल और निषाद कुमार को पैरालंपिक्स में पदक जीतने पर दी बधाई

नई दिल्ली(एजेंसी)। दिग्गज क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने पेरिस पैरालिंपिक खेलों में पदक जीतने पर प्रीति पाल और निषाद कुमार को बधाई दी। प्रीति पाल ने रविवार को 200 मीटर टी-35 रेस में कांस्य पदक जीता। इस पदक के साथ प्रीति ने इतिहास रच दिया और वह पैरालिंपिक या ओलंपिक में ट्रैक एंड फील्ड स्पर्धाओं में 2 पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला एथलीट बन गईं। निषाद कुमार ने सोमवार सुबह पुरुषों की ऊंची कूद - टी47 फाइनल में रजत पदक जीता। निषाद तीन साल पहले टोक्यो में भी दूसरे स्थान पर रहे थे, ने 2.04 मीटर की छलांग के साथ अपने सीजन का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया जिससे उन्हें रजत पदक मिला।

अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर तेंदुलकर ने कहा कि प्रीति और निषाद दोनों नई ऊंचाइयों को छू रहे हैं और मार्की इवेंट में अपने प्रदर्शन से लोगों के दिलों में जगह बना रहे हैं। तेंदुलकर ने एक्स पर लिखा, ऊंची कूद में रजत पदक जीतने के लिए निषाद कुमार को बधाई! प्रीति पाल आपने 200

मीटर स्प्रिंट में एक और कांस्य पदक जीतकर इस पैरालिंपिक में दो पदक जीत लिए हैं। साथ में आप दोनों नई ऊंचाइयों को छू रहे हैं और हमारे दिलों में जगह बना रहे हैं। बहुत बढ़िया।

भारत ने मौजूदा पेरिस पैरालिंपिक में एक स्वर्ण पदक, दो रजत और चार कांस्य पदक के साथ कुल सात पदक हासिल किए हैं। रुबीना ने शनिवार को पी2-महिला 10 मीटर एयर पिस्टल एसएच-1 फाइनल में तीसरा स्थान हासिल किया और कांस्य पदक जीता। उन्होंने फाइनल में कुल 211.1 अंक हासिल किए। ईरान के जावनमर्डी सरेह ने स्वर्ण (236.8 अंक) जीता और तुर्की के ओजगन आयसेल ने रजत पदक (231.1 अंक) जीता। शुक्रवार को मौजूदा पैरालंपिक चैंपियन अवनी लेखरा ने अपनी जीत का सिलसिला जारी रखा और महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल फाइनल में स्वर्ण पदक जीता। इसी स्पर्धा में निशानेबाज मोना अग्रवाल ने कांस्य पदक जीता। पेरिस पैरालिंपिक में भारत का पहला रजत पदक भी निशानेबाजी में आया जिसमें मनीष नरवाल ने पुरुषों की पी1 10 मीटर एयर पिस्टल एसएच1 प्रतियोगिता में रजत पदक जीता।

इस साल भारत ने पैरालंपिक खेलों में अपना अब तक का सबसे बड़ा दल भेजा है जिसमें 12 खेलों के 84 एथलीट शामिल हैं, जो देश के बढ़ते पैरा-स्पोर्ट्स इकोसिस्टम का प्रमाण है। पेरिस पैरालिंपिक खेलों में भारत की भागीदारी न केवल संख्या में बल्कि पदक की उम्मीदों में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाती है, क्योंकि देश का लक्ष्य टोक्यो में अपनी पिछली उपलब्धियों को पार करना है। टोक्यो 2020 भारत का सबसे सफल पैरालंपिक खेल था, जिसमें देश ने पांच स्वर्ण, आठ रजत और छह कांस्य सहित 19 पदक जीते थे।

संक्षिप्त समाचार

हरियाणा विधानसभा चुनाव : सुनीता केजरीवाल ने लोगों को दी पांच गारंटी

भिवानी, एजेंसी। हरियाणा विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। रविवार को हरियाणा के कई विधानसभा क्षेत्रों में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने प्रचार किया। इस दौरान उन्होंने हरियाणा के लोगों को मुफ्त बिजली, शानदार सरकारी स्कूल बनाकर बच्चों को मुफ्त शिक्षा, मोहल्ला क्लिनिक और अस्पताल, जहां मुफ्त इलाज होगा, महिलाओं को 1000 रुपए महीना सम्मान राशि व युवाओं को रोजगार देने की गारंटी दी। उन्होंने बाढ़डा विधानसभा क्षेत्र में आयोजित बदलाव जनसभा में कहा, हरियाणा के लाल अरविंद केजरीवाल शेर हैं। वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगे न झुकेंगे न टूटेंगे। अरविंद दिल्ली के मुख्यमंत्री बने और उन्होंने देश की राजनीति को बदल दिया। उन्होंने जनता के लिए काम किया और इसलिए उन्हें जेल में डाल दिया गया। सुनीता ने कहा, भाजपा को विपक्षी पार्टियों को तोड़ना और नेताओं को जेल में डालना आता है, लेकिन हरियाणा के लाल अरविंद केजरीवाल टूटने वाले नहीं हैं। हरियाणा में भाजपा को 10 साल हो गए, लेकिन यहां बच्चों की शिक्षा में कोई सुधार नहीं हुआ। सरकारी अस्पताल और इलाज में कोई बदलाव नहीं आया। यहां कुछ नहीं होता। लेकिन, मैं आपसे वादा कर रही हूं दिल्ली और पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार है। इन दोनों राज्यों में सरकारी स्कूल और अस्पताल अच्छे बन गए। 24 घंटे बिजली आती है। मोहल्ला क्लिनिक में मुफ्त इलाज और दवाएं मिलती हैं। महिलाओं के लिए मुफ्त बस यात्रा और बुजुर्गों के लिए तीर्थ यात्रा का इंतजाम है। अब दोनों ही राज्यों में महिलाओं को 1000 रुपए हर महीने मिलने वाले हैं। यह सब काम हरियाणा के लोगों के लिए आम आदमी पार्टी करेगी। इसलिए, इस विधानसभा चुनाव में आप के उम्मीदवारों को भारी मतों से जिताना है। बता दें कि हरियाणा विधानसभा चुनाव में भाजपा तीसरी बार सरकार बनाने का दावा कर रही है, वहीं, कांग्रेस और आम आदमी पार्टी का दावा है कि प्रदेश में अपने दम पर उनकी पार्टी सरकार बन रही है।

सोशल मीडिया पर हर महीने 54 लाख खर्च करते हैं सिद्धारमैया, आरटीआई के जवाब में खुलासा

बेंगलुरु, एजेंसी। मैसूर शहरी विकास प्राधिकरण (एमयूडीए) कथिक घोटाला मामले में कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। यहां तक कि राज्य में मुख्यमंत्री बदले जाने के भी कयास लगाए जा रहे हैं। इसी बीच एक आरटीआई के जवाब में पता चला है कि सीएम सिद्धारमैया सोशल मीडिया अकाउंट हैंडल करने के लिए 54 लाख रुपये खर्च करते हैं। वह इतना खर्च व्यक्तिगत और आधिकारिक दोनों अकाउंट्स के लिए करते हैं। रिपोर्ट के मुताबिक आरटीआई एक्टिविस्ट मारलिंगा गौड़ा माली पाटिल ने आरटीआई डालकर जवाब मांगा था। उन्हें जब पता चला कि विकास के कई कार्यों के लिए सरकार के पास फंड नहीं है तो इसका पता लगाने की कोशिश की। मुख्यमंत्री कार्यालय की तरफ से बताया गया कि पूर्व मुख्यमंत्रियों की तुलना में सिद्धारमैया सोशल मीडिया पर बेहद कम खर्च करते हैं। इससे पहले के मुख्यमंत्री का यह खर्चा 2 करोड़ के करीब था। सरकारी एजेंसी कर्नाटक स्टेट मार्केटिंग कम्युनिकेशन ऐंड एडवर्टाइजिंग लिमिटेड (एमसीए) ने यह जानकारी दी है। पिछले साल 25 अक्टूबर से मार्च 2024 तक सीएमओ ने 3 करोड़ रुपये के आसपास खर्च किए हैं। आरटीआई में मिली जानकारी के मुताबिक सीएमओ ने हर मीहने करीब 53.9 लाख रुपये खर्च किए है। इसमें 18 फीसदी की जीएसटी भी शामिल है। यह पेमेंट पॉलिसी फ्रंट नाम की कंपनी को किया गया जो कि सिद्धारमैया के अकाउंट हैंडल करवाती है। इसमें करीब 35 लोगों की टीम है। एमयूडीए कथित घोटाला मामले में सीएम सिद्धारमैया के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी दे दी थी।

यूपीएस को लेकर दुविधा में दक्षिणी राज्य, चुनाव से पहले केरल, तमिलनाडु में मंथन

बेंगलुरू, एजेंसी।
तमिलनाडु और केरल में अगले दो साल में विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में दक्षिणी राज्य केंद्र द्वारा 24 अगस्त को घोषित एकीकृत पेंशन योजना (यूपीएस) पर मंथन कर रहे हैं। फिलहाल दक्षिण के चार राज्य में विपक्षी पार्टियों की सरकार है और वे पहले से ही चुनाव-पूर्व गारंटी की घोषणाओं को वजह से आर्थिक बोझ से दबे हुए हैं। केरल और तमिलनाडु में 2026 में चुनाव होने हैं। वहीं कर्नाटक और तेलंगाना में पिछले साल विधानसभा चुनाव हुए थे जबकि आंध्र प्रदेश में अभी-अभी नई सरकार बनी है। यूपीएस सरकारी कर्मचारियों को उनकी सेवानिवृत्ति पर एक सुनिश्चित पेंशन राशि प्रदान करता है। नियोक्ता जहां मूल वेतन और डीए का 18.5प्रतिशत योगदान देंगे वहीं

कर्मचारी हर महीने मूल वेतन और डीए का 10प्रतिशत देंगे। यूपीएस पर स्विच करने का मतलब होगा कि राज्य अपना हिस्सा बढ़ाकर 18.5प्रतिशत कर देंगे।

हाल ही में कर्नाटक ने दो महीने से भी कम समय पहले सरकारी कर्मचारियों के वेतन में बड़ी वृद्धि की घोषणा की थी जिससे सालाना 20,206 करोड़ रुपये का अतिरिक्त खर्च होगा। कर्नाटक के राजस्व मंत्री कृष्ण बायरे गौड़ा जो जीएसटी परिषद में कर्नाटक का प्रतिनिधित्व करते हैं ने यूपीएस पर बात करते हुए बताया, हमें अभी पूरी जानकारी नहीं मिली है। हम इस पर सकारात्मक और खुले दिमाग से सोचेंगे। गौड़ा ने एनपीएस के बारे में कर्मचारी यूनियन की चिंताओं पर बात करते हुए कहा कि लोगों के प्रति अपने बड़े सामाजिक दायित्वों को पूरा करना सरकार का संवैधानिक दायित्व भी है। उन्होंने कहा कि सरकार को यह तय करना होगा कि बजटीय खर्च का कितना हिस्सा कर्मचारियों की लागत और लोगों की ओर खर्च किया जाना चाहिए।

कर्मचारी संघ कर रहे हैं ओपीएस की मांग: गौरतलब है कि राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस) के तहत राज्य मूल वेतन और महंगाई भत्ते (डीए) का 14प्रतिशत योगदान करते हैं जबकि कर्मचारी हर महीने मूल वेतन और डीए का 10त्न योगदान करते हैं। हालांकि केरल अपनी खराब वित्तीय हालत की वजह से 10प्रतिशत का ही योगदान दे रहा है। वहीं कर्मचारी संघ पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस) को फिर से शुरू करना चाहते हैं।

कांग्रेस लाएगी जनता का मेनिफेस्टो : 20 लाख लोगों के घरों तक पहुंचे कांग्रेस कार्यकर्ता

चंडीगढ़, एजेंसी। विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस जनता का घोषणापत्र तैयार कर रही है। हरियाणा मांगे हिसाब अभियान के तहत घोषणा पत्र बनाने के लिए कांग्रेस का प्रत्येक कार्यकर्ता घर-घर पहुंच रहा है। यही वजह है कि कांग्रेस कार्यकर्ता अब तक 20 लाख घरों तक पहुंच चुके हैं और उनसे घोषणा पत्र के लिए सुझाव प्राप्त कर चुके हैं। असल में हरियाणा मांगे हिसाब के तहत घर-घर तक पहुंचाने के लिए 90 विधानसभा क्षेत्रों में कांग्रेस ने कॉर्डिनेटर्स और को-कॉर्डिनेटर्स नियुक्त किए थे। जिन्होंने. पिछले दो महीनों में स्थानीय नेताओं के साथ बैठक कर घर-घर जाकर जनसंपर्क करने की जिम्मेदारियां सौंपी थी। बताया गया है कि अभियान की मॉनिटरिंग के लिए विधानसभा स्तर पर व्हाट्सएप ग्रुप बनाए गए हैं।

भाजपा सरकार के खिलाफ चार्जशीट भी पहुंचाई:: अभियान के साथ ही कांग्रेस पार्टी ने बीजेपी सरकार के खिलाफ चार्जशीट भी जारी की थी। जिसमें बीजेपी सरकार की नाकामियों को गिनाया गया है। इस चार्जशीट को भी हरियाणा के कोने कोने में पहुंचाया गया है। शहरों के भीड़भाड़ वाले बाजारों और गांव की चौपालों से लेकर मोहल्लों की गलियों और नुक्कड़ों तक चार्जशीट को पहुंचाया गया है। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रत्येक घर, स्थानीय हाट, मंडियों, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, और सामुदायिक केंद्रों पर पहुंच कर हर हरियाणवी तक अपनी बात पहुंचाई है। वहीं सुझाव पेटी, सुझाव वाहन, वेबसाइट, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और मिस्ड कॉल नंबरों के माध्यम से लोगों की शिकायतें और सुझाव एकत्र किए गए हैं।

नोएडा में 4 माह की गर्भवती महिला से गैंगरेप, अपहरण कर 3 लोगों ने चलती कार में लूटी आबरू

नोएडा एजेंसी।
गाजियाबाद के खोड़ा कॉलोनी में रहने वाली चाह माह की एक गर्भवती महिला के साथ तीन लोगों ने चलती कार में गैंगरेप किया। महिला प्रेमी के साथ लिव-इन रिलेशन में रहती है। पीड़िता का आरोप है कि आरोपी उसे नोएडा के सेक्टर-63 से झांसा देकर अपने साथ ले गए थे। दिल्ली पुलिस ने जीरो एफआईआर दर्ज कर जांच के लिए मामला नोएडा भेज दिया है। थाना सेक्टर-63 पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। एफआईआर में बताया गया है कि वह प्रेमी के साथ लिव-इन में रहती है। करीब 4 माह की गर्भवती है। वह सेक्टर-63 स्थित एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी करती है। इसी कंपनी में समीर नाम का व्यक्ति ठेकेदारी करता है। 3 जुलाई की दोपहर समीर ने पीड़िता के पास कॉल कर कहा कि कंपनी में कार्यरत एक अंकल की तबियत खराब है। उन्हें देखने चलना है। समीर बाइक लेकर कंपनी पहुंचा और उसे बैठाकर खोड़ा कॉलोनी ले गया, जहां

पहले से बोलेरो कार खड़ी थी। उसमें दो लोग सवार थे। एक का नाम सतेंद्र और दूसरा अज्ञात था। वहां पहुंचने पर समीर ने कहा कि कार से चलते हैं। पीड़िता उस पर विश्वास कर कार में बैठ गई। कुछ दूर चलने पर आरोपियों ने सॉफ्ट ड्रिंक खरीदी। इसे पीने के बाद पीड़िता का सिर भारी हो गया। आरोप है कि कार में आरोपियों ने उसके साथ दुष्कर्म किया। होश में आने पर पीड़िता ने कहा कि वह गर्भवती है, उसे छोड़ दो, घर जाना है। एक बार फिर आरोपियों ने उसके साथ दुष्कर्म किया। इसके बाद आरोपियों ने पीड़िता को घर छोड़ दिया। पीड़िता का आरोप है कि वह शिकायत दर्ज कराने थाना सेक्टर-63 पहुंची, लेकिन मुकदमा दर्ज नहीं किया। इसके बाद पीड़िता घूमती हुई दिल्ली के सनलाइट कॉलोनी थाने पहुंची, जहां पीड़िता ने लिखित शिकायत दी। वहां पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया, बयान दर्ज किए और एम्स में मेडिकल करवाया। पीड़िता का कहना है कि आरोपी समीर ने उसका अपहरण किया और नशीला पदार्थ पिलाकर तीन लोगों ने सामूहिक दुष्कर्म किया। सेंट्रल जोन के डीसीपी शक्ति मोहन अवस्थी का कहना है कि केस की जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

गुरुग्राम में चंडीगढ़ की तर्ज पर होगा बरसाती पानी की निकासी का इंतजाम

गुरुग्राम, एजेंसी।
दिल्ली से सटे हरियाणा के गुरुग्राम में अब चंडीगढ़ की तर्ज पर बरसाती पानी की निकासी का इंतजाम किया जाएगा। इसको लेकर गुरुग्राम महानगर विकास प्राधिकरण (जीएमडीए) की इंजीनियरिंग शाखा ने सर्वे शुरू कर दिया है। इसके साथ-साथ यह फैसला लिया है कि सड़क के साथ लगते बरसाती नालों में पानी निकासी के लिए अधिक से अधिक नालियां बनाई जाएं, जिससे कि सड़क पर पानी अधिक समय तक चलने की बजाय इन नालियों के माध्यम से बरसाती नाले में चला जाए।

जीएमडीए की मुख्य सड़कों की लंबाई 360 किलोमीटर से अधिक है। मौजूदा समय में इन सड़कों के साथ लगते बरसाती नालों में पानी जाने के लिए प्रत्येक 50 मीटर पर नालियां बनी हुई हैं। ऐसे में अब हर 10 मीटर पर यह नालियां बनाई जाएंगी। इसके पीछे अधिकारियों का तर्क है कि गांव घाटा से लेकर हीरो होंडा चौक तक ढलान करीब 70 मीटर है। ऐसे में पानी तेज गति से नीचे आता है। नालियां दूर होने के कारण पानी सड़क पर चलने लग जाता है। सड़क का लेवल ठीक न होने पर जलभराव हो जाता है।

जीएमडीए के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ए.श्रीनिवास ने चंडीगढ़ की तर्ज पर पानी निकासी का बंदोबस्त करने के आदेश जारी किए हैं। इसको लेकर सर्वे शुरू कर दिया है। एक महीने के अंदर पूरा कर लिया जाएगा। इसके पश्चात टेंडर लगाकर बरसाती पानी की निकासी के इंतजाम को दुरुस्त किया जाएगा।

बता दें कि जीएमडीए ने 112 जगह चिन्हित की हैं, जहां पर जलभराव की स्थिति सबसे अधिक होती है। जीएमडीए के एक अधिकारी ने बताया कि गुरुग्राम और मानेसर नगर निगम ने कॉलोनियों, सेक्टर और गांवों के बरसाती नालों को मुख्य बरसाती नालों से नहीं जोड़ा है, जिस वजह से जलभराव की स्थिति बनती है। इसमें पालम विहार भी शामिल है। मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने दोनों नगर निगम आयुक्त को इस सिलसिले में दिशा-निर्देश जारी कर दिए हैं।

जीएमडीए के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने आदेश जारी किए हैं कि दिल्ली-जयपुर हाईवे (एनएच-48) पर जलभराव के कारणों की जांच की जाए। जीएमडीए के इंजीनियरिंग विंग के अधिकारियों ने मुख्य कार्यकारी अधिकारी को बताया है कि भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) के बरसाती नाले कई जगह पर मुख्य बरसाती नालों से जुड़े नहीं हुए हैं। इस वजह से सर्विस रोड पर जलभराव की स्थिति बनती है।

पाकिस्तान में ओपनिंग डे पर शॉपिंग मॉल में लूट

ड्रीम बाजार की ओपनिंग में पहुंचे हजारों लोग

कराची, एजेंसी। पाकिस्तान के कराची में शुक्रवार को लोगों ने ओपनिंग के दिन ही मॉल में लूट कर डाली। पाकिस्तानी न्यूज चैनल ,ऋङ्क न्यूज के मुताबिक मॉल ने ओपनिंग डे पर खरीदी में भारी छूट का ऐलान किया था। कराची के कराची के गुलिस्तान -ए-जौहर में खुले इस मॉल का नाम ड्रीम बाजार है।

भारी डिस्काउंट के चलते मॉल के बाहर हजारों लोगों की भीड़ इक्ट्ठा हो गई थी। इस दौरान कुछ लोग लाठी और डंडे के साथ मॉल में दाखिल हो गए। इसके बाद मॉल में अफरा-तफरी मच गई। अफरा-तफरी के कारण मॉल में अराजकता और तोड़-फोड़ की स्थिति बन गई। इस बीच लोगों ने मॉल में लूटपाट शुरु कर दी।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक मॉल ने ओपनिंग डे पर ज्यादा लोगों को बुलाने के लिए सोशल मीडिया पर विज्ञापन दिए थे। ड्रीम बाजार कपड़ों और घरेलू सामान का शॉपिंग मॉल है। घटना के वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गए हैं।

मॉल में लूटपाट और अराजकता के बाद का मंजर इस कदर भयावह हो गया कि करांची में ट्रैफिक ठप्प पड़ गया। मॉल के बाहर से आई तस्वीरों में हजारों लोग फंसे

दिखाई दिए। मौके पर मौजूद लोगों ने स्थानीय मीडिया को बताया कि लूटपाट के कारण मॉल को काफी नुकसान पहुंचा है। लोगों ने बताया कि मौके पर पुलिसकर्मी मौजूद नहीं थे। घटना के बाद कुछ लोगों ने आरोप लगाया कि पुलिस राह चलते लोगों पर हमले कर रही थी। स्थानीय मीडिया से बात करते हुए मौके पर मौजूद लोगों ने कहा कि मॉल की ऑपनिंग प्लानिंग के मुताबिक नहीं हो पाई, जिसके चलते ऐसी स्थिति बनी। एआरवाय न्यूज के मुताबिक मॉल संचालकों ने भीड़ को काबू में करने के लिए दरवाजे बंद कर दिए थे। लेकिन लोगों ने लाठी और डंडों के इस्तेमाल से कांच का गेट तोड़ दिया। इसके बाद भीड़ मॉल में घुस गई। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि यह सब आधे घंटे के भीतर हुआ। उन्होंने दोपहर 3 बजे दुकान खोली और 330 बजे तक सारा सामान चोरी हो चुका था। इस अफरात-तफरी के कारण कराची के जौहर और राबिया सिटी इलाकों में भयंकर ट्रैफिक जाम लग गया।

लापता हेलीकॉप्टर में सवार 17 लोगों के मिले शव, सभी यात्रियों के मारे जाने की आशंका

मास्को, एजेंसी। रूस के सुदूर पूर्व में लापता हेलीकॉप्टर पर सवार 22 लोगों में से 17 के शव बरामद कर लिए गए हैं। रूस के अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी देते हुए कहा कि हेलीकॉप्टर के मलबे का भी पता लगा लिया गया है। रूस के आपातकालीन मंत्रालय ने कहा कि 17 लोगों के शव पाए गए हैं और बचावकर्मी शेष लोगों की तलाश में जुटे हैं। रूस की सरकारी समाचार एजेंसी 'आरआईए नोवोस्ती ने आपातकालीन मंत्रालय के हवाले से कहा कि हेलीकॉप्टर में सवार सभी लोगों की मौत हो जाने की आशंका है।

माना जाता है कि खराब मौसम और खराब दृश्यता के कारण हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। रूस के आपातकालीन मंत्रालय ने टेलीग्राम पर लिखा, ''हवाई सर्वेक्षण करके लापता हेलीकॉप्टर के मलबे का पता लगाया गया है। यह उस स्थान के निकट 900 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है, जहां से इससे आखिरी बार संपर्क हुआ था। हेलीकॉप्टर पर सवार यात्रियों या चालक दल के बारे में अभी कोई आधिकारिक जानकारी नहीं मिली है।

रूस की संघीय वायु परिवहन एजेंसी ने इसके पहले एक बयान में कहा था कि एमआई-आठ हेलीकॉप्टर ने शनिवार को कामचटका क्षेत्र में वाचकाज़ेट्स ज्वालामुखी के करीब उड़ान भरी, लेकिन निर्धारित गंतव्य तक नहीं पहुंचा। इसमें कहा गया है कि उसका मानना है कि विमान में 19 यात्री और चालक दल के तीन सदस्य सवार थे। एमआई-8 दो इंजन वाला हेलीकॉप्टर है जिसे वर्ष 1960 में बनाया गया था। इसका रूस समेत अन्य देशों में व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाता है।

यूक्रेन का रूस पर 150 से अधिक ड्रोन से हमला: मॉस्को की ऑयल रिफाइनरी को निशाना बनाया

कीव/मॉस्को, एजेंसी। यूक्रेन ने शनिवार रात को रूस पर 150 से अधिक ड्रोन से हमला किया। ढाई साल से जारी रूस-यूक्रेन जंग में पहली बार यूक्रेन ने रूस के खिलाफ इतनी ज्यादा संख्या में ड्रोन से हमला किया है। यूक्रेन ने रूस की राजधानी मॉस्को पर भी ड्रोन हमले किए।

मॉस्को के मेयर सर्गेई सोबयानिन के मुताबिक शहर पर 11 ड्रोन से हमला किया गया। इन हमलों में एक ऑयल रिफाइनरी और एक टेक्निकल रूम को निशाना बनाया गया। ऑयल रिफाइनरी पर हुए हमले के बाद उसमें विस्फोट हो गया। इसके बाद गहरा धुआं उठता नजर आया।

रूसी अधिकारियों के मुताबिक यूक्रेन ने 15 प्रांतों में 158 ड्रोन से हमला किया था। उन्होंने कहा कि रूसी एयर डिफेंस ने लगभग सभी ड्रोन को इंटरसेप्ट कर मार गिराया। इस हमले में किसी भी तरह के जान-माल के नुकसान की खबर नहीं है। अभी तक यूक्रेन ने हमले को लेकर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है।

रूस ने खारकीव पर मिसाइलें और गाइडेड बम दागे

यूक्रेनी हमले के बाद रूस ने रविवार को यूक्रेन के दूसरे सबसे बड़े शहर खारकीव पर बैलिस्टिक मिसाइलों और गाइडेड बमों की बारिश कर दी। यूक्रेनी अधिकारियों ने बताया कि इन हमलों में कम से कम 47 लोग घायल हुए हैं। इसमें 5 बच्चे भी हैं। हमले में घायल होने वालों की संख्या अभी और बढ़ सकती है।

रूसी हमले में खारकीव की 10 जगहों पर विस्फोट हुए है। 48 घंटों के अंदर ये रूस का दूसरा बड़ा हमला है। इससे पहले शुक्रवार को हुए हमले में यूक्रेन के 6 लोगों की मौत हो गई थी। इनमें एक 14 साल की बच्ची भी थी। वहीं 59 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए थे। इस हमले में एक 12 मंजिला आवासीय इमारत और एक बच्चों का पार्क नष्ट हो गया था। 13 लाख की आबादी वाला ये शहर रूस बॉर्डर से मात्र 25 मील दूर है।

रूस में और अंदर घुसकर हमले करना चाहता है यूक्रेन: यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की अब

रूस में और अंदर घुसकर हमले करना चाहते हैं। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक, इसमें मदद के लिए वे अमेरिका पर दबाव भी बना रहे हैं। जेलेंस्की ने शनिवार को एक वीडियो जारी कर बताया कि 30 अगस्त को रूस ने खारकीव पर एयरस्ट्राइक की, जिसमें 6 यूक्रेनियों की मौत हो गई। वहीं 97 लोग घायल हुए। जेलेंस्की ने कहा कि इन हमलों को तभी रोका जा सकता है, जब यूक्रेन रूस की एयरफील्ड्स और सैन्य ठिकानों को निशाना बनाएगा। हम हर रोज अपने सहयोगी देशों से इस पर चर्चा कर रहे हैं। उन्हें इसके लिए राजी करने की कोशिश कर रहे हैं।

जेलेंस्की ने कहा, यूक्रेन के आसमान से रूस के बमों को तभी हटाया जा सकता है, जब हम उन पर हमले तेज कर देंगे। इसके बाद ही रूस जंग खत्म करने और शांति की तरफ कदम बढ़ाएगा। यूक्रेन की रक्षा करने के लिए हमें लंबी दूरी तक हमले में सक्षम मिसाइलों और रूस के खिलाफ इनके इस्तेमाल की इजाजत की जरूरत है।

जेलेंस्की ने बताया कि उनके प्रतिनिधि इससे जुड़ी सभी जरूरी जानकारियां यूक्रेन के सहयोगियों के साथ साझा कर चुके हैं। इससे पहले 30-31 अगस्त को यूक्रेन के रक्षा मंत्री रुस्तेम उमरोव ने वॉशिंगटन में अमेरिकी अधिकारियों और एक्सपर्ट्स से मुलाकात की थी।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129